





अनुवादक नरेश बेदी

सहायक बुद्धिमत्ताद भट्ट

मेजरगन व० गिरीशोष्की, व० ग्वेनोव, ओ० नागिन

इ० निमोरोसेव, व० अगोपान, म० उमोइम्की

Международный терроризм и ЦРУ  
ДОКУМЕНТЫ, СВИДЕТЕЛЬСТВА, ФАКТЫ

На языке хинди

International Terrorism and CIA

DOCUMENTS, EVIDENCE, FACTS

In Hindi

---

© Издательство Прогресс, 1983

© हिंदी अनुवाद, प्रगति प्रकाशन, १९८५

सोविषत संघ मे मुद्रितः

M 0800000000-152-362-85  
014(01)-85





'मेड इन यू० एस०' ~~ए~~

9331

पश्चिमी प्रचार के "सोवि  
को इस सदी का सबसे बड़ा भूठ ठीक ही कहा जाता है।  
सचमुच, इससे ज्यादा बेहूदा बात को सोचना भी  
मुश्किल होगा कि जिस देश का सबसे पहला ही  
विधायी कार्य शांति के बारे में आज्ञाप्ति रहा हो,  
जिसका आदर्श नि शस्त्रीकरण हो, जो लगातार नये-नये  
शांति-प्रस्ताव सामने रखता हो और एकपक्षीय शस्त्र-  
परिसीमन और कटौती का उदाहरण प्रस्तुत करता हो,  
उसी देश के विरुद्ध आक्रमकता का आरोप लगाया  
आये। इसके बावजूद पश्चिमी प्रचार-साधन, विद्यालय,  
पादरी और विश्वविद्यालयों के विद्वान, बल्कि राजनेता  
तक, हर दिन और हर पड़ी इस मिथक को करोड़ों  
लोगों की चेतना में दूंसने में लगे रहते हैं।

इस सिलसिले में मुझे १९७६ की गरमियों में  
संयुक्त राज्य अमरीका की एक यात्रा की याद आती है।  
हम लोग, सोवियत पत्रकारों के एक प्रतिनिधिमंडल  
के सदस्य, ओटावर्स, पाइट-सुकआउट (मिसूरी राज्य)  
का एक स्कूल देखने गये हुए थे।

इस स्कूल में अमहमति की कोई गुंजाइश नहीं  
है, यहाँ धर्म ही निष्ठा की आधारशिला है। कॉलेज के

9331

प्रधान, पैट्रिक कार्प, ने हमसे माफ-माफ कहा  
 "आपने देश के प्रति हम लोग पूर्वापद रखे हैं और  
 आपने छात्रों को उसने अनुसार ही पढ़ाने हैं। आपकी  
 व्यवस्था के बारे में हमारा अपना दृष्टिकोण है "

कोई बात नहीं मोविपन लोगों का भी "मुक्त  
 उद्यम" - पूँजीवादी शोषण और सामाजिक भ्रमभावना  
 की व्यवस्था के बारे में अपना ही नज़रिया है। मेरिन  
 ऐसा एक भी मोविपन स्कूल या कॉलेज नहीं है कि  
 जहाँ ऐसी पुस्तिकाएँ या परीक्षाएँ देखी जा सकें,  
 जैसी हमने इस कॉलेज के गिरजाघर में देखी थी।  
 मोविपन छात्रों में अमरीका जनता के प्रति वैर या  
 विद्वेष उपजानेवाली कोई पुस्तक-पुस्तिका या परीक्षा  
 देखने को भी नहीं मिलेगी।

"यह हमारे यहाँ भी हो सकता है", कॉलेज के  
 गिरजाघर में देखी गयी एक पुस्तिका का यह अभाव  
 शीर्षक था। छात्रों और भक्त-समुदाय के अन्य सदस्यों  
 को उसमें क्या बतलाया गया है? "कम्युनिज्म अब भी  
 दुनिया को जीतने का इरादा रखता है और उसके लिए  
 निरंतर प्रयास किये जा रहा है", और कभी कहने  
 है कि "जब हम संयुक्त राज्य अमरीका को जीत  
 लेंगे, . तो छ करोड़ अमरीकियों का सफाया करना  
 होगा . " और इसके बाद गिरजाघरों और दीनदारों  
 पर नाज़िल होनेवाली विभीषिकाओं की एक पूरी  
 सूची थी और किन्ही जॉन नोबल के उद्धरण थे, जिनमें  
 बतलाया गया है कि "लौह आवरण के पीछे २८०  
 लाख लोग दास शिविरों में हैं"। श्री नोबल एकदम





तब से कितने ही साल गुजर चुके हैं। सोवियत सघ शांति के प्रति अपने समर्पण को अपने कार्यों द्वारा बारंबार प्रदर्शित कर चुका है और वह शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और परस्पर लाभदायी सहयोग के आधार पर बूर्जुआ राज्यों के साथ संबंध विकसित करने की अपनी आकांक्षा और दक्षता को भी दिखा चुका है। लेकिन "आम" अमरीकी ने अब भी सोवियत "सुतरे" और "कम्युनिस्ट पद्धत" के बारे में ही पढ़ा और सुना है। अकेला फर्क सिर्फ यह है कि अब, नवें दशक के आरंभ में, इस प्रचार का गुरु न केवल जनमत को बनाने-बिगाड़ने में माहिर पेदेवर कम्युनिज्म-विरोधियों द्वारा, बल्कि अमरीकी राष्ट्रपति, विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री द्वारा भी बाधा जाता है। यह तो मैं नहीं जानता कि उन्हें भी जॉर्ज वाशिंगटन सम्मान पदक प्रदान किया गया है या नहीं, मगर उनकी "दलीले" उतनी ही ताजा, सटीक और कायलकारी हैं, जितनी ओझाकर्म गिरजाघर की पुस्तिका में दी हुई "दलीले"।

वाशिंगटन के मौजूदा सोवियतविरोधी अभियान की अकेली "मौलिकता" यह है कि इस बार "कम्युनिस्ट पद्धत" को "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद" के रूप में पेश किया जा रहा है। इस अभियान का समारंभ भूतपूर्व विदेश मंत्री एलैक्जेंडर हेग ने २८ जनवरी, १९८१ को किया था। उन्होंने एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था कि सोवियत सघ आज ऐसी नीति, ऐसे कार्यक्रमों पर अग्रसर कर रहा है, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय







मुरागो को बड़ी होशियारी से छिपा देता है।

जहाँ "मानवाधिकारों की रक्षा" के पाण्डुरूप अभियान के दौरान वाशिंगटन ने कम से कम वस्तुपर-वता का तो आभास देने की कोशिश की थी और चिन्ती में बर्बर शासन की, दक्षिण कोरिया में दमन व और कुछ अन्य "श्वेत राश्ट्रों" में व्यापक उत्पीड़न व अनिच्छापूर्वक निराकरण की थी, वहाँ इन बाह्य नज़रानों को इस बार बिल्कुल आरम्भ में ही तिराजि दे दी गयी—गांग दोण गूनी तरह में, शुरू में सेव प्रान्तिर तक मोरियानों और उनके मित्र देशों के मजबूत दिया गया और भीषे-भीषे इस आदिम दलील व साथ ही वे तो नागुदा "कम्प्यूनिस्ट" हैं। निरों लोगों की जान लेनेवाले कमराहों के दोगी वे हैं और इन्हीं जहाजों को हाईरैर करने और लोगों को बंधा बनाने के दोगी भी वे ही हैं। वाशिंगटन के "अनर्गल राष्ट्रीय आन्दोलन के विरुद्ध मजबूतियों" का मजबूत मध्य मोरियान मजबूत को दुनिया की आगों में गिराना समाजवादी मजबूत और सभी साम्यवादी राज्यों के विरुद्ध सर्वोच्चानिज मुद्दों को लेव करना और लोगों को समाजवाद में विमग्न करना है।

इसका मध्य राष्ट्रीय मुस्लिम आन्दोलनों को मार्गित करना है। इसमें भी मोरियान मजबूत को ही मुख्य अवगति की तरह देना दिया जाता है। मास्को और उसके "अनुचरों" इस "धर्मवाद" का ही माने जाहिरकारी का कारण बनता जाता है। जैसा कि निम्न

२ १८० म अन्तराष्ट्रिय (राष्ट्रपति अन्तर)



करनेवाले इसराएली आक्रांताओं को सर्वतोमुखी सहायता देने का "अधिकार" है ; नमलवादी दक्षिण अफ्रीका के साथ साठ-गाठ करने और अफ्रीका के दक्षिण में स्वाधीनता आंदोलनों को कुचलने में उसकी मदद करने का "अधिकार" है, निकारागुआ और सल्वादोर : देशभक्तों के खिलाफ प्रच्छन्न और खुला युद्ध चलाने अनेक लातीनी अमरीकी देशों को धून में डुबानेवाले तानाशाहियों को वित्तीय सहायता देने और शस्त्रसज्जित करने का "अधिकार" है।

"आतंकवाद के जननस्थलों" की श्रेणी में वाशिंगटन सर्वोपरि फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन, लीबिया निकारागुआ के सैडीनिस्टी नेतृत्व और स्वापो (दक्षिण पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन) के नाम लेता है लेकिन वास्तव में अमरीकी राजनीतिज्ञों ने जनगण के अवहेलना करते हुए और उनके अधिकारों तथा आक्रांताओं का तिरस्कार करते हुए सारे ही राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर यह लेबल चस्पा कर दिया है।

इन आंदोलनों के प्रति वाशिंगटन का रवैय रैगन प्रशासन के अधीन स्पष्टतः बदल गया है। आठों दशक के उत्तरार्ध में, अपनी वियतनामी मुहिमबाजी के डेर होने के बाद, वाशिंगटन ने विकासमान देशों के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को सीधे ही न नकारने बल्कि उसे मयुक्त राज्य अमरीका को स्वीकार्य दिशा में मोड़ने का "सच्चीनापन" दिखाने की कोशिश की थी। लेकिन ईरान और निकारागुआ में जाँतियों ने इस "विभेदित नीति" का बड़ाधार कर दिया।





रुपांतरणों को रोकने के लिए सोवियन मध्य पर सैनिक श्रेष्ठता प्राप्त करने की तत्काल प्रत्यावर्तन का औचित्य-स्थापन और समर्थन करना। लक्ष्य "सोवियन खतरे और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खतरे को कम करके आकनेवाले" जनमत को बदलना, इन सारे अदूरदर्शी उदारों और युद्धविरोधी आंदोलनकारियों की जवान बंद करना और इस तरह से संयुक्त राज्य अमरीका की आक्रामक विदेश नीति के लिए व्यापक समर्थन प्राप्त करना भी है।

यहां भी नफरत और खौफ के धंधे से लाभ उठाने की ही बात है। बिलकुल ओझाकर्म गिरजाधर के कठमुल्ला ज्ञानविरोधियों की ही तरह अमरीकी राजनेता अमरीकियों से अपने धीसे खाली करने की अपील कर रहे हैं—हथियारों की अभूतपूर्व होड़ के लिए, बढ़ती हुई सेना के लिए, नये फौजी अड्डों के लिए, गुप्तचर सेवाओं के लिए और घोरतम प्रतिक्रियावादी शासनो को करोड़ों डालर की आर्थिक सहायता देने के लिए। अगर नहीं चाहते कि सोवियत अमरीका को जीत लें और कम्युनिस्ट सारी दुनिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें, तो धीसे खाली करो।

इस कुत्सापूर्ण शोर-शराबे का एक लक्ष्य और है—दोष दूसरे के मत्थे मढ़ना। सामान्य रूप में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या है या नहीं? निस्संदेह है। आतंकवाद की दो किस्में हैं—सरकार और उसके अधिकारियों का अथवा सरकार द्वारा समर्थित आतंकवाद, और ग्राइवेट व्यक्तियों या उनके संगठनों का

के साथ यह कहने का हर कारण है कि राजकीय आतंक-  
 वाद सबसे बड़े अरसे से अमरीकी साम्राज्यवाद की  
 विदेश नीति का एक अंग बन चुका है, जिसने जगत  
 धानेदार की भूमिका ग्रहण कर ली है। राजकीय  
 आतंकवाद प्रातिकारी तथा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के  
 विरुद्ध उसके सघर्ष के लगभग मुख्य साधन का अधिका-  
 धिक रूप ग्रहण करता जा रहा है। साम्राज्यवाद के  
 पास स्वाधीनता तथा सामाजिक प्रगति का मुकाबला  
 करने के लिए कोई राजनीतिक, वैचारिक अथवा  
 आत्मिक मूल्य नहीं है, उसके पास राष्ट्रों को आकर्षित  
 करने के लिए कुछ भी नहीं है। यही कारण है कि वह  
 हिंसा पर ही सब दाव लगाता है और आर्थिक प्रति-  
 गोष्ठात्मक कार्रवाइयों, राजनीतिक हत्याओं, अतर्ध्वस  
 और बलात सत्ता-परिवर्तनों द्वारा औरो पर अपनी  
 जल्दा को घोषता है। अमरीकी केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसी  
 सी० आई० ए०) प्रातिकारी तथा प्रगतिशील शक्तियों  
 विरुद्ध इस ध्वंसकार्य में मुख्य हथियार का काम  
 करती है।

लेकिन हम वाशिंगटनी राजनीतिज्ञों का अनुकरण  
 ही करेंगे, जो प्रमाण की अवहेलना करते हैं। आइये,  
 हम से कम विकासमान देशों में सी० आई० ए० की  
 कार्रवाइयों के प्रमाण पर नजर डालें।

जनवरी, १९८१ तक अद्यतनीय रूप में प्रमाणित

हो चुका था कि निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय अपराध सी० आई० ए० की सहभागिता से या उसके निदेशान में किये गये थे ईरान में राज्य-परिवर्तन और मुस्तफ़िज़ सरकार का उलटा जाना (१९५३) ; ग्वाटेमाला में सैन्य राज्य-परिवर्तन और आर्वेस सरकार का उलटा जाना (१९५४) ; मिश्र के राष्ट्रपति नानिर की हत्या का पड़्यत्र (१९५८) ; सीलोन ( अब श्रीलंका ) के प्रधान मंत्री सोलोमन भडारनायक की हत्या (१९५९) ; भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के विरुद्ध पड़्यत्र ; कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य ( अब ज़ाइर ) के प्रधान मंत्री पत्रोस लुमुबा की हत्या ; डोमिनिकन गणतंत्र में बलात् राज्य-परिवर्तन (१९६१) ; मोझाबीक मुक्ति मोरचा ( फ़ेलीमो ) के अध्यक्ष एडुआर्दो मोदलाने की हत्या (१९६६) , गिनी तथा केप वर्दे द्वीप समूह की अफ़्रीकी स्वतंत्रता पार्टी के महासचिव आमीलकार कब्राल की हत्या (१९७३) ; चिली में जन एकता सरकार का उलटा जाना और राष्ट्रपति सल्वादोर अल्वेदे की हत्या (१९७३) ; बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या (१९७५) ; कांगो लोक गणराज्य के राष्ट्रपति एम० न्गुआबी की हत्या (१९७७) ।

बेशक, यह पूरी सूची नहीं है—इसमें और काम भी जोड़े जा सकते हैं, लेकिन अगर विश्व जनमत को ज्ञात सारी ही सी० आई० ए० कार्रवाइयों का भी उल्लेख कर दिया जाये, तो भी यह समुद्र में तैरते हिमखंड के दिखायी देनेवाले ऊपरी तिर्रे के समान



लेकिन जहा सी० आई० ए० अब भी छिने-छिने की काम करती है, वहा राष्ट्रपति रैगन के सत्ता में आने के बाद से ह्वाइट हाउस अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिकाधिक खुले तौर पर राजकीय आतंकवाद का प्रयोग कर रहा है। लगता है कि प्रभुसत्तासपन्न राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में अप्रच्छन्न हस्तक्षेप और प्रतिक्रिया के निर्यात की नीति को अमरीकी इतिहास में पहली बार राष्ट्रीय नीति का दर्जा दे दिया गया है।

१९७८ के बसंत में ही सी० आई० ए० ने अफगानिस्तान की वैध सरकार के विरुद्ध सड़ने के लिए गहनतम मोर्चनीयता की अवस्थाओं में तोड़फोड़ करनेवाले गिरोहों को प्रशिक्षित और हथियारबंद करना शुरू कर दिया था। आज रैगन प्रशासन सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय पुनरुत्थान का पथ उन्मुक्त करनेवाली सामतवादविरोधी राष्ट्रीय जनवादी अफगान ज़ानि के विरुद्ध अघोषित युद्ध में अपनी मखिय सहभागिता को छिपाने की सोचा भी नहीं है। यही नहीं, वाशिंगटन आतंकवादी कार्रवाइया और तोड़फोड़ करने के लिए मुख्यतः पारिस्तान में अफगानिस्तान में भेजे जानेवाले अफगान प्रतिक्रियावादी गिरोहों को हथियारबंद करने और आर्थिक सहायता देने रहने के अपने इरादे को खुले तौर पर घोषित करता है।

जैसे ही किसी देश की वैध सरकार ज़मीनी प्रशासन की आंखों में "ग्यादा बाधक" हो जाती है, जैसे ही वह वैदेशिक मामलों में स्वतंत्रता दिखाने लगेगी या अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक जगत्तन माने लगे



अमरीकी हथियारों से लैस, अमरीकी प्रतिशक्ति द्वारा प्रशिक्षित, अमरीकी "सलाहकारों" द्वारा निर्देशित और अमरीकी पैसे पर जीनेवाले प्रतिक्रियावादी सत्वा-दोरी हुता (सैनिक शासक गुट) के सैनिक अपनी ही जनता के विरुद्ध अघन्य युद्ध चला रहे हैं। दमियों हजार शांतिकामी निवासी आतंक के राज के शिकार हो चुके हैं, हत्यारों के हाथों मारे जा चुके हैं। उधर वाशिंगटन इस खूनी शासन को अपनी सहायता में निरंतर वृद्धि करता जा रहा है और अधिकाधिक उद्भ्रान्त-पूर्वक देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करता जा रहा है।

उन्हे से निकारागुआ के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयों का एक पूरा सिलसिला शुरू कर दिया गया है। सारा घटनाक्रम वाशिंगटन के कनासिकी नमूने पर चला है। पहले, शांति के फौरन बाद, अमरीकी प्रशासन ने निकारागुआ के नये नेताओं के साथ सौदा करने की, उन्हें सही, "पारस्परिक सतीनी अमरीकी" रास्ता दिखलाने की पूरी-मूर्ती कोशिश की। लेकिन इसमें कुछ हुआ नहीं—शांतिकारी जनता ने स्वयं अपना रास्ता चुनने, निर्धनता और शोषण से मुक्त समाज का निर्माण करने का निश्चय किया। देश के भीतर निकारागुआ अमरीकी इजारों के प्रभुत्व को समाप्त करने की और सशक्त सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण करने लगा; विदेश नीति के क्षेत्र में उसने स्वतंत्र साम्राज्यवाद-विरोधी रवैया अपनाया और क्यूबा के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये।





के विरुद्ध प्रचलित गरिबाओं की योजना को अनुमोदित किया। जिसके अनुसार मी० आई० ए० को मूल्य गामोमाइयो और क्युबाई तथा अन्य प्रविधानिकार्यों के अर्थनैतिक भांडे के दमने स्थापित करने का अधिकार प्रदान किया गया। इन भांडे के गैरिक्तों को हाइराम में निकारागुआ में महत्वपूर्ण ठिकानों - पुनो, बिबती-घरो, बाथो और भीछोगिक उद्यमों - पर हमने इले और सीमानवर्ती इनाकों पर छाये मारने थे। १०० लोगो के इन दम्तों का मगटित करने के लिए पूरे १६० लाख डालर की रकम विनियुक्त की गयी।

निकारागुआ के विरुद्ध ध्वमकार्य में समुक्त राज्य अमरीका ने उसके पड़ोसी देशों को भी खींच लिया। अमरीकी "सलाहकारों" के निदेशन में हाइरामी सेना सीमा पर लगातार भडकावे की कार्यवाह्य करती रहती है। हाइराम और कोनविया की सरकारों के साथ उनके देशों में नये सैनिक अड्डे कायम करने और पुरानों का आधुनिकीकरण किये जाने के बारे में वार्ताए हुईं। फौजी हैलीकॉप्टरो द्वारा पनामा नहरक्षेत्र से छतरीधारी सैनिक कोस्टा रीका पहुंचाये गये और वहा युद्ध अभ्यासों का मिलसिला शुरू किया गया।

सभी तरफ से दबाव बढाया गया। हाइराम से लगे निकारागुआ के उत्तर-पूर्वी सीमात पर भड़पे शुरू हो गयी। अमरीकी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित आतकवादियों ने निकारागुआ में दो पुलों को उड़ा दिया और राजधानी में अनेक उद्यमों को उड़ाने और गणराज्य के नेताओं की हत्या करने की कोशिशें कीं

और निकारागुआई हवाई जहाजों में बम रखे। देश के सबसे बड़े अल्पमूल्यक समुदाय, मिस्कीतो इंडियनों (आदिवासियों) के कबीले को आतंककारी सरकार के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उकसाया गया। अमरीकी जाम्बोई हवाई जहाजों ने निकारागुआ के वायुसेवा का और अमरीकी नौसैनिक पोतों ने उसकी जलसीमा का बारबार उत्खनन किया। संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप — जैसे ग्वाटेमाला और डोमोनिकन गणराज्य में हुआ था — का सतारा लगातार बढ़ता जा रहा है।

और अंत में, शरद, १९८३ में संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कानून को बलाये ताक रखकर ग्रेनाडा पर सशस्त्र आक्रमण, जिसने विश्व जनमत को हिला डाला। क्या यह भी अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का स्पष्ट उदाहरण नहीं है?

अमरीकी साम्राज्यवाद को स्पष्टतः "स्वतंत्र विश्व का नाबुदा कम्युनिस्टों से बचाव" करने के बहाने की आड़ में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद में लगने के लिए कोरा परवाना चाहिए। सातवीं अमरीका के जनगण के लिए यह "बचाव" क्या मानी रखता है, इसका एक पनामाई सार्वजनिक कार्यकर्ता ने बहुत ही सजीव शब्दों में वर्णन किया है -

"... चिलीयाई नदिया ऐसे लोगों की सैकड़ों लाशें बहाकर प्रशांत महासागर में पहुँचा रही हैं, जो शांतिपूर्वक काम करते थे और जिन्होंने कभी किसी हथियार को हाथ भी नहीं लगाया था। सीवरों में डूबा

दिये गये, दस्तचिकित्सकों के बरमो और घमन जवानों से सता-सताकर मारे गये, प्लास्टिक के बोरो में दम घुटने से मरे, हैलीकॉप्टरो से समुद्र में या ज्वालामुखियों के मुहों में फेंके गये लोग। कलाइयाँ और पैर बटे हुए, आँखें निकाले हुए और जबानें काटे हुए दसियों हजार शरीर। माएँ, जिनकी आँखों के आगे उनके बेटों को बिजली से यंत्रणा दी जाती है और काँच के टुकड़ों पर पड़े अपने बच्चों के ऊपर चलने को मजबूर किया जाता है ( "नहीं तो हम उनके सिर काट देंगे" )। अपने परिवार में सभी बयस्कों के मार डाले जाने और उनकी लाशें कूओं में फेंक दिये जाने अथवा डायनामाइट से उड़ा दिये जाने के बाद विदेशों में बेचे गये दुधमुह बच्चे। यंत्रणा से पागल हुए हजारों-हजार लोग। अपने घरों के भीतर जला दिये गये परिवार। स्कूली बच्चे, जिनकी छातियों को छुरों में चींखकर उनके दिलों को निकाल लिया गया था। हवा में ऊपर उछाले गये और गडामों की छार पर गिरे शिशु "

ये सभी नृशम कांड, जिनमें से प्रत्येक किसी एक मानीनी अमरीकी देश या अनेक देशों में पटा है, बर्जुआ प्रेस से निये गये हैं और पूर्णतः प्रलेखित-प्रमाणित हैं, वे अपने ही प्रलेखित-प्रमाणित हैं कि जिनकी यह पुस्तक, जो अंतर्राष्ट्रीय मानववाद के उपकरण के माने मी० आई० ए० के इतिहास की कपोला प्रस्तुत करती है और दक्षिण-पूर्वी एशिया, मानीनी अमरीका, अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप और



खिलाफ लड़ने के लिए गोरे भाड़े के सैनिकों का बारबार उपयोग किया है। ये भाड़े के हत्यारे जहाँ भी गये हैं, बहा-बहा - कांगो ( जाइर ), नाइजीरिया, रोडेसिया ( जिम्बाब्वे ), अंगोला, मदागास्कर, मोझाबीक, मारी-शस, कांमरो द्वीपसमूह, सेरील्व द्वीपसमूह - उन्होंने अपने मूनी पदचिह्न छोड़े हैं। इन लोगों में सबसे आगे आगे 'संयुक्त राज्य अमरीका में निर्मित' भाड़े के सैनिक रहे हैं - वास्तव में यह इतालवी पत्रिका 'स'एम्प्रेमो' में छपे एक रिपोर्टार्ज का शीर्षक है। जिमके मवादशता ने स्कॉट्सडेल ( ऐरीडोना राज्य ) में एक वार्षिक सम्मेलन में कुछ भाड़े के मित्राहियों से बातें की थीं। यह सम्मेलन 'मोन्जर ऑफ फॉर्ब्स' पत्रिका द्वारा आयोजित किया गया था, जिमकी बिथी की तादाद अब २ माघ के ऊपर जा चुकी है।

विनियम टी० "विन" सफ़ेट, जो २७ मान मेना में सेवा कर चुका है, अमरीकी वायुसेना में सेप्टीनेट-बर्नर था और वियननाम, क्यूबिया तथा साओम में देशभक्तों के गिराफ़ मर चुका है, अपने मोने पर एक चटखीना दिन्ना लगाये रहता है, जिम पर लिखा है " मैं बड़ी होना समझ करता हूँ, जहाँ कम्युनिस्टों को मारा जाता है"। विन कहता है " मैंने इसे इम्पॉजिट लगा रखा है कि यह मेरे विचार को व्यक्त करता है। मुझे कम्युनिस्टों को मारना पसंद है। मेरी समझ में यह सही है - कम्युनिज्म दुनिया को पीटने का एक अच्छा तरीका है। "

जॉन जॉर्ज १० माघ अमरीकी सेना के ईन



के लिए ही उपयोगी है, जिसका कोई भविष्य नहीं है और जो इतिहास की गति को धीमा करने और अपने अंत को रोकने की निरर्थक चेष्टा में जघन्यतम और निम्नतम कारसाजियों से बाढ़ नहीं आता। यह पुस्तक इसी के बारे में है—यह अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और उसके सूत्रधार तथा सगठक अमरीकी केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी के विरुद्ध विश्व जनमत का अभियोगपत्र है।

बिताली सिरोकोम्स्की





के अंतर्गत १९४७ में की गयी थी, जब शीनवुड ने जोर पकड़ना अभी शुरू ही किया था। इसके बावजूद कि आसूचना संग्रहण ही इस नये अभिकरण का मुख्य कार्य माना गया था, प्रच्छन्न कार्रवाइयों का उसके काम में आरम्भ से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

यह दृष्टव्य है कि राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम में प्रच्छन्न सक्तियाओं का कोई उल्लेख न था। लेकिन उसका एक प्रावधान सी० आई० ए० को "राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा समय-समय पर निर्दिष्ट राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करनेवाली आसूचना से सबड अन्य कार्यों तथा कर्तव्यों का निष्पादन" \* करने में समर्थ बनाता था।

१९४७ के राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के रचनाकारों में एक, भूतपूर्व अमरीकी प्रतिरक्षा मंत्री क्लार्क एम० क्लिफर्ड ने इस प्रावधान के बारे में यह कहा है:

"यह तय किया गया कि केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसी को स्थापित करनेवाले अधिनियम में अप्रत्याशित समाव-नाओं की व्यवस्था के लिए एक 'सर्वशाली' धारा रहनी चाहिए .. इसी धारा के अंतर्गत १९४७ के अधिनियम के प्रचलन में आते ही प्रच्छन्न-कार्रवाइयों की मजूरी दी गयी थी। मुझे याद आता है कि ऐसी पहली कार्रवाइया १९४८ में हुई थी और यह तब संभव है कि १९४७ के अंत में ही कुछ योजना हो

\* *Final Report of the Select Committee to Study Co-Operations With Respect to Intelligence Act-*  
Senate, Book 1, US Government Printing Office,  
1976, p. 512.



रा० सु० प० निदेश म० ४/अ ने मनोवैज्ञानिक युद्ध को इस प्रकार परिभाषित किया था :

“ प्रचार से लेकर अर्थ-मैनिक कार्रवाइयों तक, आर्थिक कार्रवाई से लेकर विदेशी राजनीतिक पार्टियों, सूचना-माध्यमों और धार्मिक संगठनों को आर्थिक सहायता और समर्थन तक प्रच्छन्न कार्य प्रविधियाँ, ... विदेशी राजनीतिक पार्टियों को अमरीकी समर्थन, ‘आर्थिक युद्ध’, अंतर्ध्वंस, शरणार्थी मुक्ति दलों को सहायता ”\*

जून, १९४८ से मार्च, १९५५ तक राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने सी० आई० ए० की प्रच्छन्न सक्रियाओं के बारे में निदेशों की एक पूरी शृंखला जारी की। १८ जून, १९४८ को रा० सु० प० निदेश म० १०/२ ने तयामुचित १०/२ परिषद का गठन किया जो राष्ट्रपति फोर्ड के अधीन स्थापित तयामुचित “विदेश गुप्तचर्या कार्य परामर्शदातामंडल” की पहल में पूर्वगामी थी। इस परिषद के अधिदेश में प्रस्तावित प्रच्छन्न कार्रवाइयों पर विचार करना सम्मिलित था २३ अक्टूबर, १९५१ को रा० सु० प० निदेश म० १०/५ जारी किया गया, जिसने प्रच्छन्न कार्रवाइयों के सारे दुनिया में और अधिक प्रसार की व्यवस्था को\*\* और उनके समन्वित किये जाने के ढंगों में कु

\* *Final Report* ... pp. 142, 144.

\*\* इसके पहले सी० आई० ए० का प्रच्छन्न कार्य अधिकांश मनोवैज्ञानिक युद्ध से ही संबद्ध था और लगभग पूरी तरह से जन सूचना साधनों से जुड़ा हुआ था, जिसमें जाली प्रकाशनों और “स्था



निष्क्रमण उपाय भी आते हैं, विरोधी राज्यों के विरुद्ध ध्वंसकार्य, जिसमें छापामार तथा शरणार्थी मुक्ति दलों को सहायता भी शामिल है और स्वतंत्र विश्व के सकटग्रस्त देशों में स्थानीय कम्युनिस्टविरोधी तत्वों का समर्थन।" \*

प्रच्छन्न सशस्त्रियों के विस्तारित पैमाने के लिए न केवल अतियोग्यताप्राप्त ध्वंसकार्य विशेषज्ञों का ही बल्कि इन कार्यवाहियों का दुनिया भर में समूहों और संचालन करने के वास्ते एक विशेष निवाह का होना भी आवश्यक था।

टीका इन्हीं उद्देश्यों में पाचवें दशक के अन्त में अर्धस्वायत्त नीति समन्वयन कार्यालय ( नी० म० का० ) की स्थापना की गयी, जो राजनीतिक स्वरूप में निदेश सीधे विदेश विभाग और प्रतिरक्षा विभाग से प्राप्त करता था। नी० म० का० की संस्थापना करने वाले निदेश में " सोवियत ध्वंसकार्य " के उन्नेय और " सोवियत खनरे " के बारे में सवे परोक्ष संकेत थे। निदेश के रचयिताओं के विचार में यह नी० म० का० को राजनीतिक, आर्थिक तथा विचारधारात्मक ध्वंसकार्य सहित विभिन्न प्रकारों के प्रच्छन्न कार्यों में लिए हरी झंडी दिमाने का पक्का आधार प्रदान करता था।

१९८६ में नी० म० का० में कुल ३०२ सदस्य थे, १९५२ में उनकी संख्या बढ़कर २,८१३ हो गयी





द्वारा एक ऐसे महत्वपूर्ण स्थानीय अधिकारी को अपने पक्ष में लाने के प्रयास से पैदा हुआ था, जिसके नी० स० का० के साथ घनिष्ठ संबंध थे।

१९५० और १९५१ के बीच सी० आई० ए० के निदेशक, जनरल वाल्टर बैडेल स्मिथ ने दोनों सेवाओं के बीच समन्वयन सुधारों के लिए कई कदम उठाये। अगस्त, १९५२ में, नी० स० का० और वि० स० का० का योजना निदेशालय में विलयन कर दिया गया। इस विलयन के परिणामस्वरूप ध्वसात्मक सक्रियताओं की संख्या सहसा बढ़ गयी और प्रच्छन्न आमूचना संग्रहण कार्रवाइयों को शक्ति पहुंची। एजेंट ध्वसकार्य को अकारण ही तरजीह नहीं देते थे, क्योंकि उनके परिणाम जल्दी ही प्रत्यक्ष हो जाते थे, जब कि अपने लिए भेदियों को भरती करना लंबा, धीमा और अमसाध्य काम था, जो कोई तात्कालिक परिणाम नहीं उत्पन्न करता था।

१९५३ तक सी० आई० ए० ने समूचे तौर पर वह आकार प्राप्त कर लिया, जो अगले २० मान लगभग अपरिवर्तित बना रहा। कोरियाई मुहिमबाजी और शीत युद्ध के तीव्रीकरण ने सी० आई० ए० की तीव्र वृद्धि में योग दिया — १९४७ की तुलना में उसका आकार छः गुना अधिक हो गया।

सी० आई० ए० में तीन निदेशालयों की स्थापना की गयी। बजट, कर्मियों तथा अन्य साधनों का सबसे बड़ा हिस्सा योजना निदेशालय को मिला। १९५२ में सी० आई० ए० के बजट का ७४% और उसके



कमीशन का ६०% गुन आगूचना मण्डल और प्रमा-  
म्यक कार्यों के लिए ही विनियुक्त था।

छठे दशक के मध्य तक प्रच्छन्न मंत्रियाएँ मॉन्ट्रियल  
मध तथा समाजवादी विरादरी के दूमेरे देशों के साथ  
"स्थायी द्वंद्व" का अभिन्न अंग बन चुकी थी। मिनबर,  
१९५६ में प्रच्छन्न मी० आई० ए० मंत्रियाओं के बारे  
में एक गुप्त रिपोर्ट राष्ट्रपति आइजनहावर के सामने  
पेश की गयी। रिपोर्ट की प्रस्तावना में प्रच्छन्न कार्रवाई  
की आवश्यकता का अग्रिम कुटिल औचित्यस्थापन किया  
गया था

"जब तक यह (प्रच्छन्न कार्रवाई-अनु०) स-  
प्ट्रीय नीति बनी रहती है, एक ऐसा आक्रामक प्रच्छन्न  
मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक तथा अर्द्ध-नैतिक मण्डल स्था-  
पित करना बहुत जरूरी है, जो अधिक कारगर,  
अधिक अनन्य, और अगर आवश्यक हो, तो अधिक  
निर्मम भी हो। इस लक्ष्य की तत्काल, सफल और  
मुनिश्चित मिट्टि में किसी को भी बाधक नहीं होने  
देना चाहिए।

"अब यह स्पष्ट है कि हमारा एक दुर्दम शत्रु  
से सामना है ऐसे खेल में कोई नियम नहीं होते।  
इसमें मानव अचरण के अब तक स्वीकार्य मानक लागू  
नहीं होते .. हमें कारगर जासूसी और जासूसीविरोधी  
सेवाएँ विकसित करनी चाहिए और अपने शत्रुओं का  
उच्छेदन, अतर्प्वस और नाश करना सीखना चाहिए।

२ आवश्यक हो जा सकता है कि अमरीकी लोगों

• मूलतः अश्रीतिकर दर्शन से अवगत कराया



को प्रोत्साहन देना और ऐसे राष्ट्रों तथा राष्ट्रों की अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रतिरोध करने की क्षमता और इच्छा को बढ़ाना।

“सुस्थापित नीतियों के अनुसार और जहां तक व्यवहार्य हो, उन इलाकों में भूमिगत प्रतिरोध विकसित करना और प्रच्छन्न तथा छापामार कार्रवाइयों में सहायता पहुंचाना, जहां अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रभुत्व है अथवा उसकी आशंका है” \*

निर्देश के एक विशिष्ट हिस्से में इन तथ्यों की सिद्धि में सहायक उपायों और विधियों की चर्चा थी।

“विशिष्ट रूप से, ऐसी प्रच्छन्न सत्रियाओं में प्रचार, राजनीतिक कार्रवाई, आर्थिक युद्ध, अतर्ध्वस, अतर्ध्वसविरोध, ध्वंस, पलायन, बचाव और निष्क्रमण उपायों सहित निरोधक सीधी कार्रवाई, विरोधी राष्ट्रों अथवा दलों के विरुद्ध भूमिगत प्रतिरोध आंदोलनों, छापामार तथा शरणाधीन मुक्ति दलों को सहायता सहित ध्वंसकार्य, स्वतंत्र विश्व के सफ्टस्व देशों में स्थानीय तथा कम्युनिस्टविरोधी तत्वों का समर्थन, छल योजनाएं तथा सत्रियाएं और पूर्वोन्निहित की सिद्धि के लिए आवश्यक सभी मंगत कार्रवाइयां सम्मिलित हैं।” \*\*

निर्देश ने प्रच्छन्न सत्रियाओं के नियंत्रण और अनुमोदन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। कार्रवाई मग्न-

\* *Final Report* p 51

\*\* *Ibid.*



आरम्भ में विशेष दल की बैठकें कभी-कभी होती थी—सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस, उनके भाई और तत्कालीन विदेश मंत्री जॉन फॉन्टर डलेस और राष्ट्रपति आइजनहॉवर के अंतरंग संबंधों के कारण निर्णय लेने के लिए औपचारिक प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं थी।

१९५९ से विशेष दल की बैठकें नियमित हो गयीं। इससे प्रच्छन्न सत्रिया योजनाओं के बारे में विशेष दल के अधिकार निर्धारित करने के मानदंड को और विकसित करने में सहायता मिली।

जनवरी, १९६१ में राष्ट्रपति कॅनेडी के सत्तारोहण के साथ विशेष दल की बैठकें ह्वाइट हाउस में होने लग गयीं। अब वे राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए विशेष सहायक मैकजॉर्ज बडी की अध्यक्षता में होती थी (कुछ समय तक राष्ट्रपति के विशेष सलाहकार जनरल मैक्सवेल टेलर अध्यक्ष रहे थे, मगर उनके संयुक्त स्टाफ-अध्यक्ष समिति के प्रधान बना दिये जाने के बाद यह पद बडी को फिर मिल गया)।

क्यूबार्ड प्रतिक्रातिकारियों की कोचीनोस की छाडी (वे ऑफ पिग्ग) की कार्रवाई की घोर विफलता के बाद प्रच्छन्न कार्रवाइयों पर सरकारी नियंत्रण को दृढ़ करने के लिए कदम उठाये गये। विशेष दल ह्वाइट हाउस में अपनी साप्ताहिक बैठकें करता रहा और राष्ट्रपति कॅनेडी को प्रस्तावित प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में अधिकाधिक प्राधिकार से सूचित किया जाने लगा। साथ ही अनुमोदन तथा नियंत्रण व्यवस्था को

तीन भागों में विभक्त कर दिया गया। विशेष दल के अलावा दो अधिशासी निकायों का गठन किया गया - एक विशेष ध्वसकार्यविरोधी दल और एक सर्वाधिक विशेष दल।

नये-नये निदेशों का सतत मिलमिला चम पड़ा। अपने अंतर्गत की दृष्टि से वे सभी एक समान थे - सभी का लक्ष्य प्रच्छन्न कार्रवाइयों की सफलता को सुनिश्चित करना था।

दिनांक १८ जनवरी, १९६३ के एन० एम० ए० एम० निदेश न० १२४ ने एक विशेष दल की स्थापना की, जिसका मुख्य कार्यभार अर्द्ध-सैनिक स्वरूप की सक्तियाओं का संचालन था। इस निदेश ने ध्वसात्मक कार्रवाइयों के बारे में पूर्ववर्ती रा० मु० ५० निदेशों का स्थान नहीं ले लिया - हुआ सिर्फ यह कि कुछ कार्य, जो पहले विशेष दल के क्षेत्र में थे, अब नवस्थापित विशेष दल २ को अंतरित कर दिये गये। इस दल के अध्यक्ष जनरल मैक्सवेल टेलर थे और मैकजॉर्ज बडी तथा मीनेटर रॉबर्ट कैनेडी उसके सदस्यों में थे।

जॉनसन प्रशासन के अंतर्गत भी विशेष दल जिसका नाम अब 'समिति ३०३' हो गया था, की

---

\* जून, १९६४ में एन० एम० ए० एम० निदेश न० ३०३ जारी किया गया। इस निदेश ने विशेष दल के गठन कृत्यों और अधिकारों में कोई भी परिवर्तन नहीं किया। अगर उसका नाम बसकर 'समिति ३०३' कर दिया, क्योंकि उसका हेविड वाइज और टॉमस रॉस द्वारा लिखित पुस्तक *The Invisible Government* ('अदृश्य सरकार') में खस्यो-दिखाऊ हो गया था।

अध्यक्षता राष्ट्रपति के विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक द्वारा ही की जाती थी। लेकिन प्रच्छन्न कार्रवाइों की योजनाओं के बनाने में मुख्य भूमिका अब हार्ड हाउस में पारंपरिक मंगलवारीय "सच" (सप्ताह भोजन) अंश करने लग गये—इन "सचों" में राष्ट्रपति आमंत्रित, विदेश मंत्री डीन रस्क, प्रतिष्ठा मंत्री रॉबर्ट मैकनमारा और राष्ट्रपति के विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक मैकजार्ज बडी की अनौपचारिक बैठकों का रूप में लिया था। कानॉनर में इन बैठकों में राष्ट्रपति के प्रेम सचिव, मी० आई० ए० निदेशक और संपूर्ण स्टार-अध्यक्ष समिति के प्रधान भी भाग लेने लग गये जिनमें विषयनाम के विरुद्ध मी० आई० ए० की प्रच्छन्न कार्रवाइयों में संबंधित योजनाओं पर विचार दिया जाता था।

१३ फरवरी १९७० को एन० एम० ए० एम० निदेश म० ६० जारी किया गया, जिसने 'सर्जिस-६०' की स्थगना की। इस निदेश ने प्रच्छन्न कार्रवाइों के बारे में सभी पूर्ववर्ती रा० सु० प० निदेशों का स्थान में लिया। इसमें कहा गया था कि प्रचोदी मंत्रालय के प्रत्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों की प्रतिक्रिया में भी प्रच्छन्न कार्रवाइयों में अनुमति होनी नहीं चाहिए।

एन० एम० ए० एम० निदेश म० ६० ने प्रच्छन्न सर्जिस-६० के निवर्तन तथा समन्वयन का उपसर्गित्व मी० आई० ए० के निदेशक का दे दिया। दोनों के काम का अन्तिमो विदेश तथा सुरक्षा मंत्रालय के प्रच्छन्न प्रच्छन्न कार्रवाइयों की योजना बनाने की





साथ ममन्वित किये जाने चाहिए और, सामान्यतया, सबद्ध देश में (अमरीकी) राजदूत की सहमति आवश्यक होगी। " "

इस तरह से तीस साल से अधिक समय तक प्रच्छन्न सक्रियता तंत्र को बनाया और तोड़ा जाता रहा, जो अमरीकी राजनीतिक व्यवस्था का एक मूलभूत तत्व बन गया। केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसी की गैरकानूनी और आपराधिक पहलुओं पर अमरीकी राष्ट्रपतियों और उनके उच्चस्तरीय सहायकों के अनुमोदन के "छप्पे" सग जाते थे।

तथापि यह सोचना गलत होगा कि प्रच्छन्न कार्रवाई अमरीकी विदेश नीति की सिर्फ अनुपूरक ही थी। बल्कि अधिक ठीक कहे, तो वे ही उसे सक्रियता-पूर्वक रूप देती थी। लेगली के चानाक विश्लेषकों द्वारा "अदूरदर्शी" राजनीतिज्ञों को उल्लू बनाये जाने की सारी बात कल की तरह आज भी सर्वथा अविश्वमनीय प्रतीत होनी है। पूरे के पूरे देशों और राष्ट्रों के विरुद्ध सी० आई० ए० द्वारा चलाया जानेवाला गुप्त युद्ध, जिसे राष्ट्रपति आइज़नहावर द्वारा एक रिपोर्ट में "बिना नियमों का खेल" कहा गया है, अमरीकी विदेश नीति का एक अभिन्न अंग रहा है और अब भी है।

१९७५ में ज़ाइट हाउस ने अपने को सी० आई० ए० की आपराधिक गतिविधियों से मार्बलनियर का



हैं और कौनसे गुप्त रखने होंगे।

इसके बारे में टीका करते हुए 'न्यूयॉर्क टाइम्स मैगैजीन' ने लिखा, "रिपोर्ट कोई बहुत बड़ी खबर नहीं बनी और उसने कोई जोरदार बहस-मुवाहमा नहीं पैदा किया। उसमें सी० आई० ए० के प्रतिनिधियों की ही चली और उन्होंने ऐसी कोई बात सामने नहीं आने दी, जो किसी भी तरह से प्रच्छन्न कार्रवाइयो में कोई भी दिलचस्पी जगा सकती थी।" पत्रिका ने चर्च समिति की कार्रवाइयो को अकारण ही "अपूर्ण और अपूर्ण" नहीं कहा।

लेकिन अत्यंत सावधानीपूर्वक चलाये प्रचार अभियान के बावजूद ह्वाइट हाउस जनता को यह विश्वास दिलाने में नाकाम रहा कि प्रशासन को सी० आई० ए० के अपराधों की कोई जानकारी न थी। तथ्यों ने साबित कर दिया कि सैग्ली के कुचकरी कार्य विशेषज्ञ और ह्वाइट हाउस में रहनेवाले असल में एक ही पैनी के चटे-चटे हैं।

**"मिस्टर डेय" की आत्मस्वीकृतियां और मृत्यु**

याद दिला दे कि सी० आई० ए० के भीतर प्रच्छन्न कार्रवाइयो का पहला उपकरण - पिछले अध्याय में वर्णित नीति समन्वयन कार्यालय - १९४८ में स्थापित किया गया था, जिसे और कामों के अलावा "अ-गणतन्त्रीय मूल्य दलों को सहायता और अधिगम

अथवा सकटस्थ इलाकों में कम्युनिस्टविरोधी दलों का समर्थन" \* भी करना था। बाद में, सी० आई० ए० की आंतरिक संरचना के विकसित होने के साथ-साथ वे हत्य अमरीकी गुप्तचरी कार्रवाई कार्यालय के होने के भीतर स्थापित एक विशेष प्रभाग के मुखर्द कर दिये गये।

शुद्धतरी तौर पर इस तरह के "नाजुक" कार्यों को क्रियान्वित करने के लिए सी० आई० ए० को मुखर्शिक्षित कर्मियों की आवश्यकता थी और उसने इस आवश्यकता को अविलंब पूरा किया। संयुक्त राज्य अमरीका में, और बाद में, विदेशों में, आतंकवादियों, अंतर्ध्वंसकों और हत्यारों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष अट्टे और शिविर स्थापित किये गये। उनमें विशेष सक्रिया प्रभाग के नियमित कर्मियों और इसी प्रकार तयानक्षित अर्द्ध-सैनिक सक्रियाओं अथवा अन्य "नाजुक" कार्यों में इस्तेमाल किये जानेवाले विदेशी जेटी तथा भाड़े के सैनिकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता था। \*\*

ऐसे ही एक शिविर में प्रशिक्षित भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट फिलिप एजो ने अपनी पुस्तक 'कंपनी राज सी० आई० ए० की डायरी' में उसका इस प्रकार वर्णन किया है

\* *Final Report* -- p. 144

\*\* Victor Marchetti and John D. Marks *The CIA and the Cult of Intelligence* Alfred A. Knopf, New York, 1974, p. 124

“ प्रशिक्षण केंद्र घने जंगल में है और ऊंची तज़ीरदार बाड़ों और चाटेदार तारों में घिरा हुआ है, जिन पर जगह-जगह आसानी में दिखायी देनेवाले ‘मरकारी आरक्षित क्षेत्र। अनधिकार प्रवेश वर्जित’ के चेतावनी पट लगे हुए हैं। केंद्र की उत्तरी सीमा न्यूयार्क नदी है और वह स्वयं कठोर नियंत्रणाधीन क्षेत्रों में विभाजित है, जिनमें हवाई... तथा समुद्री सक्रियाओं में प्रशिक्षण देने की अनग-अनग स्थनियां हैं।

“ किसी निषिद्ध क्षेत्र में सुरक्षित घुसपैठ कर लेने के बाद अकेले एजेंट या पूरी टोली को कई तरह के काम करने पड़ सकते हैं। अक्सर घुसपैठिया टोली का कार्यभार किसी गुप्त स्थान में हथियार, संचार उपकरण अथवा अतर्ध्वंस सामग्री छिपाना होता है, जिसे बाद में वहां पहुंची कोई दूसरी टोली खोज निकालेगी और उसका प्रयोग करेगी। अथवा घुसपैठिया टोली तटस्थ स्थली पर कई दिन, सप्ताह या महीनों बाद क्रियाशील होनेवाली दाहक अथवा विस्फोटक युक्तियों को रखकर अतर्ध्वंस कर सकती है। अतर्ध्वंस आयुधों में मोटर-गाड़ियों को जाम करनेवाले तेल तथा पेट्रोल संप्रपक, छगाई मशीनों को टप्प करनेवाले संप्रपक, जहाजों को डुबोने वाली सुरंगें, विस्फोटक तथा दाहक यौगिक भी सम्मिलित हैं। अतर्ध्वंस प्रशिक्षकों अथवा ‘जनाने-उठानेवालों’ ने अपनी क्षमताओं के प्रभावोत्पादक प्रदर्शन किये हैं, जिनमें से कुछ कार्रवाइयां इतनी चतुराई की हैं कि वे अपने पीछे मुश्किल से ही कोई

गुण छोड़नी हैं।”\*

ऐसे ही विशेष पाठ्यक्रम के एक और ‘मनातक’ ने अपने प्रशिक्षण के बारे में ‘नैपटूम’ पत्रिका को विचार से इस प्रकार बताया है

“अर्द्ध-मैनिक विद्यालय का घोषित नक्ष्य हमें उन सामान किमानों के शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षित और सज्जित करना था, जो छात्रामारो से अपनी रक्षा करना चाहते थे। मैं इसमें विश्वास कर सकता था ..

“लेकिन फिर हम मी० आई० ए० के ध्वंसकार्य प्रशिक्षण मुख्यालय में जा पहुंचे और यही हमें ऐसी युक्तियों तथा कार्यों में प्रशिक्षित किया गया जिनकी जेनीवा समझौते में शायद ही कोई सगति थी।

“हमें जिन अनेक विधिवर्जित शस्त्रों से परिचित कराया गया, उनमें लगते ही फट जानेवाली गोलियां, आवाज न होने देनेवाली युक्ति से सज्जित मशीनगने, हस्तनिर्मित विस्फोटक और नषाम भी थे

“और फिर एक ऐसी मौतानी ईजाद भी थी, जिसे लघु तोप कहा जा सकता है। यह युक्ति एक मुनम्व विस्फोटक से भरे इस्पात के नत्तोदर टुकड़े से बनी थी उसे पेट्रोल की टकी के साथ इस तरह से जकड़ दिया जाता था कि दाहक गोला टकी को

\* Philip Agee, *Inside the Company CIA Diary*, Penguin Books, Baltimore, 1975, pp 45-46, 83-84

फाड़ दे और दहकते पेट्रोल को बस की पूरी लंबाई में फैला दे, जिससे भीतर हर कोई आदमी भस्म हो जाये। यह शेष कक्षा को मुझे ही दिखाना था कि ऐसा कितनी आसानी से किया जा सकता है ..

“ मैं वहाँ खड़ा लपटों को बस को निगलते देख रहा था। मेरे खयाल में यही सत्य को जानने की पेशी थी। जलते हुए लोगो से भरी इस बस का स्वतन्त्रता से क्या संबंध हो सकता है? लोकतंत्र और सी० आई० ए० के नाम पर मुझे यह तय करने का क्या अधिकार है कि यो ही लोग मौन का निकार बने ?”\*

अपनी पुस्तक 'कंपनी के राज' में फिलिप एग्नी इसी का विस्तृत चित्र प्रस्तुत करते हैं कि विदेशों में कार्परेट और अमरीकी गुप्तचरो द्वारा निदेशित आतंकवादी गुटों को सी० आई० ए० किन मददों से और किस प्रकार शस्त्रसज्जित करती है:

“ अर्द्ध-मैत्रिक सक्रियाओं में ही घनिष्ट रूप में जुड़ी हुई वे विध्वंसकारी कार्रवाइयाँ हैं, जो सारा कार्रवाई के नाम में जानी जाती हैं। गुटों के विरोध पण्डित करने और उनकी महायत्ना में, जिनमें विमान के लिए कभी-कभी ह्यूटी में मुक्त पुनिर्गठाने या फिर राजनीतिक पार्टियों के उपवादी संग होने हैं, बंड कम्युनिस्टों और दूसरे चरम वामपंथियों को उनके जर्म-जन्मों और प्रदर्शनों को भंग करने उठाने की कोशिश करने हैं।

\* Victor Marchetti and John D. Marks op cit. pp 111-112





आज प्राविधिक मेवा प्रभाग इन्ही कृत्यों का निष्पादन सी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी निदेशालय के अन्तर्गत करता है।

इस निदेशालय में कोई १,३०० लोग काम करते हैं और इसका वार्षिक बजट १२ करोड़ डॉलर तक है। यह निदेशालय सिर्फ सी० आई० ए० की अन्य शाखाओं के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण सामग्रियों को समाहित ही नहीं करता है, बल्कि विशेषकर जटिल अर्द्ध-सैनिक कार्रवाइयों के लिए नये तरीकों और प्रविधियों की खोज भी करता है। सी० आई० ए० के ढाचे में तथाकथित आपूर्ति अनुभाग भी विशेषण महत्वपूर्ण है। वह साज-सामान और "औजार", अर्थात् विभिन्न सत्रियाओं के लिए हथियार तैयार करता है।

अमरीकी गुप्तचर्या द्वारा विदेशी नेताओं के विरुद्ध की जानेवाली आतंकवादी कार्रवाइयों से सबड अनेक विशेष मामलों की अपनी तहकीकात के दौरान सीनेट प्रवर समिति ने यह स्थापित किया कि साठ के दशक के आरम्भ में सी० आई० ए० ने सामान्य सशस्त्र कार्यों के ढाचे के भीतर हत्याओं का सपठन और प्रियान्वयन करने के लिए एक विशेष प्रभाग का गठन किया था। प्रभाग का कूटनाम ZR/RIFLE था। "सामान्यरूपेण, ZR/RIFLE को हत्याओं से सबड प्रश्नों का निर्णय करना था और उसके लिए आवश्यक आधार केंद्र तैयार करना था। अधिक सुस्पष्ट शब्दों में, उसे भावी हत्यारों को प्रशिक्षित करना था और



आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्ही कृषो का रिमा-  
इन मी० आई० ए० के रिमान तथा प्रोडोविडी  
निदेशानय के आर्गीन करना है।

इम निदेशानय से कोई १.३०० लोग काम करो  
है और इमका वार्षिक बजट १२ करोड बाबर तक  
है। यह निदेशानय गिर्न मी० आई० ए० की अग  
शाखाआ के रिम आवश्यक अधिक महत्त्वपूर्ण मापविषो  
को समर्थित हो करी करना है। बर्निक रिपोनडा  
अर्निक अर्न मैनिक कारीचाइयो के रिम तये तरीको  
और प्रविधिगा की मात्र भी करना है। मी० आई० ए०  
के इरक से नवराइदिन आगुर्न अकुभाग भी रिपोन  
महत्त्वपूर्ण है। यह माइ मामान और "प्रोडो"   
अर्निक रिबिद्वन मकिगाआ के रिम इथिपान मैर



आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्ही कृत्यों का निष्पादन सी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी निदेशालय के अंतर्गत करता है।

इस निदेशालय में कोई १,३०० लोग काम करते हैं और इसका वार्षिक बजट १२ करोड़ डॉलर तक है। यह निदेशालय सिर्फ सी० आई० ए० की अन्य माघाओं के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण मामलों को समाहित ही नहीं करता है, बल्कि विशेषज्ञ जटिल अर्द्ध-सैनिक कार्रवाइयों के लिए नए तरीकों और प्रविधियों की खोज भी करता है। सी० आई० ए० के दांचे में तथाकथित आपूर्ति अनुभाग भी विशेष महत्वपूर्ण है। यह माइ-मामान और "बीडार", अर्थात् विभिन्न मक्खियाओं के लिए हथियार तैयार करना है।

अमरीकी गुप्तचरों द्वारा विदेशी नेताओं के विरुद्ध की जानेवाली आतंकवादी कार्रवाइयों से संबंध प्रवेश विशेष मामलों की अपनी सहजीवन के दौरान सीनेट प्रकर समिति ने यह स्थापित किया कि माइ के दांचे के आरम्भ में सी० आई० ए० ने सामान्य सचिव कार्यों के दांचे के भीतर हथ्याओं का मदडन और नियन्त्रण करने के लिए एक विशेष प्रभाग का गठन किया था। प्रभाग का कूटनाम ZR/RIFLE था।

सामान्यतः ZR/RIFLE को हथ्याओं से मदड प्रयोगों का निर्णय करना था और उसके लिए आवश्यक कर्मचारी तैयार करना था। अधिक गुप्तचर एजेंसियों में इस भारी हथ्याओं को प्रशिक्षित करना था और



आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्हीं कृत्यों का निष्पादन सी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिक निदेशान्वय के अन्तर्गत करता है।

इस निदेशान्वय में बोर्ड १,३०० लोग काम करते हैं और इसका वार्षिक बजट १२ करोड़ डॉलर का है। यह निदेशान्वय मिर्क सी० आई० ए० की अगुआई के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण सामग्रियों को ममायित ही नहीं करता है, बल्कि विशेषज्ञ अटिल अर्द्ध-मैनिक कार्रवाइयों के लिए नये तरीकों और प्रविधियों की खोज भी करता है। सी० आई० ए० के ढांचे में तथाकथित आपूर्ति अनुभाग भी विशेष महत्वपूर्ण है। वह माइ-सामान और "ओवर" अर्थात् विभिन्न सक्रियाओं के लिए हथियार तैयार करता है।

अमरीकी गुप्तचरों द्वारा विदेशी नेताओं के विरुद्ध की जानेवाली आतंकवादी कार्रवाइयों से संबंध अनेक विशेष मामलों को अपनी सहक्रीकान के दौरान सीके प्रवर समिति ने यह स्थापित किया कि साठ के दशक के आरम्भ में सी० आई० ए० ने सामान्य सक्षिप्त कार्यों के ढांचे के भीतर हत्याओं का संगठन भी क्रियान्वयन करने के लिए एक विशेष प्रभाग का गठन किया था। प्रभाग का कूटनाम ZR/RIFLE था। "सामान्यरूपेण, ZR/RIFLE को हत्याओं से संबंध प्रश्नों का निर्णय करना था और उसके लिए आधार केन्द्र तैयार करना था। अधिक में, उसे भावी हत्यारों को





उत्तर: मैंने समय-समय पर कम से कम आधा दर्जन डार्ट पिस्तौले देखी होगी, क्योंकि मैं या तो प्राग्नेपिकी की परीक्षा करता था या विपाक्तीकरण विधियों की। चर्च समितिवाली उस पिस्तौल को बिजलीचालित कहा गया है। मुझे इसमें बहुत शक है। मैंने जो विद्युत पिस्तौले देखी हैं, वे चुबकीय गोलियाँ इस्तेमान करती थीं और आकार में अधिक बड़ी थीं। . . .

प्रश्न: . आपने कहा था कि आपका काम वियो से ताल्लुक रखता था। यह किस तरह का काम था?

उत्तर: बुनियादी तौर पर सी० आई० ए० ने मुझसे हत्या की कई विधियाँ और युक्तियाँ निकालने के लिए कहा था। मैंने जिन भी चीजों पर काम किया, लगभग वे सभी लोगों को मारने के लिए थीं। मेरा जिन तीन मुख्य हत्या-प्रविधियों से सरोकार था, वे गोली से मारने, जहर से मारने और विस्फोटक युक्तियों से मारने की प्रविधियाँ थीं।

प्रश्न: क्या आप हमें किसी ऐसे हथियार की मिसाल दे सकते हैं, जो जहर का उपयोग करता था?

उत्तर: हा। छठे दशक के मध्य में मुझसे संपर्क रखनेवाला सी० आई० ए० का एक एजेंट एक समस्या लेकर मेरे पास आया, जिसे वह हल करवाना चाहता था। ये बातें हमेशा परिकल्पनात्मक रूप में रहीं जाती थीं। मिसाल के लिए, मान लीजिये कि आप किसी को हवाई जहाज पर बिना बहुत ध्यान आकर्षित किये मारना चाहते हैं। खैर, इसका सबसे सीधा



उत्तर: जिस अकेले मोर्के पर उसे मुझसे महज "मान सीजिये" के बजाय कुछ निश्चित रूप से कहना पड़ा, वह तब था, जब वह एक बाले आदमी को हटाना चाहता था जो त्रेगुआर बार बघाता करता था।

प्रश्न: हटाना ?

उत्तर: जी हाँ यह बाल को मीठी बनाने का उनका अंशक था बहरहाल, इस बाले आदमी को अपनी यात्रा में एक निश्चित गद्दी पर, वह सीजिये हि स्टार्ट करने के आठ मिनट बाद, मरना था - क्यों - यह मैं नहीं जानता फिर भी मुझे बालों कुछ जानना इकरी था - उमरा बहन, वह मरना तो नहीं है, लगी ही मारी जाने। आखिर उन्होंने मुझे एक त्रेगुआर बार का स्टीरिंग सायर दिया और बार बनाने एक आदमी का फोटो भी, जो गिर्ले स्टीरिंग पर उसके हाथों का ही था। इसी से मैं जाना कि वह काला है। गया नहीं क्यों, मगर मुझे यह अर्थ है मरना।

बहरहाल मैंने एक जंग मैपार किया और उसे बरफ पर बहा मरना देव को बहा, जहाँ वह अब लीज पर जान रहा मरना करता था। मैंने साधा लगी उन्हें कि कि कि आठ मिनट में, या जो भी समय लगे हैं उसमें जाना काम कर जाने। मरना है कि वे मरना मरना हूँ।

२. आप हीन कर करने है कि वे मरना हूँ ?  
काम कर है कि एक आदमी ने किया है



उत्तर: जिस अबेले मौके पर उसे मुझे महज "मान लीजिये" के बजाय कुछ निश्चित रूप से कहना पड़ा, वह तब था, जब वह एक काले आदमी को हटाना चाहता था, जो जैगुआर कार चलाया करता था।

प्रश्न: हटाना?

उत्तर: जी हाँ, यह बात को मीठी बनाने का उनका अंदाज था। बहरहाल, इस काले आदमी को अपनी यात्रा में एक निश्चित घड़ी पर, वह लीजिये कि स्टार्ट करने के आठ मिनट बाद, मरना था—क्यों—यह मैं नहीं जानता। फिर भी मुझे बारी कूट जानना जरूरी था—उमका बहन, वह नन्हा तो नहीं है, ऐसी ही मारी बाले। बाहिर उन्होंने मुझे एक जैगुआर कार का स्टैंडिंग लाकर दिया और कार चमाने एक आदमी का फोटो भी, जो विर्ज स्टैंडिंग पर उसके हाथों का ही था। इसी से मैंने जाना कि वह काला है। पता नहीं क्यों, मगर मुझे यह अजीब लगा।

बहरहाल मैंने एक जंग तैयार किया और उसे चक्के पर बहा लगा देने को कहा, जहाँ वह आस नीर पर अपने हाथ रखा करता था। मैंने माया ऐसी रखी थी कि किन्हीं आठ मिनट में, या जो भी समय रहा हो, उसमें अपना काम कर दिये। लगता है कि वे उम्मे मृत हुए।

प्रश्न: बात कैसे कर सकते हैं कि वे मृत हुए?

उत्तर: बात यह है कि एक आदमी ने, सिये ने



यह पक्का विश्वास हो जाये कि वह मर गया है। बहरहाल, मुझे यही लगा कि मुझे विप प्रणालियों के साथ अच्छे काम का इनाम दिया जा रहा है। मुझे ऐसा इनाम नहीं चाहिए था। बाद में मैंने उस आदमी से, जिसने मुझे निमंत्रित किया था, पूछा कि यह सब क्या है। उसने बस चकित भाव से मेरी तरफ देखा और कहा, "क्या तुम्हें इसमें मजा नहीं जाया?"

प्रश्न: अभी तक हम रासायनिक प्रणालियों के बारे में ही बातें करते रहे हैं। क्या आपने उस डार्ट पिस्तौल जैसी जुगतें भी डिजाइन की थी?

उत्तर: बिल्कुल वैसी ही तो नहीं, मगर उस किस्म की कई और चीजें। मोटरकार कांड के बाद मेरा परिचित मेरे पास एक और परिकल्पनात्मक समस्या लेकर आया: "मान लीजिये कि आप ऐसी स्थिति में हैं, जिसमें कमरे में कोई भी आग्नेयास्त्र या ऐसी कोई भी चीजें लाना असंभव हो, जो सदेह पैदा कर सकती हैं। आप कमरे में मौजूद लोगों से कैसे निपटेंगे?" कुदरती तौर पर मैंने पूछा है: "'निपटने' का मतलब क्या है?" मेरा मतलब है कि क्या आप उन्हें हटाना चाहते हैं, या अस्थायी रूप में कार्यक्षम बनाना? जान के साथ बलात्कार? जरा अश्लील होने पर भी यह फिकर मुझे हमेशा से पसंद है। खैर, इस विशेष प्रसंग में मेरे संपर्क आदमी ने कहा, "हम उन्हें हटाना चाहते हैं, पूरे ही तौर पर। पर वे औसत आकार के कमरे में खासी बड़ी समस्या में होंगे।" और मैं

। तैयार की गयी दुष्टतम जुगतों में से एक













वे जाने के उद्देश्य द्वारा मर्त्य कर लेती थी।  
 उनका उद्देश्य यह था कि हवाई जहाजों द्वारा विमान  
 दुर्घटनाओं में उन्हें निगलकर किसी इलाके को रात के  
 लिए प्रसन्न बना दिया जाये। वे मुराये आदमी की  
 बात नहीं लेती थी। लेकिन अगर उस पर कुछ पड़े  
 तो वह फट जाती थी और पैर की एक-एक हड्डी को  
 धुर-धुर कर देती थी। दर अमन, मेरा काम उनके  
 लिए एक अक्रियकरण पदार्थ विकसित करना था  
 और मो भी इसलिए कि एक बैठक में मैं दो दो  
 दूध बैग या 'भाई', अगर आप वही आरबो-कुम्बो  
 देखन मुराये गिरा देने हैं और बाद में उन इनके को  
 मर करने के लिए जाने हैं, तो आप वहाँ क्या करेंगे  
 वह हम दोनों पर कैसे ?"



मैंने उनकी परीक्षा होने देखा है, जो मचमुच एक मयानक दृश्य है।

प्रश्न: उनकी परीक्षा कैसे की जाती थी?

उत्तर: इसके लिए हमें सागो में बड़ी टांगों की सेना होना था, जो, प्रसंगत, वियननाम में मारे जानेवाले लोगों की लाशें थी। उनके परिवारों से यह कह दिया जाता था कि उनकी टांगें लड़ाई में जाती रही थी। बहरहाल, हम पैर की फौजी मोर्चे में घुमाने और उसे फौजी बूट में डाल-देते और इसके बाद उसे एक मुक्ति से जोड़ देते, जो उसे केवल सुरंग पर १७० पाउंड (लगभग ८५ किलोग्राम) वजन के आदमी जितने बल के साथ रख देती थी।

प्रश्न: आपने शुरुआत यह कहने के साथ की थी कि आपका मुख्यतः ज्ञान लेने के तीन बुनियादी तरीकों से संरोकार था। चर्च भूमिति की तहकीकात के दौरान औपघो और मादक द्रव्यों की काफी चर्चा चली थी। आपने कभी ऐसी चीजों पर काम किया?

उत्तर: जहां तक मुझे याद है, सिर्फ दो बार। मेरा संपर्क आदमी मेरे पास एक-दूसरी के भीतर रखी २७ बोतलों में बंद आधा ग्राम एल० एस० डी० साया। मुझे यह सामान सस्थान के भोजनालय में दिया गया था। आम तौर पर उसका तौर-तरीका बड़ा रुखा-सा और सीधा हुआ करता था। मगर इस

• वह जरा उद्दिग्ध था। यह छठे दशक की बात है एल० एस० डी० क्या होता है, इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। मुझे उसमें कुरेद-कुरेदार





ऐसे मैनिफो की, जिन्हे बी० जेड० दिया गया था, कुछ बहुत ही दहमानेवाली फिल्में देयी हैं। वे लोग बिल्कुल कैंटेदोनी मूर्च्छाप्रम्भों (पेगियों की स्मृति के साथ इद्रियज्ञानगून्यता में प्रम्भ) की तरह हो गये थे। वे लोग नार चुआने हुए बुतों की तरह बैठे हुए थे, जिनका अपने दैहिक कृत्यों पर कोई नियंत्रण न था। अगर कोई उन्हें "खड़े हो" या "हेलमेट पहनो" जैसा आदेश भी देता था, तो वे आपे से बाहर हो जाते थे और आदेश देनेवाले को जान में ही मार देने की कोशिश करने लग जाते थे। मैंने सुना है कि इस पदार्थ का असर हफ्तों बना रहता है।...

प्रश्न: आपने देश में आंतरिक उपयोग के लिए भी कुछ ईजाद किया?

उत्तर: मैं सोचता था कि एल० एस० डी० के काम तक मैंने लगभग जो कुछ भी तैयार किया था, वह, और हो सकता है कि वे सर्पविष कलम भी, मयुक्त राज्य में उपयोग के लिए नहीं थे। लेकिन अब मेरे खयाल में उन कलमों का यही उपयोग किया गया। मुझे यह न पूछिये कि क्यों, मगर मुझे कुछ ऐसा लगा कि उनका कोई स्थानीय उपयोग ही था।

प्रश्न: बी० जेड० के साथ आपने अब काम किया?

उत्तर: पचास के दशक के अंत में।

प्रश्न: समस्याएं छोड़ने के लिए आपको किस बात ने मजबूर किया?

उत्तर: १९६० के आसपास मुझे नफरत होने लगी।... मैं बेहद दुखी था।... मेरा परिवार



मा। भगतको बीजे बाधूम हुआ कि वह मी० आर्टि० ग० का है ?

उत्तर : उगने मुझे मी० आर्टि० ग० प्रत्यक्ष दिखाया था। मर एक नगर का परधान था। इनके भगवा एक नगर में अज्ञात भी हो जाता है कि वे लोग देखने में बीजे लगते हैं। जब वह शम्भ आया तो वह ऐसा अजीब लग रहा था कि मेरी मेकेटरी में कहा, 'बहाल एक आदमी आया है, जो शायद पुनिम का है।' और वह निश्चय ही पुनिमकाया लगता था - बीबीज जवडा, बटोरनागूर्न आदि।

प्रश्न : आप इन लोगों को उनके हुनिये में ही पहचान करने थे ?

उत्तर : गैर कुछ और भी करते थे। जब वह शम्भ आया, तो उसके साथ एक बहुत ही बुरा आदमी था, जो देखने में कुछ-कुछ किम-काग जैसा लगता था। जब वह कुरमी पर बैठा, तो कुछ भनभनाया, जिस पर मैंने कुछ ऐसी टिप्पणी की थी, "आपकी परतली पेटो में जो भी है, वह कोई देखने लायक चीज होनी चाहिए।" वह बस मुसकराया और उसने अपना कोट खोला और वहा ० ४४ इंची मैग्नेम पिस्तौल थी। मैंने उसके पहले या बाद में कभी कोई ऐसा आदमी नहीं देखा कि जो इतना बड़ा हो कि ऐसी पिस्तौल को परतली पेटो में छिपा सके। बहरहाल, मैंने उसे देखना चाहा - उसने उसे निकाला और मेरे हाथ में दिया। उस पर कोई नंबर नहीं था। नंबर भिटाया नहीं गया था, क्योंकि कोई नंबर ही नहीं



जिसे कालीन के नीचे छिपाकर रखा जा सकता था।

प्रश्न: ऐसी चीज भला किस काम में लायी जा सकती थी?

उत्तर: कौन जाने? शायद विदाई पार्टियों को सजीव बनाने के लिए। जैसे कि मैं कह चुका हूँ। मुझे मचमुच इसकी कोई सीधी जानकारी नहीं है कि इन युक्तियों में से किसे कैसे इस्तेमाल किया गया।

प्रश्न: आपने मी० आर्ई० ए० के लिए काम करना कैसे शुरू किया था?

उत्तर: जब मैं कोई १७ साल का था, मेरी एक महपाटी में दोस्ती थी, जो आन्तेयाम्बों के मामले में उन्नाद था। उसे बूको-गिम्नीनो भी, गामकर नाम्नी हवियारों की विमर्शण जानकारी थी। यह पक्का फागिम्न था। और एक दिन उसने मुझे बताया कि वह मी० आर्ई० ए० के लिए काम करता है। प्रमगन, वही वह नाम था जो मुझे कराकम में गया था।

प्रश्न: क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मी० आर्ई० ए० ने आपको मद भरती दिया, जब आप १७ साल के थे?

उत्तर: लगभग उन्नी समय। जब मैं आर्ई एम्न में था।

प्रश्न: क्या यह आम तरीका है?

उत्तर: मुझे पता नहीं। मुझे इस इतना मायूम है कि उनके लिए हमारे भी पत्रों में काम कर रहा था। अगर आप इस पर सौर करें कि १७ साल बिताने ही छोट्टे विपननाम में और दूसरे विपन

मुद् में लड़े थे, तो यह उम्र कोई इतनी कम है भी नहीं। जामूसों की लोग हमेशा चालीस साल के ग्रीड, जेम्स बॉड किसम के लोगों के रूप में ही कल्पना करते हैं। छोड़िये भी, वह साइक्लि पर जाता छोकरा भी अपनी बेल्ट में स्वचालित पिस्तौल खोसे हो सकता है—तो भी राष्ट्रीय सुरक्षा के बहाने। बहरहाल, मेरा दोस्त मुझे एक रविवार पाठशाला ले जाया करता था। वहाँ एक गिरजाघर था, जिसे हम आड की तरह इस्तेमाल करते थे और हम वहाँ जाकर बुनियादी शिक्षण, विचारधारात्मक शिक्षण, आग्नेयास्त्रों और विस्फोटकों, आदि में शिक्षण पाते थे।

प्रश्न: किनसे?

उत्तर: मैं नहीं जानता कि वे कौन थे, अलबत्ता पारदर्शियों, चाटों, साहित्य, आदि से वे अवश्य अच्छी तरह से ज्ञात थे।

प्रश्न: जब आप इतने छोटे थे, तब सी० आई० ए० आपसे क्या काम कराती थी?

उत्तर: अधिकांशतः सायलेसर बनाने का मेरा दोस्त समय-समय पर मेरे पास आता और कहता कि उन्हें ऐसी-ऐसी पिस्तौल के लिए सायलेसर चाहिए और मैं उसे तैयार कर देता। वे इस तरह के बनाए जाते थे कि आसानी से अलग-अलग किये जा सके जिससे इस्तेमाल के बाद केके भी आसानी से जा सके और इसलिए भी कि आप उन्हें हवाई जहाज पर अपने सामान में ले जा सकें और कोई देखे, तो सब भी ठीक ठीक रहे। तैयार करने के बाद वे सायलेसर बनाने के लिए वापस आ जाते थे।

गाड़ियों के मायनेमरों जैसा ही होता है . एक बार मैंने एक ऐसा मायनेमर तैयार किया, जिसके पुरजे गले में पहनने की भाँसा पर लटके हुए थे, जिसमें देखने में वह आधुनिक किस्म के जेवर जैसा लगता था। सचमुच वह ख़ासा आकर्षक था। एक और मायनेमर मैंने छेददार जापानी सिक्को से बनाया था ..

प्रश्न: और हाई स्कूल के बाद आप उस सस्थान में गये ?

उत्तर: हा, विस्फोट करके चीजों को उड़ाने रहने और ऐसी ही और शरारतों के कारण हाई स्कूल से निकाल दिये जाने के बाद। पहले मैंने सस्थान में काम किया, फिर दगा-नियंत्रण साधन बनाने की कंपनी में, उसके बाद खुद अपनी फर्म में, और, आखिर में, आग्नेयास्त्र निर्माता के यहाँ।

प्रश्न : लेकिन आपने कहा था कि जब आपने आग्नेयास्त्र कंपनी में काम शुरू किया, तो उस समय आपका सी० आई० ए० से कोई संपर्क नहीं था।

उत्तर: शुरू में नहीं। लेकिन एक दिन कंपनी में काम करनेवाला एक आदमी मेरे पास आया, जिसने कहा कि मेरी "एक दिलचस्प भेंट" होगी। और मेरे पास पाच लोगो का एक दल आया और हमने बातचीत की। उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया, मगर जो कहा जा रहा था, उससे मैं समझ गया कि वे सी० आई० ए० के हैं। बहरहाल, वे ज़्यादातर नये-नये बातों की ही टोह ले रहे थे: "आप क्या रहे हैं?" "कहा काम कर रहे हैं?" एक नये

प्रकार के सपकों की स्थापना हुई। असल में ज्यादातर औपचारिक। इस बीच मेरे अनुरोध पर मेरे काम में एक जनरल मैनेजर को भी सम्मिलित किया गया। सारे काम को मैं अकेला ही नहीं कर सकता था। मैं निर्फ अनुसंधान ही करना चाहता था। मुझे स्पष्ट निर्देश दिया गया कि किसी भी और को इस तरह के काम के बारे में हरगिज पता नहीं चलना चाहिए। सी० आई० ए० का दिया हुआ पहला ही कार्यभार सास्ता बड़ा था। मुझे एक गुटका तैयार करनी थी, जिसे मैंने 'दीतान की डायरी' का नाम दिया। यह गुटका हाथ से गढ़े जानेवाले हथियारों से सर्वश्रेष्ठ गुटका का ही मिलमिला था, मगर उसमें विस्फोटक और गोला-बारूद के संश्लेषण के बजाय विशेषकर रासायनिक तथा जैविक अस्त्रों और प्रणालियों के इस्तेमाल के बारे में बताया जाना था। यह ऐसे लोगों के लिए लिखी जाती थी, जिन्हें हाई स्कूल स्तर के अधिक रसायन का ज्ञान नहीं है। मैं आपको ईमानदारी से अभी ही बता दू कि मैं इस सारे विचार के बहुत पक्ष में नहीं था। मैं यह महसूस करने लगा कि एक जगह सग्रहीत करने के लिए यह सचमुच खतरनाक जानकारी है। मतलब यह है कि ऐसी गुटका, जो अगर कहीं बाहर चली गयी और आतंकवादियों के किसी टोनी के हाथ लग गयी, तो वह उन्हें बहुत कम ही समय और कम से कम धन लगाकर बड़े बड़े शहरों को नियंत्रण में ले लेने और बरखाद त



मिला, " निधिये। एक ही प्रति। कोई कार्बन प्रतिनिधि नहीं। "

इसलिए पहले मैंने जो किया, वह था पादप विषों का सर्वेक्षण। पादप विष इतने सारे हैं कि मित्र चकरा जाता है। सबसे आम पौधे भी, जिन्हें आप अपने घर के अहाते में ही पा सकते हैं, उचित समाधान किये जाने पर बहुत घातक विष उत्पन्न कर सकते हैं जिनका आगामी से पता नहीं चलाया जा सकता मेरे सवाल में मैंने गुटका में कोई 40 पौधों भी उनको उपयोग में लाने में संबंधित निर्देशों का समावेश किया था। एबेगी उसमें बहुत गुन हुआ।

इसके बाद मैं जैविक प्रणालियों पर आया मैं कई महामह लोगों के जैव उत्प्रेरक गुणों पर बिना किसी नाम दिक्कत के उत्पन्न किया जा सकता है। इसकी सच्चा सांगी बड़ी है। बेशक अपने बच के लिए कुछेक महान गुर्वीय करने होते हैं, नहीं आप अपना ही सजाया कर देंगे। यह बहुत महान घटा है।

बहरहाल, मैंने यह सब विष इकट्ठा और प्रेष दिया और वे बेहद गुन हुए। फिर उन्होंने यह 'अब आप सामाजिक हिम्मे और प्रभावों का कहते हैं।' और तब मैंने अत्यंत साधारण सामग्री का उपयोग करने हुए उन पदार्थों का बनाने पर काम किया।

अब: अगली कुछ पता है कि उन्हें यह इन्फो विष चाहिए थे ?



एक नाव बड़ी शॉटगन भी, नाम माफिया के लोगों जैसी ही, जिसकी कुल लंबाई १८ इंच (लगभग ४६ सेंटीमीटर) थी और जो वही उपकरण फ्लक के नीचे छिपी हुई थी।

प्रश्न: सी० आई० ए० का अगला अनुरोध क्या था ?

उत्तर: मैंने बैठे-ठाले यो ही एक विशेष २२ इंची ( ५६ मि० मी० ) रिम-फायर गोली\* विकसित करने की बात कही थी। सी० आई० ए० ने इसमें बहुत दिलचस्पी ली और कहा, "क्या आप ऐसी गोली विकसित कर सकते हैं, जो विस्फोटक समता को बहुत ज्यादा बड़ा दे?" यह विशेष २२ इंची गोली वास्तव में एक अतिलघु विलंबित क्रिया बम थी।... इन गोलियों के पहले बैच को सुद मैंने सायोनिक सायलेसर लगी हाई स्टैंडर्ड पिस्तौल से चलाया था। मेरा संपर्क एक २००० पन्ने की टेलीफोन डायरेक्टरी को पिछले आगमन में ले गया और मैंने उस पर कोई १५ फुट की दूरी से गोली चलायी। और गोली ने उसमें इतना बड़ा छेद कर दिया कि आप अपनी मुट्ठी घुसा से। उसने कोई ज्यादा शोर भी नहीं किया—बस, धप्प की सी अजीब आवाज। गोली में ऐसा मसाला भरा गया था कि उसकी गति अवध्वनिक रहे, ताकि कम शोर पैदा करे। "हे भगवान, हैरत की चीज है!" मेरे

---

\* रिम-फायर ( विस्फोटक ) गोली—ऐसी गोली है, जो निगाने पर पड़ने पर विस्फोट पैदा करती है।—सं०







गदगी पैदा करती है।" इसलिए मैंने कुछ ऐसी गोली तैयार की, जिनमें बहुत ही कम ममाला या और बहुत ही कम आवाज करती थी। उनकी गति बड़ी कम थी। जब ऐसी गोली प्रवेश करती, तो उन एक सिरा फट से घुन जाता और आप जो भी वह शरीर में इजैक्ट हो जाता। इनमें से कुछ गोलीमें हिमशुष्कित नागविष भरा हुआ था। कुछ में व्यास सर्पविष भी था। मैं यह बिलकुल भी नहीं समझ रहा था कि सी० आई० ए०-वाले विषयुक्त गोली आखिर चाहते क्यों हैं। मुझे लगा कि मेरा जेम्स बॉरी सरीसे लोगो से पाला पडा है, जो बस नयी-नयी जुगतें ही चाहते हैं। उन्हें वह गोली बहुत पसंद आय और बहुत सुविधाजनक लगी।

प्रश्न: बहरहाल, वह सासा परिष्कृत हथियार था। क्या आपने उससे भी अधिक परिष्कृत हथियार बनाये ?

उत्तर: हा। सवाल फिर परिकल्पना रूप में रखा गया था "अगर कहीं आप किसी ऐसी जगह में जा पसे, जहां आप शत्रु, कामोन्मत्त अल्बानी बौलो से या बेरहम जंगली भीड़ से घिर जाये, तो आप क्या करेंगे?" मैंने खासी अक्ल दौड़ायी। आखिर मैंने कहा, "शोलाफेक हथियार मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत कारगर होने है। जेम्मी आकार का शोलाफेक बनाने का भी कोई तरीका निकाला जा सकता है।"

यह विचार उन्हें बहुत दिलचस्प लगा। लेकिन हमारे पास इस तरह के जो रुढ़ साधन थे, उनके





का आरम्भ तब हुआ, जब मैंने आग्नेयास्त्र कपनी के लिए काम करना शुरू किया। .. मेरी लोगों को, जिनमें मैं खुद भी आ जाता हूँ, जान से मारने की चीज़ें बनाने की बनिस्वत जीने में कहीं ज्यादा दिव्यबल्यो थी। कुछेक अवसरों पर मैं अपने को करीब-करीब उड़ा ही बैठा था।

प्रश्न: यह सोचकर कि हो सकता है, यह कोई संयोग न था, आप कभी पैरानॉइड ( मनोविभ्रमग्रस्त ) तो नहीं हुए ?

उत्तर: बेशक, मगर अपना ध्यान रखना जरूरी है, नहीं तो आप पागल हो जायेंगे। बहरहाल, मैं शारीरिक और मानसिक रूप में इस हद तक निश्चिंत हो गया था कि किसी न किसी चीज़ का जवाब दे जाना अवश्यभावी था और तभी मुझे दिन का दीया पड़ा। एक मान बाद लगभग उन्नीस दिन मुझे दिन का दूसरा दीया पड़ा। तीन महीने बाद मैं काम पर वापस गया, मगर अन्त में जाने के पक्के इरादे में ही।

मेरे सुझाव में यह मेरे औपचारिक रूप में वापस में अग्रिम होने के कुछ ही दिन बाद की बात है कि पा कोन आया और मैं एक सी० आई० ए०-वाले से मिला। और कहने की वह वक्त मेरे स्वाध्याय के बारे में ही कुछ-ना कुछ कह रहा था। मगर उसकी दिव्यबल्यो मेरे सामाजिक जीवन में थी। जानने है न, बहुत अग्रगण्य, अन्तर्जात-में प्रश्न, मगर यह सब अग्रगण्य था। सो मैंने कह दिया वक्त, मैं हथियारों का काम और



प्रश्न: उनके साथ आगरी आगिरी मुनाफा कौनगी थी?

उत्तर: आगिरी मुठभेड़ तब हुई, जब मेरी बीबी का ध्यान इस तरफ गया कि उसका पीछा किया जाता है। यह पहली बार था कि जब उसने महसूस किया कि कोई हर वक्त उसके पीछे लगा रहता है और वह डर गयी। बस, इसी ने सब कुछ तय कर दिया। मैंने फोन किया और दो सी० आई० ए०-वालों से.. एक रेस्तरां में भेट निश्चिन की। मैं अंदर गया और बैठ गया। उन्होंने पीने के लिए कुछ मगवाया और मुझसे पूछा कि क्या मैं भी पीना चाहता हूँ। मैंने कहा, "शुक्रिया, नहीं; मैं बस एक बात कहने यहाँ आया हूँ, जो यह है अत्यंत सक्षेप में—अगर आप मुझे निगरानी में रखना और इस तरह का आचरण करना जारी रखते हैं कि जैसे मैं किसी राजनीतिक बकवास में शामिल हूँ, सासकर अब, जब कि आपने मेरे परिवार को भी उसमें घसीट लिया है, तो मैं आपको अब यहाँ खड़े-खड़े बता रहा हूँ कि मैं सैंग्ली की सैट्रल एयर कंडीशनिंग प्रणाली में छिपाये YX के कनस्तर को उड़ा डालूंगा।. अगर मेरे साथ या मेरे परिवार के साथ कोई भी असाधारण बात होती है, तो मैंने व्यवस्था कर रखी है कि यह विस्फोट हो और वह होकर रहेगा।" और मैं उठा और बाहर निकल आया।

प्रश्न: आप भासा दे रहे थे?

उत्तर: नहीं, मैं सच कह रहा था। मैं जीवरासायनिक



स्तम्भ में आतंकवाद का यह लोमहर्षक और उत्तेजक खुला आह्वान सी० आई० ए० द्वारा पिछले पचीस वर्षों में पैदा किये गये और पोषित एक छोटे से, मगर घातक गुट द्वारा किये जानेवाले दुष्कृत्यों में सिर्फ सबसे ताजा ही है," अमरीकी पत्रिका 'कॉवर्ट एक्शन इन्फॉर्मेशन बुलेटिन' ( 'प्रच्छन्न कार्य सूचना पत्रिका' ) ने इंगित किया।

"दो दशकों से," पत्रिका ने आगे कहा, "क्यूबाई निर्वासित-अतिवादी पश्चिमी गोलार्ध में लगभग प्रत्येक और यूरोप तथा अफ्रीका में भी अनेक सनसनीखेज आतंकवादी कार्रवाइयों के केंद्र में या केंद्र के निशट रहे हैं। पुलिस सूत्रों का विश्वास है कि इस दल के केंद्र में कोई १०० लोग हैं, जो न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, मियामी और फ्लॉरिडा की निर्वासित समुदायों के भीतर बिखरे हुए हैं। मगर वे ऐसे लोग हैं, जो एक-दूसरे को पचीस साल में जानने हैं, उनमें घुसपैठ करना बहुत मुश्किल है। उन्होंने बेसीफी के साथ चार महाद्वीपों पर हमला किये हैं और लोगों को अपाहिज रिया और जान में मारा है। .

"मानवें दशक भर और आठवें दशक में भी बारी समय तक इस क्यूबाई निर्वासित जासूस ने सी० आई० ए० और उसके सहयोगियों के लिए न केवल क्यूबा पर अमध्य हमलों में, जिनमें कोभीनोम की बारी ( वे आक्रामक ) का विफल हमला सबसे उल्लेखनीय है, बल्कि बार्गो और विप्लवनाम में भाड़े के सैनिकों की तरह, वाटरगेट के प्लॉटों की तरह, और बिना

की दीना (DINA) तथा ऐसी ही अन्य गुप्त सेवाओं के, जो सभी कभी न कभी सी० आई० ए० द्वारा काममें की गयी थी और उसकी कठपुतलिया है, भाई के हत्यारों की तरह काम किया है।

"लेकिन सी० आई० ए० और एफ० बी० आई० (फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वैस्टीगेशन - सशोध अन्वेषण कार्यालय) तक को यह अनुभव हो गया है कि उन्होंने एक फ्रैक्साइन दानव" को पैदा किया है। विदेशों में आतंकवाद की निंदा करने में तनिक भी कोताही न करनेवाली अमरीकी सरकार दुनिया के एक सबसे दृष्ट आतंकवादी संगठन को आश्रय दे रही है। ये लोग सतरनाक, पेरोवर मुजरिम, किराये के हत्यारे और मादकद्रव्य विप्रेता हैं। वे न सिर्फ क्यूबा के लिए ही जो वास्तव में पूर्णतः सुरक्षित है, बल्कि समुक्त राज्य अमरीका में क्यूबाई समुदाय की भारी बहुसंख्या के लिए भी, जो उनसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहते और उन अमरीकी तथा विदेशी नागरिकों के लिए भी सतरनाक है, जिनका क्यूबा के साथ कारबार हो सकता है।

"साठ के दशक के आरम्भ से इन आतंकवादियों ने एजेसी की छत्रछाया में अपने विस्फोटक पदार्थों के उपयोग में, ध्वंस और बम-निर्माण में और एजेसी के

\* फ्रैक्साइन - अमेरिकी सेना के १८१० में तैयार एक उपवास का नामक, जिनके बिज के आकार पर परिवर्तन के बहुत सी दृशत फिल्में बनी हैं। भ्रामासुर की ही भाँति फ्रैक्साइन

मर्यादा भंग करने वाली गति के जड़ित अनाहृत और  
 जड़ता की बनावटों में मराणात पायी। उन्होंने वाशिंगटन,  
 अरेंडोना इटली और अन्य राजनयिकों की हत्या  
 की है। उन्होंने बार्बेदोस में एक क्यूबार्ड पार्टी विभाग की  
 आगामी में ध्वस्त किया है, जिस पर मर्यादा सभी तौर  
 पर गये थे।

“और ज्ञान के महीनों में उन्होंने क्यूबा के मर  
 जितनी भी तरह के मार्ग के विरुद्ध मोघा हत्या बने  
 दिया है। उन्होंने न्यूयॉर्क में क्यूबार्ड मरुक्त राष्ट्र विभाग  
 और वाशिंगटन में क्यूबार्ड दिन विभाग पर बम फेंके  
 हैं, उन्होंने इसी कारण यात्रा एजेंसियों पर बम फेंके  
 हैं; उन्होंने क्यूबा के बारे में सहानुभूतिपूर्ण कथनों के  
 लिए अमबारो पर बम फेंके हैं, उन्होंने क्यूबा के  
 दवाइयों के भेजे जाने का विरोध करने के लिए  
 न्यूजसी में एक औपचारिक तक पर बम फेंके हैं।”

पत्रिका आगे लिखती है, “उनकी अकेली गनी  
 यह धृष्टतापूर्ण विश्वास था कि वे वाशिंगटन तक  
 में, जो परंपरा से राजनयिकों के लिए एक निरापद  
 आश्रयस्थल रहा है, बेसीफ हत्याएं कर सकते हैं।  
 सितंबर, १९७६ में ओरलादो सेतेलियेर और उनके  
 सहायक रोनी मोकित की वाशिंगटन के केंद्र में हत्या  
 में न्याय मंत्रालय को इस जालमूत्र के खिलाफ उरा  
 सक्षम कार्रवाई करने को विवश कर दिया। क्यूबार्ड  
 आतंकवादियों ने दिखला दिया था कि अमरीकी सरकार  
 का अपने द्वारा ही सर्जित दानव पर अब कोई नियंत्रण  
 नहीं था। चार छूटभेये पकड़े गये और दंड के प्राप्ति





हवाई मोर्चे को खसकी थी। तुमने कहा, 'इन आन्दोलन विरोधियों को जल में नदी मारने या रेंगे को कपड़ा बनाने इस वगैरह उनकी दिवंगी को दुःख का देत।

स्वातंत्र्य आन्दोलनात्मक गणराज्य - जैक स्ट्राइन ने म्यूचुअल राइट्स मैगजीन में ज्ञापन ही में उद्घाटित एवं लेख में इन आन्दोलनकारियों का, विशेषकर उनकी म्यूचुअली में रहनेवालों का, मुख्य विशेषण किया है। युनियन मिटो, म्यूचुअली, में एक तत्वों में क्यूबार्ड राष्ट्रवादी आंदोलन का मार्गदर्शक मुख्यालय स्थित है। गैम्बेर्गो मोर्चे मागोंस इमी दल का सदस्य था। उन्होंने १९६४ में क्रीम, म्यूचुअल, में ईस्ट नदी के पार मयुक्ता राष्ट्र मय भवन की एक चिट्ठी पर बहुरा से मोना पेरा था, जब कहा थे गेवारा मौजूद थे। इस मगडन के सदस्यों को बड़े मादकद्रव्य व्यापार के साथ और पिछले कुछ वर्षों के दौरान लगभग सभी अनमूल्यभी क्यूबार्ड आन्दोलनादी कार्यवाहियों के साथ जोड़ा गया है। यद्यपि इन कार्यवाहियों में से अधिकांश को दो दलों, 'ओमेगा-७' और 'कमांडो-७' ने अपनी कार्यवाहियां बताया है, फिर भी अधिकारियों को पक्का विश्वास है कि ये दोनों ही क्यूबार्ड राष्ट्रवादी आंदोलन के महज दूसरे नाम हैं। वस्तुतः 'कावर्ट एक्शन' में स्ट्राइन ने इसके पर्याप्त दस्तावेजी सबूत पेश किये हैं और इस सिलसिले में सघीय तथा स्थानीय अधिकारियों को भी उद्धृत किया है, जो उनसे सहमत हैं।

"यह सारी सूचना उपलब्ध होने पर भी अधि-



‘कॉवर्ट एक्शन इन्फॉर्मेशन बुलेटिन’ ने ज्ञान बताया, “अमरीकी अधिकारी कोई दृढ़ कदम उठाने का इरादा नहीं रखते—क्यूबाई प्रतिक्रियाकारियों की बड़ी पूछ है और यदि राष्ट्रपति तथा विदेश मंत्री के वक्तव्यों को ध्यान में रखा जाये, तो अमरीकी प्रशासन ने क्यूबा के संदर्भ में एकदम शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया हुआ है। सैंगली के लोग, जिन्होंने क्यूबा के विरुद्ध आतंकवादी कार्यों की योजना बनायी है, भविष्य में काफी व्यस्त दिनों की अपेक्षा कर सकते हैं।... विना में अमरीकी राष्ट्रपतियों ने फीदेल कास्त्रो की हत्या के प्रयासों में किसी भी तरह से अमरीकी सरकार का हाथ होने से साफ इन्कार किया था, यद्यपि उन्हें, निस्संदेह, बहुत कुछ मालूम था। वर्तमान प्रशासन अपने खुले तौर पर आश्रामक क्यूबाविरोधी वक्तव्यों पर गर्व करता प्रतीत होता है। ”\*

पहले यह सब ऐसा लगा करता था। (हम यह उद्धरण ‘न्यूयॉर्क टाइम्स’ से दे रहे हैं) :

“सीनेटर फ्रैंक चर्च ने आज बतलाया कि सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी ने तीन राष्ट्रपतियों के प्रशासनो में प्रधान मंत्री फीदेल कास्त्रो की हत्या करने के वास्तविक प्रयास किये थे।

“सीनेट की गुप्तचर्या विषयक प्रवर समिति के अध्यक्ष ने कहा कि समिति के समक्ष ... हवाईट की”



नेताओं की हत्या के प्रयामों के बारे में सूझ बूझ का एक स्पष्ट प्रकाशित हुआ था। हम उसे यहाँ कुछ स्रोतों से दे रहे हैं।

“अमरीकी सेंनेट की प्रवर समिति के अनुसार क्यूबाई गार्नि के नेताओं की हत्या करने की कई कोशिशें की गयी हैं। लेकिन हमारे पास फ़ाँदेन के विस्तृत कम से कम २० हत्या प्रयामों का, और उनके मैक्स इटैलीवेम एजेन्सी द्वारा निर्देशित किये जाने वाले सजाया दिये जाने और सज्जन के तहत



मोरचा नामक प्रतिभातिकारी संगठन के एक एजेंट का क्यूबा में चोरी से आगमन हुआ, जो अपने साथ प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या करने के सी० आई० ए० के आदेश को लेकर आया था।

यह आदेश हुआन बसीगालुपी होर्नेदो, हिगिनीओ मेनेदेस बेलवान, गीलेमों कोऊला फेरर तथा अन्यो द्वारा कार्यरूप में परिणत किया जाना था।

उन्होंने कल्जादा-दे-राचो-बोयेरोस और साता-कतलीना सड़को के चौराहे पर हत्या करने की योजना बनायी। इस काम में इस चौराहे पर स्थित एक मोटरकार धुलाईखाने के मालिक को उनकी सहायता करनी थी। इसके लिए कई कारे, एक छोटा ट्रक, दो बश्चाएं, फ़ैगमेटशन बम\*, मशीनगने और दूसरे हथियार मीके पर पहुंचा दिये गये, इनमें से ज्यादातर धुलाईखाने के पास ही जमीन के एक गाली ढुकड़े में छिपाकर रक्खे गये थे।

पकड़े जाने पर गीलेमों कोऊला और हिगिनीओ मेनेदेस ने कबूल किया कि षड्यंत्र को सी० आई० ए० द्वारा निदेशित किया जा रहा था। षड्यंत्रकारी मी० आई० ए० अधिकारियों के साथ संपर्क रखते थे, जो उन्हें गुआनतानेमो स्थित अमरीकी नौमैनिक अड्डे और क्यूबा में एक पूंजीवादी देश के दूतावास के जरिए निर्देश और साज-सामान पहुंचाते थे।

४. जुलाई, १९६१ के उत्तरार्ध में तीस नवंबर,

\* कटने पर छोटे-छोटे ढुकड़ों में बंट जानेवाला बम। - सी०





५. कोचीनोस की यात्री की मुहिमबाजी की विफलता के बाद सी० आई० ए० ने हमारे देश के विरुद्ध अपनी प्वमात्मक कार्रवाइयों को बढ़ाया और तेज किया और विघरे हुए प्रतियानिकारी समूहों का प्रतिरोध मध्य नामक समूह के हर्द-गिर्द पुनर्देश करना शुरू किया।



अधिकारियों ने इन योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए पड़्यत्रकारियों को बड़ी मात्रा में सैनिक साड़-नाखत और गोला-बारूद मुहैया किया।

अंड्रे में मौजूद अमरीकी अधिकारियों ने कई हथियार भेजे जाने में सक्रिय भाग लिया था, जो पड़्यत्रकारियों की गिरफ्तारी के समय उनसे बरताने किये गये।

६. अक्तूबर, १९६१ में एस्केडे का दूसरा मोरचा और जातिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन नामक प्रति-जातिकारी संगठनों ने सी० आई० ए० के निदेशन में क्यूबाई राजधानी में अतर्ध्वस करने की एक नया योजना बनायी, जो जानबूझकर नगरवासियों में नाराजी पैदा करने की ओर लक्षित थी, जिनका राष्ट्रपति ओस्वाल्दो दोर्तीकोस की समाजवादी देशों की यात्रा से वापसी के अवसर पर उनका स्वागत करने के लिए बड़ी मख्या में एकत्र होना अवश्यभावी था।

प्रतिजातिकारियों की योजना भूतपूर्व राष्ट्रपति ग्रामाद के सामने स्वागत मञ्चा के दौरान फोर्सेल शास्त्री तथा जातिकारी सरकार के दूसरे नेताओं पर बर्ताना था। इस योजना को पूरा करने का दायित्व सी० आई० ए० एजेंट अंतोनीओ वेसीआना (विक्टर) पर था।

यह योजना ४ दिसंबर को कार्यान्वयन की जानी थी। इसके पहले २६ गिनबर को मोस्कोड की कई कार्रवाइया की जानी थी, मगर यह माझि



७ १९९२ के आरम्भ में सी० आर्च० ए० ने गुआनगानेमो नीमैनिक अट्टे में निर्देश करके प्रतिष्ठानों को नई नृत्तम गुणों काव्यों में तयारविन करिष्ये इकाई मय की स्थापना करने के उद्देश्य में कुछ प्रतिष्ठापिकाओं दलों और मण्डलों का पुनर्गठन काम शुरू किया।

गुणों काव्यों कार्य-योजनाओं को तैयार करने और हथियार तथा गाइ-मामान प्राप्त करने के बच्चे नीमैनिक अट्टे में कायम रखे गये मण्डलों के बारे में सूचिन करने के लिए उबेनों योग्य देना, राऊन के हेनरिम, राऊन बीच हिम्पन तथा और लोगों से निना

सी० आर्च० ए० क्यूबाई जाति के नेता को हत्या करने और गुआनगानेमो नीमैनिक अट्टे पर हमले के लिए भडकावा देने की अपनी योजनाओं में विरत रहें हुई। उसके आदेशों पर चलते हुए कुएँवों कात्वो ने तीन अन्य सगठनों से संपर्क स्थापित किया और तथाकथित जेड योजना को तैयार करना शुरू किया।

योजना यह थी कि क्यूबाई जाति के नेताओं में से एक की हत्या कर दी जाये और उसके बाद सारे ही नेताओं की, जो स्वाभाविकतया भूतक की कतों कब्रिस्तान की तरफ शवयात्रा में शामिल होते, एक साथ हत्या कर दी जाये।

हत्या प्रयास के पहले लक्ष्य के रूप में विदेश मंत्री



कपानीओनी उसमे घुड़ता है कि कदा कब है कि  
फोड़ने चाम्पो होकर ये भगवान् भ्राता करने है। ई  
कहता है कि उसके पास चारि के देना की हस्त करने  
की ' कोई बहिया भीत्र " है।

मन्त्रव्य ? " दूसरा प्रतिवाचिनी पुनः ।  
यह भीत्र है नागरि निगमने चैतन्यव्युत्पत्ति। "

और भगवन् के भगवन् न को, तो ? "

" दूसरा मन्त्रव्य ही नहीं उठता ' कपानीओनी  
कहता है ' मृगे ये अमरीत्यो ने दिये है। "

और कदा काल ये चैतन्यव्युत्पत्ति देने की सेवा  
ही करता है नागरि यह भगवन् निगमने  
करे ।





इसके अलावा सामाजिको सड़क पर स्थित एक  
कच्चे धातु पर भी हमारा किया जाता था और देश  
पर से लोह-खोद की कई कारखानों की जानी थी।

इस मामले की गंभीरता और हिरामान के लिए  
हरे मोरों से गुप्त-नाश से यह गिद्ध हुआ कि इन घोरत  
के हरे, आर्द्ध-ए. का अनुमोदन प्रत्यक्ष था और वह  
उत्तर सामाजिक विज्ञान और सुशान्तामेषो सीमित  
होने की कमान की जानकारी में गैर-वर्गी की गरी थी।

इस मामले में विस्तार विधे जानकारी के सत्य  
प्रमाण के लुप्त वर्षोंद रोड्रीगस सहायक - राष्ट्रीय  
संशोधन, कार्यकारी गुणवर्धनवा आशोधन सीधे  
...केले मोरना - राष्ट्रीय सहायक मोरीकीली



इस प्रयास में रेने मिगल्लर साचेस एबीग्रान, हेमूस माताने दे ओका कूज, ओस्कर सिबीला सोरीअ और एलीसर रोद्रीगेस स्वारेस के नेतृत्व में चार गुप्तों को भाग लेना था। इब्रहीम माचीन हेनदिस इन सभी गुप्तों का नेता था।

गिरफ्तारी के समय इन लोगों से बहुत बड़ी मात्रा में सी० आई० ए० द्वारा मुहैया किये गये हथियार और गोला-बारूद बरामद किये गये।

१२. सितंबर, १९६३ में राजकीय सुरक्षा विभाग को पता चला कि आतंककारी एकता के आंतरिक मोर्चे और "तीन ए" संगठनों के सदस्यों ने आतिरक्षा समितियों की स्थापना जयंती समारोह तथा बैं मच को विस्फोट द्वारा उड़ा देने की योजना बनायी है। इस कार्य के लिए ६० पाउंड प्लास्टिक विस्फोटकों (सी-४) का प्रयोग किया जाना था।

सुरक्षा विभाग के अधिकारियों ने पड़्यनकारियों को तुरंत गिरफ्तार करने का आदेश दिया। ओर्नादो मार्तीनीआनो दे ला कूज साचेस, हुआन इसराएल कसान्यास लेओन, हेमूस प्लासिदो रोद्रीगेस मोस्वेरा, लुईस बेल्वान आरेनसीबीआ पेरेस, फ्रांसीस्को अनातो दे लास कुएतोम, इजीनियर फेदेरीको हेनदिस गजानेम तथा अन्य प्रतिआतंककारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इन लोगों का हमारे देश में निवास करनेवाले फ्रांसीसी नागरिक, सी० आई० ए० एजेंट पियरे आर्वेन दीएम दे ऊरे से संपर्क था, जिन्होंने कबूल किया कि



पर सैन्यी के नये कार्यभारों की पूर्ति करने के लिए आगम में वित्तयीकरण हो गया। ये मगएन सी० आई० ए० के लिए आर्थिक और सैनिक मूचनाएं एकत्रित करते थे।

सी० आई० ए० के निदेशानुसार नेमैनीओ कूबील्यास पेरेस, एन्हेन मीग्वेल आरेनमीबीआ विदास, रोलादो गाल्दोस रासोला, अल्फोंसो तोर्केमादा तेंदो, मरिनो बैलाक वाल्देस तथा अन्य प्रतिशक्तिकारियों ने फीदेल कास्त्रो की हत्या करने की तैयारियां करना शुरू किया।

यह प्रयास ११ वीं सड़क पर किया जाना था, जहां राष्ट्रपति के सचिवालय की प्रधान और मन्त्रिपरिषद् की सचिव सेलीआ साचेस का निवास था।

पकड़े जाने पर इन लोगों ने पूरी तरह से इकठ्ठा कर लिया और सी० आई० ए० के साथ अपने सपनों को स्वीकार किया।

१५. जनवरी, १९६५ के आरंभ में हूलीओ ओमार ब्रूज सेसीलीस, फेमोन गज्जालेस कार्बान्नो और हिराल्दो रेनाल्दो दीएगो सोलानो नामक प्रतिशक्तिकारियों ने, जो राष्ट्रीय मुक्ति सेना के सदस्य थे, सांतीआगो दे लास वेगास में फीदेल कास्त्रो की हत्या की एक और योजना को अंतिम रूप देना शुरू किया।

कुछ समय बाद उन्होंने पुरानी योजना को त्याग दिया और एक नयी योजना तैयार की, जिसे ११ जनवरी को, सांतीनो-अमेरीकानो स्टेडियम में बेसबॉल



बराबद हुए। एक टॉमसन सबमशीनगन, एक ३८ पिस्तौल, एक ६ मि० मी० स्टार पिस्तौल, एक दूरदर्शी लक्ष्यदर्शीयुक्त रेमिंग्टन राइफल और कारतूटों और सगठन के कागजों से भरे तेरह बक्से।

१७. राजकीय सुरक्षा अभिकरण १९६२ से राष्ट्रीय पुलिस के भूतपूर्व प्रधान और रामोन घाऊ सान मार्टीन की सरकार के समय दायुतापूर्ण गतिविधि कार्यों के प्रमुख मारीओ सलाबारीआ अगिलार पर नजर रखे हुए था।

मई, १९६५ में पता चला कि सलाबारीआ ने एक टेलीफोन कंपनी से एक ट्रक खरीदने की कोशिश की है और वह उसके लिए १०-१२ हजार पेसो देने को तैयार था।

उसकी योजना यह थी कि ट्रक पर ३० या ४० मि० मी० व्यास की मशीनगन लगा दी जाये और पहना मौका मिलते ही उसमें प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या कर दी जाये।

मारीओ सलाबारीआ सी० आई० ए० में उसमें एग्जेट डॉक्टर बर्नार्दो मीगानेस सोपेस के जरिए, जो एक आतंकवादी गुट का प्रधान था, संपर्क रखा था। जब डॉक्टर सोपेस मरे गया, तो सलाबारीआ ने उसमें अपने भाई हुनीओ ने, जो मीयामी में रहता था, संपर्क करने का अनुरोध किया, ताकि वह ( ) मारुतो बरोना से बात करे और फीदेल के लिए आर्थिक सहायता मांगे।





जब यह योजना विफल हो गयी, तो सी० आई० ए० ने फीदेल कास्त्रो की हत्या के एक और प्रयत्न के लिए प्रतिक्रांतिकारी टोनी बरोना को जहर के कैपसूलों का एक और पैकट दिया।

पोलीता को सी० आई० ए० से इसी प्रयोजन के लिए इसके अलावा विशेष कारतूसों सहित सायबेनरदुल विभिन्न हथियार भी प्राप्त हुए थे। ये हथियार उन्हें तब बरामद हुए, जब वह जून, १९६५ में पकड़ी गयी।

राजकीय सुरक्षा अभिकरणों ने इन योजनाओं का समय रहते ही परदाफाश कर दिया और पड़्यपक्रांतियों को गिरफ्तार कर लिया।

१६. सी० आई० ए० के निर्देशन में कमांडोन-एक और तीस नवंबर आंदोलन नामक प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को, जिनके संयुक्त राज्य अमरीका में अपने प्रतिनिधि थे, विशेष संश्लेष जहाज तैयार करने का काम दिया गया, ताकि उनकी सहायता से १९६५ के मध्य में क्यूबा में घुसपैठ करके ध्वसात्मक कार्रवाइयों की जा सके।

लेकिन बाद में योजना को बदल दिया गया और ध्वसात्मक कार्रवाइयों के लिए लोगों की घुसपैठ कराने के बजाय जहाजों से देश के राष्ट्रपति साधी ओम्बायो दोर्तीबोम के निवास, छात्रों के मीरामार मठों और रिबीएरा होटल पर गोलाबारी करने का निर्णय किया गया। इस अपराधिक कार्य को मगन्न करने के



हत्या की इस योजना की तैयारी में मैड्रिड के क्यूबाई दूतावास के कर्मचारी होसे लूईस पकते गत्यारेता और आल्वेर्तो ( "एल लोको" ) नाम के भी शामिल थे।

आर्तीमे ने कूबेला से अपनी मुलाकात में जे. प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या के बाद अगले घंटे के भीतर शुरू होनेवाले आक्रमण के लिए उद्धार हथियार और लोग मुहैया करने की गारंटी दी।

हवाना लौटने के पहले गब्बालेस गत्यारेता ने कूबेला को दूरबीनी लक्ष्यदर्शी और सायनेमरनुस रायफल दी, जो उसके पकड़े जाने के समय बंद और हथियारों और गोलाबारूद के साथ उससे बरामद हुई।

गत्यारेता और आल्वेर्तो क्लाको को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

२१- १७ मार्च, १९६७ को क्यूबाई सीमांत प्रहरियों ने फेलिक्स अस्मेन्मीओ जेम्पो, विल्फ्रेदो मानानि दीआस और गुस्तावो अरेमेस अल्वारेस नामक प्रतिक्रान्तिकारियों को घर दबोचा, जिन्होंने मद्रास राज्य अमरीका में आकर कायो-पागोमी के इन्चार्ज के चोरी में घुमने की कोशिश की थी।

उनका मुख्य कार्यभार क्यूबा के प्रधान मंत्री की हत्या करना और प्वास्टिच विस्फोटकों का उपयोग करके बाकायदा तोंटकोड अभियान छेड़ना था।

इन सभी कार्यों का उद्देश्य विदेशों में यह छाप देना करना था कि देश में उबरदमन व्यवस्थाविवर्धन













देहान्तों के 'प्रशमन' की नीति का ही निर्वर्तन था। यह 'प्रशमन' प्राणीय निरीक्षण दल नामक दलों द्वारा किया जाता था, जिनमें अनियमित दक्ष विषयनामी गैरिक काम करने थे, जो आवाद राजों पर ताज्जीरी हमले किया करते थे। इन दलों (अदक, अधिक सटीक शब्दों में बहे, तो मजस्र चरम दक्षिण पथी गिरोहों) की सहायता के लिए ४४ प्राणीय अफ पडताल केन्द्र (प्रत्येक प्रात में एक) थे, जिनके ईर्ष्या चारी अपने सद्विद्य देशवासियों को व्यवस्थित तरीके से यत्रणाए देने थे।

“लेकिन कुछ लोग इन उपायों को बर्दाश्त हो कारगर समझते थे। इसलिए कोल्बी ने नेतृत्व और रणनीतिक योजना के पहलुओं पर सावधानीपूर्वक सोच विचार करने के बाद फीनिक्स कार्यक्रम तैयार किया। कार्यक्रम में दक्षिण वियतनामी पुलिस और पुस्तक सेवाओं और इसी प्रकार दक्षिण वियतनामी और अमरीकी सैन्य दलों की भी शिरकत सन्निहित थी। १९७१ में सीनेट समिति के सामने साक्ष्य देते हुए कोल्बी ने स्वीकार किया कि फीनिक्स कार्यक्रम के क्रियान्वयन के दौरान २०,५८७ 'सद्विद्य व्यक्ति' मारे गये थे। साइगोन सरकार यह सख्या ४०,६६४ बतलाती थी। वास्तविक सख्या चाहे कुछ भी हो, तथ्य फिर भी यही रहता है—२०,००० का मारा जाना—यह हर सूरत में जनसहार ही है। साथ ही अमरीकी सशस्त्र सेनाओं और उनके दक्षिण वियतनामी सहयोगियों द्वारा नागरिक आवादी के विच्छेद नेपाम, श्वेत फॉस्फोरम,



यह प्रश्न सैनिक गुप्तचर सेवा के एक सचिव \* पूछा गया था, जो युद्धबंदियों से पूछ-ताछ करने के लिए इकाई में सचिव था। इस सचिव ने हस्ताक्षर विपक्षनामियों को यत्रणा देने और उनकी हत्याओं के हिस्सा लिया था।

कम से कम १८ लोगों ने इस सैनिक गुप्तचर इकाई से संबंधित जाच के दौरान गवाही दी। उन सभी ने स्वीकार किया कि उन्होंने नागरिकों और

---

\* रणक्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाला फौजी टेलीफोन। - ४०

\*\* *Counterspy*, Vol 3, No. 2, 1976, p. 61.



इस वापस-पुर्त में इस मै० गु० दम्पे के दो बच्चे  
 आगम थे - कप्तान नार्मन और कप्तान राबर्ट। कप्तान  
 नार्मन को मै० गु० दम्पे को यह आदेश देने का  
 मया है कि "कैदियों से मृच्छना पाने के लिए जो भी  
 मन में आये करो, क्योंकि यह रणक्षेत्र में जीने  
 के लिए महत्वपूर्ण है। मरने कोई निगान बन छोड़ो।"  
 कई मै० गु० सदस्यों ने इसकी गवाही दी कि उन्होंने  
 स्वयं नार्मन को कैदियों को मरणा देने देखा है। कप्तान  
 नार्मन मै० गु० दम्पे का अचेल सदस्य था, जिसे  
 गवाही देने से इन्कार किया। कप्तान राबर्ट ने... "उसकी  
 स्वीकार किया कि उसने विषतनामी कैदियों के साथ  
 दुर्व्यवहार करने में भाग लिया था" ... और कहा  
 उसने विषतनामियों के विरुद्ध पूछ-ताछ के बगैर  
 १ का उपयोग करने की अनुमति दी थी।



क्या था। वे विनाश भवन थे, जिन्हें सी० आई० ए० ने गूँथ-गूँथ कर्माँ, हवापानी अमरीकी और विमानों के कार्यवाहियों के कार्यालयों, आदि के साथ ज़्यादा ही में बनाया था। भेदबारी में गिनाय कुछ शब्दों के, जो बात करनेवाले सी० आई० ए० कर्मों की पक्षों को प्रकट करने हैं, कुछ भी नहीं बदला गया है।

“सी० आई० ए० कर्मों: मैंने खुद नैतिकता के अर्थों में कभी नहीं सोचा। मुझे आदेश मिलना कि यह किया जाना है, और मेरे काम का आचरण तो सदियों की मिट्टि में होना था। तो मैं उसे बरबाद ही रहता। लेकिन अगर किसीने किसीको जान से मारने का कार्यभार मेरे सामने रखा होना, तो बेजक





होने थे, क्योंकि इन लोगों के माथ बाग यह है कि उनकी मानमिक्ता हमारे मानमिक्ता में भिन्न है। वे लोग विमनुष्य बहणी है। वे इन प्रातीय पूछ-ताछ केंद्रों का, जो हमारे क्षेत्राधिकार और नियंत्रण में थे, गाने वियतनाम में दिडोरा पीटा करते थे... वेग आधा वक्त एक प्रातीय पूछ-ताछ केंद्र से दूसरे में जाने में लगता था, और, कमम मगवान की, यह सारा काम बेदाडा, भफाई में और सनीके में करवाता था। एक बार किसी प्रात में कुछ वियतनामियों का पीट-पीटकर मलीदा बना दिया गया। इसके लिए कभी कोई मजूरी या आज्ञा नहीं दी गयी थी। हम दुनिया भर का तूफान खड़ा कर देते, पर सब बेमूढ था, पत्थर की दीवार से बात करने जैसा था।

“इन लोगों ( वियतनामियों ) की मानमिक्ता ही यह है कि बस डडे और जबरदस्ती से सब ठीक हो जाता है। इसके अलावा वे आपस में एक-दूसरे से नफरत करते हैं और, ज्यों ही मौका मिलता है, पीट-पीटकर एक-दूसरे का मलीदा बना डालते हैं। सी० आई० ए० को बहुत अधिक दोष का भागी बनना पड़ा। मगर हम पर अकेली जवाबदेही इस बात की है कि हमने इन केंद्रों को स्थापित किया। बेशक, प्रातीय पूछ-ताछ केंद्रों को, जिन्हें विशेष शाखा पुलिसवाले चलाते थे, पैसा और परामर्श देना हमारे कार्यात्मक क्षेत्राधिकार में था। विशेष शाखा पर भी हमारा कुछ नियंत्रण था, क्योंकि हम उसे आयता और पैसा देते थे। मगर जहां तक यकणा



इसकी व्याख्या है वह उस हिस्से का आदमी है जिसे अधिकार और प्रभाव की जगहों में उनका दिया जाना चाहिए। वह उस हिस्से का आदमी है, जो किसी भी मीनट ममिनि के मामले में बोलेंगे। फिर भी वह चाहे ऐसा आदमी है, जो अपने बच्चों को प्यार करना है, जो अपने नौकरों को करने में सहायता है। आप उसमें बावचन करें तो आपको वह मामला मोहक भी लगेगा। हमारे देश में, वह कोई मस्तिष्कहीन स्वभावित वह नहीं जीना-जागना इन्सान है। लेकिन वह सी० आई० ए० के लिए अपने काम को व्यक्तिगत नैतिकता के लिए भी अहमाम में पूर्णतः अनग्न रखना है।

“वह समय आ गया है कि हम सब इन नए के कामों के लिए, जो दुनिया भर में हमारे नाम में किये जा रहे हैं, अपने को भी उत्तरदायी मानें। हम अपने रेडियो की आवाज को चाहे कितना ही ऊँचा क्यों न कर दें, आविरकार हमें लोगों की चीखों को सुनना ही पड़ेगा। समय आ गया है कि सी० आई० ए० के गुप्त कार्यों का अंत किया जाये और संयुक्त राज्य अमरीका को अंतर्राष्ट्रीय कानून और शांतिता का काम से कम न्यूनतम मानदंड तो मानने को विवश किया जाये।

“संयुक्त राज्य अमरीका इस तरह की कार्यवाहियों से ही जल्दी अलग हो जाये, उतना ही बेहतर



देखने में भी वह बर्लिन, अध्यापक, पाठगो, ईसा  
 हाफ्टर ही लगते हैं। यानी मिला उनके और सब कुछ  
 जो वह अगल में है - देश के प्रधान जामून, र  
 तक सी० आई० ए० के गुन अथवा 'अर्थ र्त्त  
 निदेशानय के उपनिदेशक ।

"मैनिक अपमर एमरिज कोन्वी की एन  
 सतान विनियम कोन्वी के जामूमी बैरिज क  
 सबसे विवादास्पद अथ उनकी विनयनामी प्रशमन कर्  
 नम में महभागिता में सबद्ध है। . इस कार्यक  
 एक हिस्सा वह मन्त्रिया है, जिसे फीनिक्स का बूटल  
 दिया गया था. , जिसमें विनयनामियों को पश  
 जाना, कैद में रखा जाना, स्वपञ्चत्याग और मा  
 जाना शामिल था।

"बटूर रोमन कैथोलिक, ४२,००० डॉलर  
 सालाना पानेवाले पश्चिमी सरकारी कर्मचारी, इतने  
 चार बच्चों के स्नेही और कर्तव्यपरायण पिता  
 वकील की हैसियत से वह नागरिक जीवन में अपने  
 तीन गुना अधिक कमा सकते थे, जितना सरकारी  
 नौकरी में पाते हैं। 'मगर', वह कहते हैं, 'इसने  
 मुझे वह सतोष न मिल पाता, जो यह काम मुझे  
 देता है।" •

कोल्बी को जो काम "सतोष" देता था, वह  
 किस तरह का था, इसकी भूलक 'सी० आई० ए  
 फाइल' नामक पुस्तक में उद्धृत सीनट समिति की  
 १) के विवरणों से पायी जा सकती है:



में स्थानीय गुरुशा मेनाओ का निर्माण, आत्मगुशा इत्यादि में उपयोग के लिए दक्षिण में बंगालों को गाय माय हथियारों का दिग्ड बनाना जो एक ऐसा कार्य है कि जिसे करने का महत्त्व मेरे ज्ञान में, कई सरकारें शायद ही बटोर सके।

“इसमें गावों और प्रांतों को विकसित करने के लिए प्रांतीय चुनावों का और उनके निर्वाचन अधिकारियों का सहायता मिलाने का कार्यक्रम भी शामिल था। इसमें स्वयंसेवक अधिकारियों को इत्यादि में आर्थिक विकास के लिए निर्णय लेने का अधिकार दिया। इस तरह के विभिन्न ही कार्यक्रम थे, जिनमें, प्रसंगत ऐसे एक-दो तथ्यों में अधिक व्ययतनामियों के प्रलोभन, अंगीकरण और पुनर्वासन का कार्यक्रम भी था। जो विपन्नता के साथ रहे थे और जिन्होंने सरकार के पक्ष में जाने का फैसला किया था और जिन्हें अंगीकृत किया गया था। उन्होंने जो कुछ भी किया था, उसके लिए दक्षिण नहीं किया गया। इस कार्यक्रम में लाखों सरपंचों का अंगीकरण और पुनर्वासन और सुरक्षा व्यवस्था के सुधारने के साथ उन्हें अतः गावों को लौटाना भी शामिल था। और इसमें फीनिक्स कार्यक्रम भी था, जिसे उस कम्युनिस्ट तंत्र के नेताओं का पता चाने की दृष्टि से तैयार किया गया था, जो दक्षिण विपन्न

\* शब्दसः विपन्नतापी कम्युनिस्ट। यह शब्द दक्षिण विपन्नता के लिए प्रयोग किया गया था।





हमी) . और दूसरे, इम्तिना कि जिदा कैदी कर  
प्रदान कर सकता है, जब कि मुग्दा लाग कुछ न  
नहीं दे सकती। " \*

जिदा कैदियों में गृहना किम तरह में उपयुक्त  
जानी थी, यह फीनिक्स कार्यक्रम के एक विशेष  
विक्टर मार्चेनी ने 'पेटहाउम' पत्रिका को एक अंश  
में बनाया है।

" प्रश्न: कोन्ची कैमे आदमी है?

" उत्तर: कोन्ची बहुत ही खतरनाक आदमी है।  
मेरे मयाल में उनकी मानसिकता हाइनरिख हिम्बर  
जैसी है. वह उस तरह के आदमी है कि जो कै.  
आई० ए० जैसी एजेसी नहीं, बल्कि यकणा निर्ण  
के संचालन के लिए ज्यादा अधिक उपयुक्त है।

" प्रश्न: वियतनाम में जवाबी आतंक कार्यक्रम उन्होंने  
ही ईजाद किया या न?

" उत्तर: हा, वे लोग दूसरे गांव में जाने और  
वियतकांगो - अथवा सदिग्ध वियतकांगो - का पता बनाने  
और उन्हें मार डालते अथवा पकड़ लाते, यकणा देने,  
उनसे पूछ-ताछ करते और उनके हमदर्दों के दिनों में  
दहशत बैठाते थे ..

" एजेसी से निकल आने के बाद मैंने वियतकांग  
से लौटकर आनेवाले लोगों से सुना कि हम ऐसी-  
ऐसी चीजे किया करते थे कि जैसे कैदी के कान में

\* *The CIA File*, Ed by Robert L. Borosage and  
John Marks, Grossman Publishers, New York, 1976  
pp. 188-190.

\*\* हिटररसाही जर्मनी में गेस्टापो प्रमुख। - सं०



रूप में कोई अपराध किया है। वे हमेशा इतने बच होते हैं कि औरों के जरिए काम करें। आम तौर पर काम जितना ही ज्यादा गंदा होता है, उमरे उ उ ही ज्यादा हाथों में बंटने की संभावना होती है। उन सैनिक सक्रियाओं में आपको आम तौर पर ऐसेवी सचमशीनगने लिये हवाई जहाजों से बूदकर निर नही दिखायी देंगे। आम तौर पर यह काम करनेवा हमेशा कोई भूतपूर्व मैरीन सैनिक, कोई मुहिमा या कोई भाडे का सिपाही ही होगा, जो किसी इत सक्रिया के बाद बचा रह गया था... इसलिये ह जैसी चीजों, इन बेहद गंदी चीजों के साथ बा है कि यह साबित करना लगभग असंभव है कि उन ऐसेवी ने किया है।

“प्रश्न: क्या विलियम कोल्बी फीनिक्स कार्डस के अंतर्गत हुई हत्याओं के लिए अपने नैतिक उत्तरदायित्व का अनुभव करेंगे ?

“उत्तर: नहीं, बेशक नहीं। फीनिक्स कार्डस के प्रति उनका दृष्टिकोण तत्काल बही होगा, जो मिमाल के लिए, उस जनरल का होगा, जो हर दि सी-५० बमबर्षकों को भेजकर गांव के बाद गांव को नेमनाबूद कर डालता है और सैकड़ों लोगों को दू के धाड़ उतार देता है। इस तरह का आदमी क नियम-धरम बगैर करनेगा। वह अपने बच्चों को भूट न खोलने या घोसा न देने की शिक्षा देगा। वहा भाव गुंटे, ‘आप कैसा काम करते कर गाने है?’ से कर करेंगा, ‘मे आदेशों का पालन कर रहा हूँ।’



द्वीप-समूह में हुआ, जहाँ उन्हें पचास के दशक के आग में फिलीपीन के रक्षा मंत्री एमोन मैगासैसै के सलाहकार की तरह भेजा गया था। अमेरिकी सरकार की दुर्निधियों के लाखों डॉलरों के बूते पर सैमडेल के काम में लग गये और जल्दी ही उन्होंने छात्रों से लड़ने के लिए एक छोटी सी, सुप्रशिक्षित सेना बना कर दी। इसके अलावा उन्होंने फिलीपीनी नार्की कार्य कार्यालय की भी स्थापना की, जिसका विद्रोहियों के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध के क्षेत्र में उपयोग करने का इरादा रखते थे। यह मनोवैज्ञानिक युद्ध कैसा था, इसके बारे में सैमडेल ने १९३९ स्टैनले कार्नोव नामक पत्रकार को स्वेच्छया बताया था।

"एक मनोवैज्ञानिक सन्ध्या में फिलीपीनी देश में अधविश्वासजन्य भय - अमुभाग नाम के पीछे पिनाच के भय - का उपयोग किया गया। उस वर्ष में एक मनोयुद्ध टुकड़ी आती और इस आशय में अफवाहें फैला देती कि जिन जगह कम्युनिस्टों का अड्डा है, वहाँ एक अमुभाग रहता है। अफवाहों के द्वारा समर्थकों में भूचल फैल जाने के बाद मनोयुद्ध टुकड़ी बागियों के लिए घात लगाकर बैठ गयी। जब टुकड़ी गन्ती दल उधर में गुजरता, तो घात के बैठे लोग उनसे गे आखिरी आदमी को दबोच लेते, उसकी मर्दन में दो छेद कर देते, जैसे कि जो



सम्पत्ति सबूत रहे थे। इन व्यक्तिगत सम्पत्ति  
 योजना — अर्थात् इन सम्पत्तिधरो को इन तरह से पता  
 कि प्रियमे के बँनेही को उपभोग — का समय दिखाना  
 है। अभी कुछ ही महीने पहले 'न्यूयॉर्क टाइम्स' ने  
 'पैसागत सम्पत्तिधरो' प्रकाशित की थी। इन सम्पत्तिधरो  
 के 'टाइम्स' में प्रकाशित रूप में, जिसे पैसागत से  
 ही आया बनाया जाना था, १९६३ की गरमियों के  
 उत्तरार्ध में, दीएम बहुओं के मारे जाने के ठीक पहले,  
 जो कुछ हुआ था, उसका एक विस्तृत और उपमा  
 हुआ विवरण था। इन सम्पत्तिधरो को ध्यान से पढ़ने  
 वाले किसी भी व्यक्ति को आसानी से पता चल जाता  
 कि सी० आई० ए० इस योजना से चनिष्ठ सबूत

\* ग्वालेरीजा भादोमिस, पूर्वोक्त रचना, पृ० ६३।





की कोई टिप्पणी या वर्गीकरण मक्या नहीं थी और उन्हें एक 'मूखनीय' व्यक्ति में हमारे 'मूखनीय' व्यक्ति को हाथ में पट्टाबाया जाना था... इन ज्ञानों में ऐंगी-ऐंगी बाने गुनकर कही गयी थी कि 'दीएम' से हम मर पाये' और 'दीएम परिवार से पीछे छुड़ाने का कोई रास्ता निचाला जाना चाहिये'।

“इन ज्ञानों के परिणामस्वरूप वाशिंगटन में सी० आई० ए० कार्यालय में इस दृष्टि से माइयोन से जहरी पूछ-ताछों का मिलमिना चला कि दीएम के विरोध का जायजा लिया जाये, यह जाना जाये कि उसकी शक्ति कितनी है और सम्भाव्य नेताओं में से कोई बेहतर रहेगा या नहीं।

“सी० आई० ए० में, जिसने दीएम को सत्ताहा किया था और एक दशक से ज्यादा तक दीएम के लिए 'देश के पिता' की छवि बनाने की कोशिश की थी, इसके बारे में जबरदस्त मतभेद था कि उनके साथ क्या किया जाये। एक पक्ष उन्हें बनाये रखना और उनकी भागों को समर्थन देना चाहता था। दूसरा पक्ष इसके लिए तैयार था कि उनसे पीछा छुड़ाया जाये और किसी और के साथ फिर गुह्रजाल की जाये। निकटवर्तियों को यह लगता था कि जनरल दुओग वान मोन्ड दीएम परिवार के बाद सबसे अच्छा विकल्प रहेगा। और लोग अपेक्षाकृत शांत और सम्भव अधिक विश्वसनीय जनरल म्गूएन स्यान्ड के पक्ष में थे। वाशिंगटन में इन दो जनरलों को तरजीह दी जाती थी। साइगोन में भी कई लोग उनके पक्ष में थे। इस



सम्भाव्य नये नेताओं से अधिकाधिक घनिष्ठ संपर्क स्थापित करने का आदेश दिया।... इस स्थिति में दीएम के प्रवर रक्षा दल के विघटन को और भी त्वरित किया। फिर, हवाई अड्डे तक चले जाने के बाद, दीएम बंधु किन्हीं कारणों से, जिन्हें कभी स्पष्ट नहीं किया गया है, अचानक सौटकर अपनी कार में बैठ गये और महल की तरफ वापस खाना हो गये। उन्होंने खेल के नियमों को नहीं समझा होगा।-

“वे ऐसे महल में सौटकर आये, जो मुश्किल शहर की तरह खाली था। कुदरती तौर पर उनके रक्षा दल के सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए भाग गये थे। कुछ मिनटों के लिए दीएम बंधु अपने कक्षों में जाकर कुर्सियों पर बैठे। मगर आखिर उन्होंने महसूस कर लिया कि क्या होनेवाला है और एक भूमिगत सुरंग की तरफ चले। कुछ ही समय के भीतर वे दोनों मर चुके थे।” \*

वाशिंगटन ने अपने एक षड्युत्तले को इस तरह से राजनीतिक रंगमंच से अलग कर दिया। दीएम बंधुओं को बुहार फेंकने के बाद सी० आई० ए० ने ह्वाइट हाउस के सभी आदेशों का बिना चूँ-चापड लिये पालन करने को तैयार नये, अधिक उपयुक्त उम्मीदवारों को तलाश करना शुरू किया। सैन्डी के सर्वज्ञाना विदेशों को अभी यह नहीं मालूम था कि इसमें निर्णायक भूमिका निभानामी जनता का होगा, कि इस राष्ट्र को दुबलाने



अमरीकी सेनाओं के सदा-मदा के लिए हटाये गये की माग को लेकर आंदोलन छेड़ दिया। मार्च, १९४५ में नयी यार्क ससद में समाजवादी पार्टियों के समुदायों ने कई प्रस्ताव पेश किये, जिनमें कम्युनिस्ट पार्टी को वैधता प्रदान करने की और मुख्य उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने की अपील भी शामिल थी।

धीरे-धीरे चाइलैड में अधिकाधिक लोग अमरीकी राजनीतिक विस्तारवाद के लिए उत्तरदायी अमरीकी अधिकरणों के देश से निकाले जाने के आंदोलन में अधिकाधिक सक्रिय होते जा रहे थे। अनेक जनसंगठनों और विशेषकर छात्र संगठनों ने चाइलैड में अमरीकी शांति कोर की मौजूदगी का यह आरोप लगाते हुए विरोध किया कि उसके सदस्यों का नौ आई० ए० के साथ घनिष्ठ संबंध है... सामान्य जनवादी और अमरीकाविरोधी आंदोलन के विराट् रूप ने चाइलैड के दक्षिणपंथी हलकों को बेहद आगस्तित्व कर दिया। अक्टूबर, १९७६ में सेना में प्रतिनिधित्ववादी और बर्जुआजी के अमरीकासमर्थक अंगों की सहायता से दक्षिणपंथियों ने सरकार का गला उगट दिया और देश में सैनिक अधिनायकत्व स्थापित कर दिया।

१९७६ का साल, जब चाइलैड में प्रतिक्रियावादियों ने अपना हमला शुरू किया, देश के इतिहास में एक त्रासक मोड़ का चोकर है। चरम दक्षिणपंथी अंगों और संगठन प्रतिक्रिया के एक दसतम उपांग के रूप में आया। इसके सदस्यों ने प्रतिक्रियावादी



सक्रिया कमान ( जिसे बाद में आंतरिक सुरक्षा कर्तार कमान का नाम दिया गया ) की स्थापना की गई थी।\* इस कमान का मुख्य विभाग सक्रिया निदेशन था, जो सीयद केदपोल के अधीन था। यह निदेशन आंतरिक उपद्रव नियंत्रण विशेषज्ञों के एक छोटे दल से बना था। ये लोग कम्युनिस्टविरोधी परमाणु गुटों की स्थापना में सक्रिय थे। बाद सरकार में ही की प्रमुख हैमिपत उसके अमरीकियों और विशेष गी० आर्डी० ए० के साथ घनिष्ठ संबंधों की बनीं हो थी। उसका सर्क आदमी फिर ही मिल्वा था जो मार्टिन का विप्लवविरोधी मामलों का विशेष सहायक और उच्चस्तरीय गी० आर्डी० ए० अधिकारी था। विगत में वह विभिन्न देशों में गी० आर्डी० ए० केंद्रों का प्रमुख और विघननाम में अमरीकी राष्ट्रपति विप्लवविरोधी मामलों का महापक्ष रह चुका था।

१९६६-१९६८ में ही मिल्वा ने अनेक सामान्य संगठनों को घाम-गुश्ता बन् नामक एक संगठन में एकीकृत कर दिया था, जो बाद में सीयद की हस्त में आकर गी० आर्डी० ए० निधिओं में पैसा जाने लगा। इनके अन्तर्गत सीयद और ही मिल्वा ने रिक्तों के मित्रत्व की बाह मेंने के लिए राजनीतिज्ञों की टोन्टिया भी बनायीं। रिक्तनाम की ही आर्डी० ए० इस तरह की टोन्टिया गी० आर्डी० ए० के कर्तव्य

\* See George K. Tanham, *Trial in Thailand Case* & Co., Inc., New York 1974





आतंक-अभियान की गभीरता को घटाने की कोशिश करते हुए कहा, "हिंसा तो दोनों ही पक्षों की तरफ से हो रही थी। मुझे तो यह कभी भी स्पष्ट नहीं हो पाया कि कौन क्या कर रहा है।" \*

यह उल्लेखनीय है कि अमरीकी दूतावास के कुछ अधिकारी नवबल पार्टी और अरुण गौर में अपनी हमदर्दों को बिल्कुल भी नहीं छिपाने के लिए और उनका खुला समर्थन तक करते थे। दिसम्बर १९७५ में एक ऐसी ही घटना हुई। एक युवा कैप्टन से, जो अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधि का की सुप्त व्यक्ति विषयक प्रवर समिति की वैसा यात्रा के समय सुरक्षा अधिकारी की हैमियन में जा कर रहा था, जो ही अरुण गौरों के बारे में पूछा गया, तो उसने अप्रच्छन्न सतोष के साथ जवाब दिया कि अरुण गौर नेताओं ने उसे बताया है कि वे २० मार्च (अमरीकी सेनाओं की वापसी की अंतिम तिथि) के पहले-पहले १०० पाइ कम्युनिस्टों को हथकड़ियाँ दे देने का इरादा रखते हैं।

सत्ता-परिवर्तन के कुछ ही सप्ताह पहले के प्रमोद सरकार के एक उच्च अधिकारी ने एक निराले अनिधि को बताया कि नवबल और अरुण गौर, दोनों ही को सी० आई० ए० से पैदा किया गया है। यद्यपि उगने इगका कोई ध्योग नहीं कि यह पैसा किम तरह से दिया जाता है, पर अलग



## वाशिंगटन-रचित पट-कथा के अनुसार

सैग्ली के पेनेवर कालिल सातीनी अमरीका को ल' में अपना निशाना बनाये हुए है। सातीनी अपने राष्ट्रों के विरुद्ध अमरीकी गुप्तचर सेवाओं के उ' का कारण यह है कि अमरीकी एकाधिकारी की इस क्षेत्र में बहुत समय से विशेष दिलचस्पी है, जो उसके प्राकृतिक साधनों और जार्जिया निर्धन शोषण में अपार मुनाफे बढ़ोतरी भारी सातीनी अमरीका को अपने घर के गिछाते ही सम्भलते हुए अमरीकी द्वारा उसके मजदूर उत्पाद के २० प्रतिशत और उमकी निर्यात में उ' आय के लगभग ३० प्रतिशत को हथार देने सातीनी अमरीका में प्रत्यक्ष अमरीकी गुप्त नि

१९५५-५६



राज्य अमरीका के भूतपूर्व वित्त मंत्री - १९७०) ने  
 पिनीओसा को चिलीआई जनता के लिए 'उत्तम  
 स्वतंत्रता' लाने के वास्ते बढ़ाई दी। यह एक ऐसी  
 सामाजिक व्यवस्था को विशेषकर सुविधाजनक माना  
 है, जिसमें 'आर्थिक स्वतंत्रता' और राजनीतिक  
 आतंक एक-दूसरे को स्पर्श किये बिना सहजानिकता  
 है। . . तर्कानुसार तो यह आशा की जानी चाहिए  
 कि . . जो लोग असंमित 'आर्थिक स्वतंत्रता' मानते  
 हैं, उन्हें तब उत्तरदायी माना जायेगा कि यह नीति  
 को लागू करने के साथ-साथ अनिवार्य रूप से  
 दमन, भूख, बेरोजगारी और स्थायी निर्मम पुनर्निर्माण  
 का भी आगमन होता है।" \*

४ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निर्वाचन में  
 जन-एकता ब्लांक के उम्मीदवार सत्वादीर उन्ने  
 विजयी हुए थे। वामपक्षी पार्टियों के सहमेले की शक्ति  
 ने मिट्टी कर दिया था कि राजनीतिक सत्ता को सैन्य  
 तांत्रिक साधनों से सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा  
 सकता है।

"१९७० में चिलीआई जनता की विजय," जिसे  
 आई काम्युनिस्टो ने इंगित किया, "सामाजिक शांति  
 के सभी मॉरचों पर प्रचुर जन-सभाओं के दौर में  
 परिणति थी। और यह विजय इस कारण महत्वपूर्ण  
 पायी कि जनता चिलीआई क्रांति के स्वप्न का सही  
 निर्धारण करनेवाली नीति के आधार पर होगा



१५ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निम्न उनके राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हेनरी किनिंग सी० आई० ए० निदेशक रिचर्ड हैल्म और एंथोनी जनरल (महाम्यायवादी) जॉन मिचेल की हॉट हाउस में बैठक हुई। सी० आई० ए० प्रमुख ने बातचीत और राष्ट्रपति के निर्देशों का संक्षिप्त विवरण रखा।

“हो सकता है कि हमारे पास दम में एक ही मौका हो, मगर हमें चिली को बचाना है। इस मामले में कार्रवाई पर खर्च का कोई महत्व नहीं। जॉर्जिया की परवाह मत कीजिये। दूतावास को अनवरत रहना चाहिए। १०० लाख डॉलर नकद विनियुक्त कर दीजिये और जल्द ही, तो ज्यादा। दिन-रात काम कीजिये। अच्छे से अच्छे एजेंटों को लगाइये। सक्विया बोस्का को जल्दी से जल्दी तैयार कीजिये।... रण तैयार करने के लिए आपके पास ४८ घंटे हैं।

जन-एकता सरकार के विरुद्ध संयुक्त राज्य रीका के गुप्त युद्ध को, नवंबर, १९७० में गिर् १९७३ तक चलनेवाले इस युद्ध को, दो चरण विभाजित किया जा सकता है। वाणिज्यिक के रणनी मध्य-अल्पेदे सरकार का तस्मा उमटना-में परिवर्तन नहीं आया; परिवर्तन गिर्क अमरीकी गु- मंत्रियों की कार्यनीति में ही आया। पहले चरण

“सी० आई० ए० पर्यवेक्षक”, माग्नो, १९७६, १ (कमी के)।









नीतिगत स्थिति के बारे में सूचना एकाग्र करने के उच्च  
 केन्द्र के अधिकारी शासन के विरोधियों से से लगे  
 के एक व्यापक जाल को स्थापित करने, दलित  
 कार्य नेताओं के साथ संपर्क स्थापित करने, देश भर  
 राजनीतिक और मार्क्सवादी संगठनों के नेतृत्व में  
 चुन गियाने और आत्मतन्त्री कार्य में सहायता  
 की योजनाएं तैयार करने में भी लगे हुए हैं। इन  
 कार्रवाइयों का प्रयत्न की योजना बिंदु वाले के उच्च  
 मी० आर्० ए० केन्द्र के प्रमुख नेतृत्व वाले हैं। उच्च  
 स्तर पर या स्वयंसेवकों का प्रमुख प्रयत्न की  
 किया था जहां वह १९५६ में एक संगठन के  
 आर्० ए० कार्य की दृष्टिकोण में तैयार थे।

इसकी में प्रयत्न की राजदूत नेतृत्व वाले हैं  
 भी मी० आर्० ए० कार्य के स्तर पर या स्वयंसेवकों का प्रमुख प्रयत्न  
 बिंदु वाले एक और स्थिति में। स्तर पर या स्वयंसेवकों का प्रमुख प्रयत्न  
 मी० आर्० ए० के बाद जहाँ तक संभव है देश में  
 प्रयत्न में प्रयत्न प्रयत्न का प्रमुख बना दिया था



प्रतिक्रियावादी सी० आई० ए० ने प्रतिष्ठित करने शुरू करदम-ब-कदम मूरेजो की तरफ बढ़ रहे थे। दूरचानको की हड्डान ने चिंतोई में व्यापम्या को भारी हानि पहुंचायो - देश घर में री की दुपारि ठप हो गयी, जिसने देश घर में रोज के काम को मनरे में डाल दिया और मुद्रान्दों में बेतरह बढ़ा दिया। २६ जून को प्रतिक्रियावादी देश अफमरो के एक दल ने सत्ता पचटने और विदेश मेंना के प्रधान मेंनापनि, जनरल बार्नो डब की हत्या करने का प्रयास किया।

प्रतिक्रियावादियों की पहली साक्षि नाकाम रही। पात्रीआ-इ-लीबरताद के नेताओं ने भावकर सिंसे दूतावासो में या विदेशो में शरण ली। समझ में सरकारी तौर पर गैर-कानूनी करार दिया गया लेकिन प्रतिक्रातिकारियों ने हथियार नहीं डाले। इन प्रयासों को सी० आई० ए० के साथ समन्वित होने हुए और वाशिंगटन की आर्थिक सहायता के बने वे सत्ता पर्युत्क्षेपण की तैयारी में फिर लग रहे। इस पद्यथ का नेतृत्व चिली के उच्चतम सैनिक अधिकारि को करना था। सितंबर, १९७३ में अभूतपूर्व नृपमता परिपूर्ण फाशिस्त-सैनिक विद्रोह फूट पडा। सत्ता को हथि कर सैनिक तानाशाही ने वामपक्षीय शक्तियों के विरु निर्मम प्रतिशोध का अभियान छेड दिया।

सानीनी अमरीका में पिछले कुछ दशकों में इतिहास का अध्ययन सी० आई० ए० द्वारा इस या उस देश में वाछित सामनो को अधिष्ठापित करने में

अमरीका में जब भी कोई ऐसी सरकार सामने आती, जिसका कार्यक्रम इस क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमरीका के 'दुनियादी हितों' के प्रतिबल जाता था, अर्थात् उन बड़े एकाधिकारों के हितों को प्रभावित करता था, जिनका सत्ताशक्ति अमरीका पर एकच्छत्र राज्य था, तो तैयारी हर बार अपनी प्रचलित क्रियाओं की सहायता को जानू कर देता था। और हर बार विषयवस्तु उन्हीं उपायों को अपनाया जाता था - धमकियाँ, घूस, ब्लैकमेल, साधन-अभियान, आतंक की कारवाहियाँ और अंतर्ध्वंस। हर बार इस सबका अंत एक सत्ता-परिवर्तन में होता था, जो वाणिज्य के कठपुतलों को सत्ताहृद कर देता था और वे फिर ही सामपक्षीय और देशानुरागी शक्तियों के विरुद्ध आतंक का दौर शुरू कर देते थे।

सी० आई० ए० ने इस प्रतिरूप की सबसे पहले १९५३ में ईरान में आजमाया था, जहाँ एलेन डलेस के दाहिने हाथ केमिट रुजवेल्ट के नेतृत्व में एक विशेष टोली ने मोहम्मद मसहिक की विधिसम्मत सरकार

प्रतिक्रियावादी सी० आई० ए० ने घनिष्ठ सहयोग करते हुए कदम-ब-कदम यूरेजी की तरफ बढ़ने लगे थे। टुकचालको की हड़ताल ने चिलीआई अर्थ-व्यवस्था को भारी हानि पहुंचायी - देश भर में मान की दुनाई ठप हो गयी, जिसने देश भर में बोआई के काम को मनरे में डाल दिया और मुद्रास्फीति को बेतरह बढ़ा दिया। २६ जून को प्रतिक्रियावादी सैनिक अफमरो के एक दल ने सत्ता पलटने और चिलीआई सेना के प्रधान सेनापति, जनरल कार्लोस प्रान्ज, की हत्या करने का प्रयास किया।

प्रतिक्रियावादियों की पहली माझिज नाकाम रही। पाथीआ-इ-लीबरताद के नेताओं ने भागकर विदेशी हूतावासों में या विदेशों में शरण ली। संगठन को सरकारी तौर पर गैर-कानूनी करार दिया गया। लेकिन प्रतिक्रांतिकारियों ने हथियार नहीं डाले। अपने प्रयासों को सी० आई० ए० के साथ समन्वित करते हुए और वाशिंगटन की आर्थिक सहायता के भरोसे वे सत्ता पर्युत्थेपण की तैयारी में फिर लग गये। इन पड़्यत्र का नेतृत्व चिली के उच्चतम सैनिक अधिकारियों को करना था। सितंबर, १९७३ में अभूतपूर्व नृशक्तता से परिपूर्ण फाशिस्त-सैनिक विद्रोह फूट पड़ा। सत्ता को हथियार कर सैनिक तानाशाही ने धामपक्षीय शक्तियों के विरुद्ध निर्मम प्रतिगोध का अभियान छेड़ दिया।

लातीनी अमरीका में पिछले कुछ दशकों के इतिहास का अध्ययन सी० आई० ए० द्वारा इस या उस देश में वांछित शासनों को अधिष्ठापित करने में





मध्य अमरीका के उनर-मदिवम में स्थित छोटों में अन्नाधिकमिन देश में कई दशकों में मूल रूप से अमरीका की युनाइटेड फ्रूट कंपनी का ही मिश्रण जमा हुआ था, जो केना बागानों, रेशों और थदरगाहों की मानिक थी, और यही नहीं, उन्हें अपनी पुनिस तक थी। दूसरे अमरीकी इजारे ग्वाटेमाला की तेल मण्डल पर आधे गड़ाये हुए थे और वह दीर्घकालिक प्रभुत्व प्राप्त करने की आशा कर रहे थे।

१९५० के अंत में जब राष्ट्रपति आर्बेन के नेतृत्व में नयी प्रगतिशील सरकार ने किसानों और सेंट मजदूरों को जमीन के हस्तांतरण सहित अनेक जनगणे मुधारों को कार्यान्वित करने के अपने इरादे की घोषणा की, तो ग्वाटेमाला में अमरीकी एकाधिकारों के लिए एक गभीर खतरा पैदा हो गया। नयी सरकार के जमींदारियों का, जिनमें युनाइटेड फ्रूट कंपनी की जमींदारिया भी थी, स्वामित्वहरण करने के निर्णय ने ह्वाइट हाउस को विशेषकर रुष्ट किया। ग्वाटेमाला के आंतरिक मामलों में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करते हुए अमरीकी विदेश विभाग ने आर्बेन सरकार को उसकी सूक्ति नीति के विरुद्ध एक विरोधपत्र दिया।

१९५३ में राष्ट्रपति आइजेनहॉवर ने आर्बेन सरकार का तत्ता उलटवाने का फैसला किया। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की इस कार्रवाई का औचित्य-स्थापन करने के लिए प्रचार साधनों ने मध्य अमरीका के बारे में बड़ा जोरदार अभियान चलाया। सी० आई० ए० के निदेशक एलेन



सी० आई० ए० और पैट्रॉनोव में उसका सबसे बड़ा  
सम्बन्ध उत्पन्न हो। उन्होंने विदेशियों के नि-  
र्यासों में बड़े दो जगह हाइराम और नौकरादुआ  
हैं। इसके अलावा सी० आई० ए० ने अफन के  
मर्च के लिए अमान को लगभग २० लाख डॉलर भी  
दिये।

आइ के सैनिकों को नौकरादुआ में नौकरों ने  
राज्य पर सामोवा के पशुपालन फार्म पर और फर्न  
कार्मेल के निकट एक मूल्यवान् हवाई अड्डे पर प्रशिक्षण  
दिया गया। प्रशिक्षण अमरीकी बर्नस कर्नल लुका  
के निदेशन में दिया जा रहा था, जो बुखारे  
होने का दिवाता कर



में से लिया गया। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के छर्मिनात्रों का मार्गदर्शन करनेवाले दाम्भविक प्रेरक का ये, इगका अनुमान इन तथ्यों में भी लगाया जा सका है। ग्वाटेमालाई सत्ता-परिवर्तन के दोनों मुख्य सूत्रधार, अमरीकी विदेश मंत्री जॉन फॉर्स्टर डलेस और उनके भाई, सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस सलीक एड जॉमवेल नामक कपनी के भागीदार थे, जो मुनाइटेड फ्रंट कपनी के कानूनी मामलों को मभालती थी; और अतत, अतर-अमरीकी मामलों में जॉन फॉर्स्टर डलेस के सहायक जॉन कैबट मुनाइटेड फ्रंट कपनी के शेयरहोल्डर थे। प्रकटतया अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद मुनाफादायी धंधा है और मुनाफा भी भरपूर देता है।

ग्वाटेमाला में अंतिम सत्ता-परिवर्तन ८ अगस्त, १९८३ को हुआ। राष्ट्रपति की गद्दी भूतपूर्व प्रतिरक्षा मंत्री ब्रियेडियर-जनरल ओस्कार उबर्तो मेहिया विक्नोरेम ने हथिया ली, जिन्हे निकारागुआई समाचारपत्रों ने घोर कम्युनिस्टविरोधी, "बाइरो मे भी बाइ" और देशभक्त शक्तियों के निष्ठुरतम दमन का समर्थक बताया था। वह "कम दक्षिणपथी" जनरल रिग्रोम मोंत की जगह पर आये थे, जिन्हे कुछ ही समय पहले तक राष्ट्रपति रैगन "सच्चा जनवादी" कहा करते थे। इस "जनवादी" के ४६३ दिवसीय सत्ताकाल में देश में १५ हजार लोग मौत के घाट उतारे गये थे। किंतु वाशिंगटन को ऐसा पैमाना भी शायद पर्याप्त न लगा और सी० आई० ए० की मदद से सत्तास्व



के तने से पटक-पटककर मार डाला गया। रॉबिंसन  
सुर्च करने की ज़रूरत नहीं समझी गयी। दुश्मन  
बच्चों को भी नहीं बर्खास्त किया।

इसके बाद सिपाहियों ने कुछ समय आराम लि  
और फिर मर्दों पर दूट पड़े। उन्हें एक-एक कर  
अदम्यत की इमारत के बाहर लाया गया और इ  
पीठ पीछे बांधकर ज़मीन पर औंधा लिटाया गया  
जिगके बाद चाक़ुओं के धार करके मार डाला गया  
एक प्रत्यक्षदर्शी बयाना है कि वैसे एक सिपाही ने तब  
तभी मारे गये आदमी की लाश में दिव को लिटाया  
गया भी था।

यह सौमहर्षिक रक्तपात दिन के एक बड़े  
शाम के मान बड़े तक जारी रहा। इन छ बने।  
३५० लोगों को मौत के गार उतारा गया।

मानीनी अमरीका में घटनाक्रम शायद उम्मी लिखि  
प्रतिष्ठा पर बना बना है, लिगरी मी० आई० ए  
के बड़ी भी अपने कार्यक्रम का कार्यान्वयन करने।  
सकल ही ज्ञान के बाद हर बार मददगार बन।  
पुनरावृत्ति होती है। आइए हमें इस अनुभव  
प्रकाश के मुनासिब देखी जाए यह दिव कलुष  
कामना में बनाम में लागत ही बड़ी मदद लिग  
मदद है। इसका मतलब यह तक ही है - बचपन  
बचपन और प्रतिभाशाली कमन और अमरीका इ  
कामनाम बनामों के करीबी करीबी बनना के लिग  
लिगेर और लिगेर लुग आ बचपनी लिगिग इ  
हो लिगेर और प्रतिभाशाली कमन बन पर लिगेर ?





बाधा के वाणिज्य के बनाये रामने पर चन मने। ये अथग्याए एक गन्तिगानी दमन-तत्र और चार दक्षिणपक्ष के ऐसे आतकवादी समझनों की पुर्वनिश करती है, जो मौ० आई० ए० से मदद हो और उसकी महायत्ना से सभी देशानुरागी, वामपक्षीय तथा जनवादी गन्तियों के विरुद्ध बाकायदा सहार का अभियान चलाये। इन अभिकरणों और समझनों की सनन हिन और जबरदस्तियों के बिना वाणिज्य द्वारा अपने अनुचर राज्यों में खड़े किये सामन ताश के धर नौ तरह से निमिष माय में दह जायेगे।

लेकिन आइये, ग्वाटेमाला पर वापस आये और देखे कि अमरीकी हस्तक्षेप इस चिरपीडित देश के लिए क्या लेकर आया और समुक्त राज्य अमरीका द्वारा आरोपित "समृद्धि" का यह मॉडल आज कैसे "काय कर रहा है"।

१४ जुलाई, १९८०। अजीब से शिरोवस्त्र पहने लोगों की एक टोली सान कार्लोस विश्वविद्यालय के अहाते के पास कई कारों से निकलती है। एक-एक करके वे अहाते में प्रवेश करते हैं, जहाँ व्याख्यान आरम्भ ही होनेवाला है। छात्र अपनी-अपनी बसों की तरफ लपक रहे हैं और इन अपरिचित आगंतुकों की तरफ कोई ध्यान नहीं देते। आगंतुक अपने सबादों के नीचे से मशीनगनों निकाल लेते हैं और उन्हें चलाता शुरू कर देते हैं। जब वे अपना मिशन पूरा करते कारों में वापस जाकर बैठते हैं, तो लॉन पर २१ मृतक और १४ घायल पड़े हुए हैं।



कर्नल हेक्नोर मॉनाल्वाना और राष्ट्रीय पुलिस के प्रमुख कर्नल हेरमान चुपीना बाराहोना द्वारा समर्पित शीर्षस्थ जनरलों के एक गुट के आदेशों पर सेना तथा पुलिस के अधिकारी करते हैं। प्रमुख ग्वाटेमालाई व्यवसायी राऊल गार्सीआ यानादोस ने एक भेटवार्ता में बताया था कि यमदूत टुकड़िया सशस्त्र सेनाओं द्वारा खड़ी की गयी है।

गार्सीआ यानादोस ने आगे कहा, "उनके पास ऐसे लोगों की सूचिया हैं, जिन पर कम्युनिस्ट होने का शक किया जाता है। इन लोगों को मार डाला जाता है।"

इसका पर्याप्त प्रमाण है कि यमदूत टुकड़िया सरकारी नियंत्रण में है। सितंबर, १९८० में इसी एलीआस बाराहोना ने सार्वजनिक रूप में पुष्टि की, जो चार साल गृहमंत्रालय के प्रेस सचिव रहे थे। उन्होंने पत्रकारों को एक लिखित वक्तव्य दिया, जिसमें विस्तार से बताया गया था कि लूकास गार्सीआ और सेना के जनरल किस तरह यमदूत टुकड़ियों को नियंत्रित करते हैं। बाराहोना ने पत्रकारों को सरकार द्वारा केंद्र तथा ग्राम केंद्रों के रूप में प्रयुक्त स्थानों के पत्तों की सूची भी दी। ग्वाटेमालाई ईमार्ई जनतांत्रिक पार्टी के महासचिव चीनिसीओ सेरेसो ने एक प्रेस सम्मेलन में कहा कि उनकी पार्टी के नेता हत्या के लिए अभीष्ट व्यक्तियों की सूची में है, क्योंकि उन सभी को कम्युनिस्ट माना जाता है, जो सरकार का विरोध करते हैं।



जनरल रीओम मोत ने एक वक्तव्य द्वारा स्वार्थन में जनतंत्र तथा स्वतंत्रता की बहानी के लिए न रहे देशभक्तों को हथियार न डालने की मूर्खता नष्ट कर देने की धमकी दी।

१९६४ में सी० आई० ए० ने बाजील में राष्ट्रीय गुलार्त की जनतांत्रिक सरकार को उलटने के लिए बसात सत्ता-परिवर्तन की तैयारी की थी। अपने इन तत्त्व की सिद्धि के लिए सी० आई० ए० ने जनवादी दलों के विरुद्ध भडकावे और आतंक की कार्रवाइयों के पारंगत कितने ही स्थानीय संगठनों और अभियानों का उपयोग किया।

१९६४ के सैनिक सत्ता-परिवर्तन की तैयारी में सी० आई० ए० की गह्रित भूमिका १९७६ में प्रकाश में आयी, जब बाजीली पत्रकारों ने अनेक गुप्त दस्तावेजों को प्रकाशित करके उसका परदाफाश किया। आज यह अच्छी तरह से ज्ञात तथ्य है कि बाजील के आंतरिक मामलों में धृष्टतापूर्वक हस्तक्षेप करने के लिए सी० आई० ए० ने कम्युनिस्टविरोधी आंदोलन, मृत्युदूत टुकड़ी, कम्युनिस्ट हनन दल जैसे एन्टि-पक्षीय आतंकवादी संगठनों, अर्द्ध-पुलिस संगठन जलाने-धान बादेइराउस और राजनीतिक पुलिस के रूप में सक्रिय महयोग किया था।

सी० आई० ए० और अन्य सर्वाधिकारी मार्क्सवादी अमरीकी शासनो-उगन्वाय, पराग्वाय तथा हाइटी-के दमनकारी अभिकरणों के बीच भी ऐसी ही "सिक्कान्त मन्त्र" है। साम्राज्यवादविरोधी, जनवादी और मुक्ति



में जुड़े हुए है। उन्होंने आगाह किया कि वाशिंगटन इसके लिए सभी कुछ करेगा कि सल्वादोर में कोई जनतांत्रिक सरकार सत्ता में न आये। उन्होंने इस किया कि समुक्त राज्य अमरीका इस देश पर सैनिक आक्रमण कर देगा और उसे "दूसरा वियतनाम" बनाने से भी न कतरायेगा। इस चेतावनी की पुष्टि औरो के अलावा भूतपूर्व अमरीकी विदेश मंत्री एनरोस हेग तथा राष्ट्रपति के निकटतम परामर्शदाता एडमिरी मीज़ के घमकीभरे और तत्त्वतः भड़कानेवाले बक्तव्यों से हुई।

सल्वादोरी देशभक्तों द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मेलन ने सी० आई० ए० के आपराधिक तरीकों का परदाफाश किया। एक ओर, वह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के, जिनमें सल्वादोर का आंदोलन भी सम्मिलित है, विरुद्ध ध्वस्तकार्य करती है, और दूसरी ओर, वह विभिन्न देशों में जनमत को गुप्तारह रातों की कोशिश करती है। एजो ने बतलाया कि सल्वादोरी विद्रोहियों और समाजवादी राष्ट्रों के बीच सन्धियों का वह तथाकथित प्रमाण अमरीकी गुप्तचरों द्वारा ही गढ़ा गया था, जिसे अमरीकी अवर विदेश मंत्री सॉरिस ईंगलबर्गर पश्चिमी यूरोप लाये थे। पत्रकार सम्मेलन में उपस्थित पत्रकारों को सी० आई० ए० के ध्वसात्मक तथा मित्रों, सूचना तंत्र की कार्यप्रणाली को प्रकट करनेवाली दस्तावेजों की फोटो प्रतियाँ दी गयीं।

अमरीकी स्थापित धर्म विनाश मरदान की बात करने





है और उन्हें सेनाओं, पुलिस और हथियारों में बढ़ा दिया है। अपने लक्ष्यों को अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म है अथवा, जैसे कि प्रचलित राज्यावली में कहा जाता है, 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद', से लड़ने की मुर्खों के बने छिपाते हुए संयुक्त राज्य अमरीका व्यापक जनतागत के हितों के विरुद्ध अल्पसंख्यक जमींदाराना स्वच्छाचारी शासनो और उनके सैनिक अनुचरो का समर्थन कर रहा है।

"संयुक्त राज्य अमरीका स्वच्छाचारी शासनो को अपने समर्थन का औचित्य-स्थापन इस दावे से करता है कि वे आधुनिकीकरण की सिद्धि के लिए ही अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म (अथवा 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद') के प्रसार को रोकने के लिए आवश्यक हैं। दावा यह किया जाता है कि दमनकारी स्वच्छाचारी शासन सिर्फ अस्थायी ही हैं और कुछ समय की कृतनियों के बाद लोगों की जिदगी आधुनिकीकरण के बदलत समृद्ध हो जायेगी। ... सल्वादोर में क्यूबाई अमरीकी राजदूत रॉबर्ट ह्यूइट ने कहा है कि उन्हें विदेश सेवा से अलग होने को, उनके ही राज्य में राष्ट्रपति रैगन के सल्वादोर में सैनिक हमलों के 'तैयारनुदा सिद्धांत' का विरोध करने के लिए मजबूर किया गया था। उन्होंने कहा कि इन देशों में सबसे बड़ा खतरा ... अमरीका द्वारा समर्थित सैनिक शासन में सबूत दक्षिणपंथी शाक्तियों की तरफ है। राजदूत ह्यूइट ने सल्वादोरी सरकार को सैनिक सहायता दिये जाने का विरोध किया। उन्होंने कहा



१.००० तक आदमी थे, हमने के विवरण छले। कहा गया कि यह हमला सम्बन्ध नौकरानुशा से हुआ था। यद्यपि इन आक्रमणकारी छापामारों और मन्वादोरी सुरक्षा सेनाओं के बीच कथित लड़ाई पूरे त्रिचसी, फिर भी सरकारी सैनिक न तो किन्हीं छापामारों को मार ही सके, न कैदी बना सके और न कोई हथियार ही बरामद कर सके।

“ २२ जनवरी को एक दूसरे समुद्री हमले से खबर छपी, मगर इस बार भी हताहतों या कैदियों के बिना। फिर भी इसे पर्याप्त साक्ष्य मान लिया गया और २४ जनवरी को संयुक्त राज्य अमेरिका ने मन्वादोरी सरकार के साथ ६५० लाख डॉलर सहायता के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। आश्चर्यजनक रूप से, इन दस्तावेजों में इसका काफी प्रमाण दिया गया था कि क्यूबाइयो और रूसियों ने मन्वादोरी विद्रोहियों को हथियार मुहैया किये थे। यह 'प्रमाण' विदेश विभाग के उस दस्तावेज के साक्ष्य का ७०% का हिस्सा में सोवियत तथा क्यूबाई सहायता को नेबन्ध किया गया था। ” \*

सल्वादोर में असल में क्या हो रहा है? क्या वहाँ की जनता के विरुद्ध खुला नरसिंह अभिमान चला रहा है? किस स्वेच्छाचार के खिलाफ पारलुप्त मार्तो राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के सल्वादोरी देशवास लड़ रहे हैं?





सल्वादोर में क्या करना चाहिए। "एक सभ्यता यह  
रहा है कि प्रशासन इस क्षेत्र में, मिमान के लिए  
घाटेमाना हाइड्रस और चिली में, प्रतिनियुक्त  
सेनाओं को इस्तेमाल और सज्जित करे। फिर इन  
सेनाओं को अंत अमरीकी शांतिरक्षक सेना के आवरण  
में भेजा जा सकता है।

पैट्रोन प्रत्यक्ष अमरीकी सहभागिता का आग्रह  
करता रहा है।

"फाराबूदो मार्टी राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के  
प्रवक्ता कहते हैं कि सल्वादोर में अब भी ८०० से  
अधिक अमरीकी सैनिक मौजूद हैं। लेकिन रैगन  
की रणनीति में प्रतिनियुक्त सेनाओं की भी भूमिका  
हो सकती है। अद्यतन काम के लिए क्यूबाई उत्प्रा-  
मियों और नीकारागुआई नेसनल गार्ड के भूतपूर्व  
सदस्यों का उपयोग किया जा सकता है।

रैगन ने अंत अमरीकी मामलों के विदेश-उपमंत्री  
के महत्वपूर्ण पद के लिए अपनी पसंद घोषित कर दी  
है। इसके लिए टॉम एडर्स को चुना गया है और  
उनका अनुभव क्यूबिया के समय तक का है, जहां  
वह १९७१ से १९७४ तक अमरीकी ~~...~~  
के।











में होना है। अमरीकी सैनिक, पुलिस और चरम दक्षिणपन्थीय तूफानी दलों को प्रशिक्षित और मज्जित कर रहे हैं। गान्धीरोधी बम्बटो में लेकर मोटरगाड़ियों तक हर ही चीज उन्हें समुक्त राज्य अमरीका देना है। समुक्त राज्य अमरीका में प्रशिक्षित अफ़मरों की मख्या दुगुनी हो गयी है। इसके अलावा अमरीकी बच भागे मामोडाइयो में से भाड़े के सैनिक प्रशिक्षित कर रहे हैं और कानिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए ग्वाटेमालाई और हाइरामी सेनाओं का उपयोग करने की योजना बना रहे हैं।”

हान के समय में विश्व प्रेम में सन्वादोर में निरकुश शासन के विरुद्ध जन-मर्ष में आमूलत नये विकासो के समाचार छपे हैं। आज यह बिलकुल स्पष्ट हो गया है कि सैन्यवादी शासक गुट एकदम दिवालिया हो गया है, जो अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए रक्तपात के सभी रेकार्डों को तोड़ रहा है और सल्वादोरी जनता का जनसहार कर रहा है। सल्वादोर में अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए फ़ार्मीनी पत्रकार प्येर ब्लाशे ने 'ली नूवेल ओब्ज़र्वानेर' में लिखा है कि "उपस्थित पत्रकारों में से किसीने विश्व स्वास्थ्य समूह के किसी भी स्वयंसेवक को कपूचिया के बाद से विभीषिका के ऐसे दृश्य नहीं देखे हैं।”

\* 'लिनैरानूनीया गजेरा', २६ मार्च, १९८० (कमी में)

\*\* *Le nouvel Observateur* 18 juillet, 1981, p 42



हैं। अमरीकी हथियार और यौद्धिक साज-सामान जल्दी-जल्दी सान-मल्वादोर पहुँचाये जा रहे हैं। यही नहीं, पैटागोन सल्वादोर में अमरीकी सैनिक सलाहकारों की सख्या को बढ़ाये जा रहा है, जो—जैसे कि ज्ञात है—अब भी बहुत समय में सैनिक कार्रवाइयों में प्रत्यक्ष भाग लेते आ रहे हैं।

छापामारों के साथ संघर्ष में अमफनताओं से नार खाकर चरम दक्षिणपन्थीय तत्वों से निर्मित सल्वादोरी मैन्य नेता और मृत्युदूत टुकड़िया नागरिक आवादी के खिलाफ दमन-चक्र चला रहे हैं। उदाहरण के लिए, सल्वादोरी कैथोलिक चर्च के एक मानवाधिकार रक्षा दल के बक्तव्य के अनुसार १९८३ के पहले छ महीनों में ही मृत्युदूत टुकड़ियों द्वारा मारे गये लोगों की संख्या २,५०७ थी। और इस बीच वाशिंगटन खुश और नीकारागुआ के विप्लव सरकार आक्रमण की, मध्य अमरीका तथा कैरीबियन में सरकार हस्तान्ते की विस्तृत योजनाएँ तैयार कर रहा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में विचार-विमर्श के बाद अंगीकृत इन योजनाओं में आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रचारात्मक उपायों के एक पूरे मिश्रित्व की योजना की गयी है। पश्चिमी समाचारपत्रों की मन्त्रों के अनुसार राष्ट्रपति रैगन और उनके मन्त्रालय इस विचार पर पहुँचे हैं कि मध्य अमरीका में अमरीकी सैन्य उपस्थिति में इबन्दस्त वृद्धि करना आवश्यक है। विशेषकर हाइगुगम में अटलांटिक तट पर एक विशाल अमरीकी पोखरी अड्डा बनाने का इरादा रखा जा रहा



कि इस समय वे नीकारागुआ में प्रचलित सैनिक हथियारों के बगर पर पहुँच गयी है। मनोवैज्ञानिक दबाव बढ़ाने और गुना सैनिक टकड़ाव मड़काने के इरादे में अमरीकी राष्ट्रपति ने जून, १९८३ में ६,००० सैनिकों को लेकर अमरीकी नौसेना के एक विमान बेंडे को इन छोटे में मध्य अमरीकी देश के तटों की ओर जाने का आदेश दिया। इसी के माध्यम्य वाणिज्य ने अपनी आक्रामक योजनाओं के कार्यान्वयन में उसका प्रस्थान-स्थल और आजाकारी माध्यम की हैमिशन से उपयोग करने के लिए हाइडुरास को भारी सैनिक सहायता और आर्थिक अनुदानों को मजूरी दी। वाणिज्य का गुप्त युद्ध अधिकाधिक स्पष्टतापूर्वक बाकायदा खुले युद्ध का स्वरूप ग्रहण करना शुरू कर चुका है।

१९८३ के अंत में वाणिज्य द्वारा सिधायें और हथियारबंद किये हुए प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों ने नीकारागुआ की नागरिक आबादी के खिलाफ नये उधम अपराध किये। हाइडुरास से हिनोनेग डिपार्टमेंट में घुस आये २००० क्रांतियों ने बेतों में काम कर रहे १७ किसानों को मौत के घाट उतार डाला। एक दूसरे गिरोह ने, जो मेताई डिपार्टमेंट में घुस आया था, कैथोलिक बिशप सैल्वाडोर इलेफ़र की निर्वम हत्या की ( प्रसंगत इलेफ़र अमरीकी नागरिक थे )।

नीकारागुआ के खिलाफ प्रचलित युद्ध के अमरीकी सूत्रधारों ने भाड़े के हत्यारों की कार्रवाइयों को सक्रिय बनाने के लिए यह वक्त अकस्मात् ही नहीं चुना है।





वर्तमानकालीन सामोबुद्धियों के सम्मानपूर्ण आगमन  
 नहीं करी। वर्तमानकाल के बीज को गढ़े है। नीकालगुप्त  
 की जन्म वासिगदन के आने के टुकड़ों की मोड़ने  
 की कार्यवाही और मनुष्य मान प्रमोदता के नैतिक  
 दृष्टिकोण के मनुष्य का मनुष्यत्व जगह दे रही है।

अक्टूबर १९६३ में देनाडा पर अमरीकी मैन-  
 वाइस के आन्तरिक मन्त्रालय आक्रमण में मारे गये  
 में शोध की प्रथम मन्त्र दीव मयी। अन्तर्राष्ट्रीय आन्तर-  
 बाद के इस कृत्य को कैप्ट टुम्बने की कोशिश में ज़ाहद  
 हाजम ने बांधना की रि देनाडा के निवास मन्त्र  
 कार्यवाही करने का निर्णय २३ अक्टूबर को पूर्वी  
 बीरोविजन गांवों के मन्त्र के पास देगो में देनाडा  
 में व्यवस्था तथा जनन की "बहाली" में मदद करने  
 की "आधिकारिक अंगी" जाने के बाद किया गया  
 था।

हिन्दु अनगिनत तथ्य साधो है कि वासिगदन ने  
 आक्रमण की योजनाएँ पहले से बनायी हुई थीं। उदाहरण  
 के लिए, एन० डी० सी० टेलीविजन पर प्रसारित  
 एक भेटवार्ता में प्रनिरता मन्त्री कैम्बर वाइनबर्गर  
 ने खुले-आम कहा कि अमरीकी त्वरित विनियोजन  
 सेना (रैपिड डिप्लॉयमेंट फोर्स) की ८२ वी पैरा  
 डिविजन की टुकड़िया २६ अक्टूबर को देनाडा में  
 "पहले से निर्मित योजना" के अनुसार उतरी थी।  
 इस "पहले से" मन्त्र एक हफ्ता या एक महीना ही  
 पहले ही नहीं था।

पैटागॉन के अधिकारियों के अनुसार (इस बारे



मॉरिस बिशप की सरकार के अस्थिरकरण और पुराना शासन फिर से कायम करने की निरंतर कोशिशों का सामना करना पड़ रहा था। और ऐसी हर कोशिश के पीछे अनिवार्यतः संयुक्त राज्य अमरीका का हाथ होता था। १९८० के जून महीने में अमरीकी गुजर सेवाओं ने घेनाडा की राजधानी सेट जॉर्ज में एक विशाल मार्बलजिनिक मभा के दौरान सरकारी भव के नीचे बम रखवाकर विस्फोट करवाया था। फिर उसी मास के अंत में सी० आई० ए० के दो और वाहनों का भंडाफोड़ हुआ। जून, १९८१ में घेनाडा की गुप्त सेवाओं को पता चला कि २६ आदमियों के एक प्रतिनितिकारी दल ने बारबडोस में सी० आई० ए० के रेजिडेंट ऐंजले बिल्ल के साथ संपर्क कायम किए हुए है। यह दल 'पेनैडियन वाइंग' नामक एक गुप्त दल में प्रकाशित समाचारपत्र के जर्गल प्राप्त तथा रिमा की कार्रवाई करने और बिना की सरकार को उलटने की अर्पित जारी किया जाता था। यह में तेजी और भी अनेक माहिती का परदाशन हुआ।

घेनाडा में परेपू प्रतिनितियावादी तन्त्रों की, जो बारी कमजोर थे, सफलता की आशा न होने पर भी संयुक्त राज्य अमरीका ने भवर्षमाग्यक आतंकवादी कार्रवाइयों पर भरोसा करना छोड़ा नहीं और इस तन्त्र में देश के भिन्न-भिन्न प्रकार-प्रतिनित पुरे डोर-डोर में जारी रखा।

हर महीने देश में सी० आई० ए० के पैसा के खिंचे हुए और देश की चार्जकारी प्रक्रिया के साथ



बनाये रहने" के लिए वहाँ कई सौ सैनिकों की एक अमरीकी गैरीजन रहने दी गयी है। औपचारिकतः वह तथाकथित कैरीबियन शांति-स्थापना सेना का अंग होगी, जिसे वाशिंगटन ने ग्रेनाडा पर अपने आक्रमण को "अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई" की शकल देने के लिए कैरीबियन क्षेत्र के अमरीका-समर्थक राज्यों के सैनिकों से बनाया था।

ग्रेनाडा की जनता इन कुछ महीनों में ही "अमरीकी नमूने के जनतंत्र" की निर्यात की जानेवाली विस्म के सभी आकर्षणों से वाकिफ हो चुकी है। बमबारिया, जनसहार, गैरकानूनी गिरफ्तारियाँ, कसेटेशन कैंप, पूछ-ताछ और यत्रणाएँ, ऐसे हर किसी की मौत, जो आक्रामक का प्रतिरोध करने का दुस्साहस करता है—

हाल के समय में सातीनी अमरीका से ऐसे राजनीतिक कार्यकर्ताओं, शासनाध्यक्षों और शीर्षस्थ जनरलों तक के साथ, जिन्हें वाशिंगटन अवाछनीय समझता है, "दुर्घटनाओं" के होने के समाचार समय-समय पर मिलते रहे हैं। आखिर दुर्घटना तो दुर्घटना ही है, जो किसी के साथ भी हो सकती है। राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों, जनरलों और ऐडमिरलों की हवाई जहाज, रेल अथवा कार दुर्घटनाओं में मृत्युएँ पहले भी हो चुकी हैं। फिर भी, पनामाई नेशनल गार्ड के कमांडर ओमर तोरीहोम, एक्वाडोर के राष्ट्रपति हाइमे रोल्दोस और पेहू की स्थल सेना के प्रधान मेनापति जनरल रफाएल होयोस रुबिओ की मृत्युओं के प्रमणों में कई तथ्य ऐसे हैं, जिनसे यह संदेह होता है कि वे



का आदेश दे दिया था। हत्यारों को सैग्ली से आदेश  
हॉवर्ड ई० हट के जरिए मिलते थे—यह वही आदेश  
है, जो वाटरगेट कांड से प्रत्यक्षत संबद्ध था।

अमरीकी प्रेस में इस आशय की खबरें छपी हैं कि  
वाटरगेट कांड की जांच के दौरान जनरल तोरीहोग  
की हत्या करने की एक योजना का भी पता चला  
था।

अमरीकी हुकूमत पिछले कुछ समय से जनरल  
तोरीहोग द्वारा मध्य अमरीकी देशों, मखोंगरि नीगरा-  
गुआ और सन्वादोर, के जनगण के व्यापकत मर्प  
को प्रदत्त समर्पन से नासकर बहुत नाराज थे। कई  
जानकार अमरीकी अधिकारी जनरल की मृत्यु में  
सी० आई० ए० का हाथ होने के बारे में सुनेश्राम  
इशारा करते हैं। मिमाल के लिए, भूतपूर्व अमरीकी  
ऐटोनी जनरल रैमन्ने क्लार्क ने मेक्सिको की राजधानी  
में वहा के वकीलों की एक मभा में भाषण देने हुए  
कहा कि इसमें कोई शक नहीं हो सकता कि जनरल  
तोरीहोग बिना पनामाई हवाई जहाज में सार कर  
गटे थे, उसने साथ हुए हादसे के पीछे सी० आई० ए०  
का हाथ था।

यह विमान-दुर्घटना भी गम्भ्य बनी हुई है।  
बिमने एक्वादोर के राष्ट्रपति हाइमे रोन्डोस मने  
गये थे। इस दुर्घटना की जांच के दौरान एक्वादोर  
प्रतिस्था मन्त्रालय ने एक विशेष दम्तावेज तैयार की,  
बिमने राष्ट्रपति रोन्डोस के प्रति अमरीकी सन्त  
स्थलों और मने हादसे के अन्वष्टित मन्त्रालयद मने



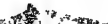


इंगित करता है कि राष्ट्रपति के विमान की दुर्घटना बहुत करके एक पूर्वनियोजित आतंकवादी कार्रवाई थी। दुर्घटना के ठीक पहले एक्वादोर में चिनीआई राजदूत ने एक स्वागत समारोह में मयोग से कहा था कि शीघ्र ही "कोई असाधारण बात" होनेवाली है। यह भविष्यवाणी अगले ही दिन सच्ची हो गयी।

अमरीकी तेल इजारे पेरू की स्थल सेना के प्रधान सेनापति जनरल रफाएल होयोस रुबिओ से भी इतने ही अप्रमन्न थे। वह उन राष्ट्रवादी सेनाधिकारियों में थे, जो अक्टूबर, १९६८ में मला में आये थे और जिन्होंने अमरीकी इजारे इटरनेशनल पेट्रोलियम कम्पनी की पेरुआई सहायक कम्पनी को राष्ट्रीकृत करके राष्ट्रीय तेल कम्पनी पेत्रो पेरू की स्थापना की थी तथा अमेज़ोन नदी की घाटी में तेल पूर्वेक्षण सगठित करने और पेरू के सामाजिक-आर्थिक विकास के हितों के तेल के निष्कर्षण और युक्तियुक्त उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए काफी कुछ किया था।

जनरल रुबिओ की मृत्यु की जांच करने के लिए स्थापित सरकारी आयोग इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जनरल रुबिओ जिस हेलीकॉप्टर में सफर कर रहे थे, उसके चालक को इस मॉडेल के यान को उड़ाने का कोई अनुभव न था। यह भी पता चला कि हेलीकॉप्टर सुरक्षा नियमों के विरुद्ध कहीं अधिक ईंधन নিয়ে हुए था। यह सर्वथा संभव है कि ऐसी "अमावधानी" सांयोगिक नहीं थी।

इन तीनों दुर्घटनाओं से सबद बहुत से तथ्य अ



## संघर्षों का पुनर्जागरण

संयुक्त राज्य अमेरिका सामान्य अन्य राष्ट्रों के आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता, न वह अस्त्र-दबाव या धमकियों का ही प्रयोग करता है। हो सकता है कि बहुत ही विदेशी अवस्थाओं में संयुक्त राज्य अमेरिका ने कुछ विधियों का उपयोग किया हो, और अगर उसने ऐसा किया है, तो उसके उदाहरण बहुत ही विरल हैं। मोरिशसों के विप्लव, संयुक्त राज्य अमेरिका ऐसे कुछ हस्तक्षेपों का वैज्ञानिक संबंधों में अपने सामान्य व्यवहार के अनिवार्य प्रयोग नहीं करता।” \*

ये शब्द रॉबर्ट कुबान के हैं, जो एक प्रमुख अमेरिकी सैनिक तथा राजनीतिक योजनाविद्वत् हैं। इतिहास की रचना भी जानकारी रखनेवालों को ये शब्द अनर्गल प्रतीत होंगे। इसके बावजूद इस तरह के कथन हाल के समय में अमेरिकी प्रेस में अधिकाधिक प्रायिकता के साथ प्रकट हो रहे हैं। तथाकथित अन्-

\* *Conflict and Cooperation in the Persian Gulf*, Ed. by Mohammed Mughisuddin, Praeger Publishers, New York and London, 1977, p. 171.



दिनों बगदाद के अकसर चक्कर लगाया करने थे, जो अमरीकी विदेश विभाग के लिए फार्म की बाड़ी के देशों में आनर्गिक मर्याद के बारे में सूचना के मुख्य स्रोत थे। सी० आई० ए० केंद्र अमरीकी मिशन का ही एक हिस्सा था और उसमें बहुत थोड़े ही लोग काम करते थे - उसने इराक में अपना काम अभी शुरू ही किया था। वह म्यानीय एजेंटों को भर्ती कर रहा था और देश के आर्थिक, सार्वजनिक तथा साम्प्रदायिक क्षेत्रों में अपने लोगों की घुमपैठ करवा रहा था।

"इराक में सी० आई० ए० केंद्र के उस हिस्से में, जो राजनयिक आवरण के नीचे काम करता था," अमरीकी गुप्तचर्या अधिकारी विल्बर जेन ईवलेड पुनः स्मरण करते हैं, "इतने कम कर्मों थे कि उसके दोनों सचिवों तक को सूचना आदान-प्रदान और एजेंटों के साथ निरापद जगहों में मुलाकातों की व्यवस्था करनी पड़ती थी।" \*

लेकिन यह तो बिलकुल आरम्भ की बात है। अपनी पुस्तक 'रेत की रस्सियाँ। मध्य-पूर्व में अमरीका की विफलता' में ईवलेड सी० आई० ए०-कर्मियों की गतिविधियों की व्यापक भांकी प्रस्तुत करते हैं, जो राजनयिक, कॉलेज अध्यापक और पुरातत्वज्ञ होने का दिखावा करते थे और मध्य-पूर्व के अमरीकी मित्र\*\*

\* Wilbur Crane Eveland, *Ropes of Sand America's Failure in the Middle East*, W. W. Norton & Co., London 1980, p. 46.

\*\* मध्य-पूर्व के अमरीकी मित्र सगठन की स्थापना १९४१ में हुई थी। मिस्र, शाम, मोरक्को, ट्यूनीशिया, सीरिया और जॉर्डिया



पद पर रहे थे और १९५३ में उसके निदेशक बने। उनकी पदोन्नति जनवरी, १९५३ में उनके अप्रैल जॉन फॉर्स्टर डलेस के संयुक्त राज्य अमरीका के विदेश मंत्री पद पर नियुक्ति के साथ घनिष्ठता बढ़ गई। इस प्रकार विदेश विभाग और सी० आई० ए० का नेतृत्व अब एक ही कुन्बे का कारबार बन गया। हिंसा और आतंकवाद के उत्कट समर्थक इन दोनों भाइयों ने कुछ ही समय के भीतर व्यवस्थाभंग, अतर्ध्वंस और राजनीतिक हत्याओं के आपराधिक मिश्री-केट को पूरी तरह से त्रिधाशील कर दिया।

व्याधिकीय कम्युनिज्मविरोध डलेस बंधुओं की एफ और सामान्य सहज प्रवृत्ति थी, जो, स्वाभाविकतया, उनके विदेशनीतिक कार्यकलाप की आधारशिला बन गयी। डलेस बंधुओं की भू-राजनीति में पश्चिम एशिया और मध्य-पूर्व का बिल्कुल आरम्भ से ही बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा।

मई, १९५३ में जॉन फॉर्स्टर डलेस ने मध्य-पूर्व और दक्षिण एशिया का दौरा किया। दौरे का औपचारिक लक्ष्य अमरीकी सहायता के बारे में विचार-विमर्श करना था, पर वास्तव में वह दीर्घकालीन अमरीकी रणनीति को निरूपित करने के प्रयोजन से इन देशों में स्थिति का जायजा लेना चाहते थे। जॉन फॉर्स्टर डलेस की अपेक्षानुसार इसका आधार मोविंग मध्य के विरुद्ध निदेशित आक्रामक गैर्य गूट होना चाहिए था। क्लिप्पर ईवलेड ने लिखा है: "उनका दृष्टिकोण प्राथमिक ध्येय मध्य-पूर्वी राज्यों की 'उत्पत्ति





रूजवेल्ट को चुना गया, जिनका अमरीकी गुप्तचरों द्वारा मध्य-पूर्व में किये गये कितने ही बुकृत्यों से सीधा संबंध रहा था। किम रूजवेल्ट संयुक्त राज्य अमरीका के १९०१ से १९०६ तक राष्ट्रपति और अपने द्वारा १९०३ में उद्घोषित "महादंड नीति" अथवा "शक्ति प्रदर्शन नीति" के प्रणेता थिओडोर रूजवेल्ट के पोते थे। अरब विश्व की रग-रग से परिचित प्राच्यविद् किम रूजवेल्ट को विभिन्न सांस्कृतिक मिशनों का आवरण की तरह से उपयोग करने का शौक था। ध्वसकार्यों के निरूपण और कार्यान्वयन में भी सक्रिय भाग लेते हुए किम रूजवेल्ट ने जल्दी ही सी० आई० ए० के समस्त मध्य-पूर्वी मामलों को अपने हाथों में ले लिया। वैसे तो ध्वसकार्य बहुत से, पर इनमें से सबसे गह्रित वह था, जिसने किम रूजवेल्ट के ज्ञानदार कैरियर को बनाया, और वह था ऑपरेशन एजेक्स—ईरान की विधिसम्मत सरकार का उन्ना जाना।

पचास के दशक के आरम्भ में ईरान में स्थिति बहुत ही महीन थी। राजनीतिक रगभूमि में राष्ट्रीय मोरचा नवमे आगे आ गया था, जिनके नेता बूर्नुआ-उदार राष्ट्रवादी डॉक्टर मोहम्मद मुम्महिक थे। मोरचे में राष्ट्रवादी बूर्नुआ और भूस्वामी गुट शामिल थे, जो अपने देश में ब्रिटेन के बोलबाने का विरोध करते थे। ईरान को ब्रिटिश एवाधिकारी प्रभुत्व में मुक्त करवाने के प्रयाम में मार्च, १९५३ में मुम्महिक के मन्त्रिम (मगद) में आग-ईरानी तैम बपनी को



ज्यौरो पर विचार किया, जिसका उन्हें निदेशन करा था। कुछ दिन बाद वह एलैन डलेम से बदस्तूर टेनि कोर्ट पर मिले और उन्हें बताया कि तैयारियाँ पूरा हो चुकी हैं। लेकिन डलेम ने, जो उस समय सी० आई० ए० के उपनिदेशक ही थे, उस राष्ट्रपति आइजनहॉवर के सत्ता ग्रहण करने तक टहलने की सलाह दी, जिनके प्रशासन में वह मध्य-पूर्व सी० आई० ए० के प्रच्छन्न युद्ध में एकदम तेजी से काम की सोच रहे थे।

डलेम का सोचना सही निकला। ३ फरवरी १९५३ को ब्रिटिश गुप्तचरों के प्रतिनिधि विदेश में जाँन फॉस्टर डलेम, उनके भाई और अब सी० आई० ए० निदेशक एलैन और भूतपूर्व सी० आई० ए० निदेशक जनरल वाल्टर बेडेल स्मिथ जैसे उच्चस्तरीय अमेरिकी अधिकारियों के साथ एक गुप्त बैठक में भाग लेने के लिए वाशिंगटन पहुँचे। बैठक में किम रूजवेल्ट का ऑपरेशन एजेंस का मुख्य संचालक बनाने के विचार का अनुमोदन किया गया और स्थिति का अध्ययन करने के लिए उन्हें तुरत ईरान भेजने का फैसला किया गया।

थोड़े ही दिन बाद किम रूजवेल्ट तेहरान पहुँच गये। वहाँ उनका फौरन दो ईरानियों के साथ मिला हुआ, जिन्हें गुप्तचरों कार्य का अनुभव था और उन्होंने भूट का पता चमानेवाली मशीन पर परीक्षण में गुजरने और प्रस्तावित पर्यटन में प्रशिक्षण पाने लिए अमेरिका भेज दिया। उस समय ईरान में अमेरिकी



प्रतीक्षा कर रही थी। इन लोगों को सी० आई० ए० की योजना को कार्यरूप में परिणत करना था। किम रुजवेल्ट को इसके लिए ईरानी मुद्रा में दस लाख डॉलर दिये गये थे। उस समय सबसे बड़ा ईरानी नोट १०० रियाल ( ७५० डॉलर के बराबर ) का था। इस प्रकार यह मुसद्दिक का तस्ला उलटने के लिए निगम गया खर्च धन का सम्बन्ध अवसर था।

लेकिन असल में इसका निर्यात १० प्रतिशत है खर्च हुआ। किम रुजवेल्ट के ईरानी एजेंट १ लाख डॉलर नकद लेकर तेहरान के दक्षिणी भाग में मिया गदी बस्तियों में गुडे और मूज्जे-सफमे दगाइयों को भरती करने गये। किम रुजवेल्ट की योजना के अनुसार इन लोगों की भीड़ों को सामूहिक अज्ञान फैलाने और शाह की हुकूमत के लिए " जन समर्थन " का दिखाने के लिए सही घड़ी में सड़कों पर निकल आया। आंगरेजान एजेंसि में यह बजाना की गयी है कि स्वयं शाह दूर कास्पियन तट पर घने जंगलों और पक्ष्यकारियों को दो हम्नाशरित करमान दे जायेंगे- एक मुसद्दिक को सम्मान करने का, और दूसरा उनका पञ्चुल्लाह उहदी को प्रधान मंत्री नियुक्त करने का। उनका उहदी, जिनके द्वितीय विश्वयुद्ध के समय मन्त्री मन्त्रियों के साथ पत्रिष्ट मन्त्री रहे थे, अब ईरानी मन्त्रियों के विरुद्ध अपनी गुप्त मन्त्री में सी० आई० ए० के लिए गुप्त के इच्छे थे। शाह की अन्तर्गत के कुछ प्रतिक्रियाकारी अंगर भी पक्ष्य में थे।



जिम्मा शाह की अग्रगण्य सेना के कर्नल नेमनु  
 नमीगी को मौतका गुट आनी एक जानकारी के  
 में आ छिने में। मेरिन आगिरी पक्ष में एक अ  
 ने पदुयन की योजना का भेद पुनिम को दे दिया।  
 पुनिम ने, जो मुमदिक की बफादार थी, कर्नल नेम  
 को गये हाथ पकड़ लिया और दोनों करमानों को  
 कब्जे में ले लिया। कर्नल नमीगी कुछ भी नहीं  
 पाये। बेशक, कर्नल ने बाद में अपनी पहली अमर  
 की कमर पूरी कर ली - मगर के दशक में वह जन  
 की हैमियत से शाह की मुफिया पुनिम सवाक अ  
 शाह के दमनतक के प्रधान बने। उनकी उन्नति  
 सिनमिने का अंत १९७६ में हुआ, जब ईरानी शा  
 की विजय के बाद उन्हें जनता के विरुद्ध अपने अपरा  
 की जवाबदेही करनी पड़ी और मृत्युदंड का भागी हो  
 पड़ा।

पहले प्रयास की विफलता ने किम ह्यूवेल्ट को  
 हतोत्साह नहीं किया। अपने एक ईरानी एजेंट के प  
 बैठे-बैठे वह घटनाचक्र पर निगाह रखे हुए थे। वह  
 बिल्कुल निश्चित थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनके  
 "भारी तोपखाने" - रिश्वत से खरीदी भीड़-को  
 मैदान में उतारना तो अभी बाकी ही है।

उधर जनरल जहदी अपने अमरीकी मित्रों के  
 निर्देशों पर चल रहे थे (उनके पुत्र अर्दशेर जहदी,  
 जो बाद में शाह के अमरीका में राजदूत बने, सी०  
 आई० ए० के साथ उनके संपर्क-मूत्र थे) और  
 अवकाशप्राप्त सेनाधिकारी स... १९, जिसके





झुट्टा कर रहे थे—इन्कार करनेवालों को वे मा-  
 मूत जड़कर कर रहे थे। कारो को रोककर डाकड़ों  
 को जड़ने के शीशों पर शाह के रगीन बिज सड़ने  
 को बिज किया जा रहा था। इसके लिए पहले ही  
 बड़े मस्या में बिज छाप लिये गये थे—इसके लिए  
 बिज इन्वेन्ट ने सी० आई० ए० का पैसा दिया था।  
 जब बिज सलम हो गये, तो उनकी जगह एन रिजल  
 के मोट बिपराये जाने लगे, जिन पर शाह का बिज  
 था।

यह देखकर कि निर्णायक घड़ी आ गयी है, बड़ोंने  
 अपने शरचस्थल से निकले और उस मगरिह की  
 कोठरी में पहुँचे, जहाँ जहदी छिपे हुए थे। उन्होंने  
 सरकार के नये अध्यक्ष को विजय के लिए बधाई दी।  
 लगभग उसी समय जहदी के गहवोगी अगमरी का एक  
 दल भी वहाँ आ पहुँचा। जहदी को अपने कंधे पर  
 उठाये वे बड़ा इनबार में छुड़ एक टैक तक ले गये  
 जो उन्हें लेकर मगर गति में जनरल स्टान-भवन की  
 तरफ चले दिया। उधर एक और टैक बिज एक  
 अमरीकी मैट्रिक मचाहकार चला रहा था (जिन  
 में उस समय कोई ३००० अमरीकी मैट्रिक मचाहकार  
 थे)। प्रधान मंत्री-निवास पहुँचा और मोने दल  
 गया। ज़ानी ज़ान बचाने के लिए मगरिह गिरदी के  
 बुरहाने, मगर उन्हें बड़ी दबाव दिया कर।

... ने विजय के लक्ष्य को  
 ... की दिन शाम की नये प्रत्यक्ष  
 ... बड़ी दुपाराम पहुँचे।



के एक विगत अष्टमाद की तरह से ईगरी मयात्र के  
वसभग हूँ जो शेष को अपने निजों में जड़ दिया।  
ईगन में विशेष रूप से आये सी० आई० ए० विशेषज्ञों  
के मयात्र अधिकाधिक को नागियों में सीगरी पयो  
"गहन गुण-नाष्ट" श्रविधियों का प्रविष्टम दिया।

तत्पश्चात् मयात्र राज्य के भीतर राज्य था।  
गह के मयात्र ने उसे कानून अथवा नैतिकता के ऊपर  
कर दिया और किसी भी अयगध के लिए उत्तरदायित्व  
में मुक्त कर दिया था। मयात्र के एजेन्टों की तन्त्रि  
में भी मुबहरे पर किसी को भी गिरफ्तार करने और  
गह के बिना तत्प्राप्तिया लेने का अधिकार था।  
मयात्र के पयो में पहुँचे लोग हमेशा-हमेशा के लिए  
पायब हो जाने थे - मुहदमे की मुनवाई के पहले हिरान्त  
रखने की अवधि अथवा फौजी अदालतों द्वारा बंद  
रखाजों के पोछे मुनायी मझाओं पर किसी तरह की  
कोई भीमा न थी।

सी० आई० ए० प्रविष्टक अपने मिष्ट्यों पर नाब  
कर सकते थे - मयात्र के सीगरी ने बाहे मरोड-  
मरोडकर जोड़ों से अलग कर देने, नाभून और शन  
खाइने, अमुलिया तोड़ने, चेहरो पर उबपना पानी  
डेलने और आये निराम लेने की कला को बहुत  
हल्दी ही सीख लिया। ये हत्यारे अपने को "काने  
कीम" कहते थे और अपने शिकारों को कोमिने  
दखाने की तीसरी मजिल पर यकणाए दिया करते  
थे। दिन के समय ईदियों की चीत्कारे मडक के दोर  
दब जाया करती थी, पर रात को वे बंद थिड़ियों



लगायाई गया असीसी बार्न विभाग का मुख्यालय था जिसने प्रधान ईरान में गुप्त कार्यों के अनुबन्धी, जंग में अपने गुप्तचरों अधिकांश गेहूँ खाता और येन विश्वविद्यालय के शिक्षि स्नातक नार्बन पॉन थे। जिस इन्टरव्यू के चर्चों में आई आर्थोबाल्ड इन्टर विभागाध्यक्ष के प्रथम महापुरुष थे। बार्निंग विश्वविद्यालय के भूतपूर्व व्याख्याता चार्ल्स जमिस मी० आई० ए० के लिए मध्य-पूर्व के मुख्य विज्ञानगर्तक थे।

प्रमगन पनाम के दगाऊ के आरम्भ में मध्य-पूर्व की स्थिति का विज्ञान मी० आई० ए० के विशेषज्ञों को गायद ही मनोप दे सकता था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूँजीवाद के आम मकट के सहजाने और समाजवादी विरादरी के उदय के साथ-साथ इन क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना तेजी में विकसित होती गयी और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन जोर पकड़ता गया। मध्य-पूर्व राष्ट्रों का तेल के इजारे के प्रभुत्व के विरुद्ध और तेल के राष्ट्रीयकरण तथा अपने राष्ट्रीय तेल उद्योगों के लिए मध्यर्ष इस आंदोलन का एक प्रमुख तत्त्व था।

इस बात के बावजूद कि ईरान में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को कुचल दिया गया था, उसने अपने पड़ोसी देशों पर स्पष्टतः जानिकारी प्रभाव डाला था और मी० आई० ए० को प्रत्यक्षत महा साम्राज्यवाद-विरोधी कार्रवाइयों के फिर से फूट पड़ने की आशंका थी। जिस में राष्ट्रपति नासिर को एकदम स्वतंत्र नीतियों पर चलते और सीरिया में सामयश्रीय



पारस्परिक राजनय, जो विदेश विभाग के कार्यक्षेत्र में आता था, और वाशिंगटन के वास्तविक, अथोपित लक्ष्यों की सिद्धि की ओर लक्षित गुप्त राजनय, जो सी० आई० ए० के कार्यक्षेत्र में था।

इस प्रसंग में 'एट डेज' पत्रिका ने निम्ना है "जहाँ विदेश विभाग के विश्लेषक अक्सर दीर्घकालिक दृष्टिकोण लेते हुए इस क्षेत्र के मूलभूत प्रश्नों से जुड़े थे और अमरीकी नीति में कुछ सुममति बनाये रखने का यत्न करते थे, वहाँ सी० आई० ए० कमी, जिनके पास साधनों की कोई कमी न थी, दीर्घकालिक अथवा मध्यमकालिक परिप्रेक्ष्य की तकनीक भी बिना रिश्ते बिना नाटकीय कार्रवाइयों और अल्पकालिक समाधानों में प्रवृत्त होते थे।"

इन नाटकीय कार्रवाइयों में से एक एनैन इलेन की मीरिया में सत्ता-परिवर्तन की योजना थी, जहाँ १९५४ में अदीब सीनेकनी की तानाशाही के उन्ने जाने के परिणामस्वरूप सत्ता जनवादी हलकों के हाथों में आ गयी थी।

१९५६ की गरमियों में एजेंट विन्वर रिना को, जो अरबविद्या का विशेष पाठ्यक्रम पूरा कर चुके थे, सी० आई० ए० मुख्यालय में बुलाया गया और एक गुप्त मिशन पर मीरिया जाने का आदेश दिया गया। उनका औपचारिक कार्य "राजदूत की अवैधता, मीरिया में नये कांग्रेस की स्थापना में महापता बनाना और दमिश्क में राजदूतावास के प्रशासनिक महत्त्व में दूतावास-अधिकारियों को महापता देना" था।





बाग्यार दिग्वाने का यत्न किया है, वरन प्रमान के तन्वन साम्राज्यवादी वग में मोचने का तर्कमत्ता नर्ताजा था, त्रिमे विदेन विभाग तथा पैटार्मन का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। कितने ही प्रचारक दलों के बावजूद सी० आई० ए० की हैनियन कमी मी राज्य के भीतर राज्य की नहीं रही है। अमरीकी शानक हलकों के आदेशों की निश्चिन पूर्ति करने हुए सी० आई० ए० हमेशा ही उनकी आक्रामक प्रसारकी आवाधाओं का गुप्त उपकरण हो रही है।

पचाम के दशक में मध्य-पूर्व में सी० आई० ए० की गरगरमियों के वर्णन में यह दृष्टव्य है कि उनका ब्रिटिश गुप्तचरों सेवा के माध घनिष्ठ महसूस था। इस परंपरा का प्रारंभ इराक में हुआ था और ईरान में मुसद्दिक के हटाये जाने की तैयारियों के दौरान यह मजबूत हुई। उस समय जान मिन्कनेयर गुप्तचरों सेवा के प्रधान थे और उनके सहकारी जामूसी के बारे में मनमनी मचाने के शौकीन जार्ज बेंनेडी यंग थे, जिन्होंने १९७६ में यह ऐलान किया था कि के० जी० बी० के एजेंट और तो और, एडवर्ड हीथ की अनुदारदनी सरकार तक में घुस गये हैं।

१९५६ के वसंत में डलेस ने ईवलीड और काहिरा में सी० आई० ए० केड के जेम्स आइकेलबर्गेर को लदन भेजा, जहा उन्होंने यंग के साथ गुप्त वार्ता की। यंग ने उनसे कहा कि मिस्र, सीरिया और सऊदी अरब ब्रिटेन के मार्मिक हितों के लिए गभीर खतरा पैदा कर रहे हैं और इसलिए उनकी सरकारों को निमी भी

कीमती लोगों में भीमिया में व्यवस्था माना  
एक मंडल को गद्दी में उठाकर और नागरिक की हत्या  
करना।

“मुझे मालूम है कि मैं किसी पागलखाने में पहुँच  
रहा हूँ। ईश्वर ने हम देश को फिर से दाद करने  
का काम में रखा था। लेकिन यह सबन बिचकून  
मजदुरा मजदुरा है - मीरियाई सरकार का उलट्टा जाना  
हम सब समय में मी० आर्ट० ए० की कार्यशुची पर  
था ही - हम सब पर अनुमानित नागरिक की हत्या  
करने की योजना भी ईश्वर के लिए बोट मजदुर मजदुर  
ही।

१९५६ में जून के मध्य में मीरिया में एक मजदुर  
एक मजदुर कायम की गद्दी जिसमें ३ भाग पायी  
होती प्रदर्शनीय तथा सामग्रीय दार्जिली और दया  
के दर्जिनिष्ट नागरिक थे। मी० आर्ट० ए० के मुक्त  
ही अपनी दर्जिनिष्ट व्यवस्था की - १ जमाई का मजदुर -  
बहु दार्जिली पहुँच गया। उक्त आयुक्त दया का ईश्वर  
की पुर्नवेला में निर्धारित का आयुक्त और आयुक्त बनना  
का।

एक जून दयावद्ध में आयुक्ती दर्जिनिष्ट की मजदुर  
की एक दयावद्ध निर्धारित बिदा मजदुर

“मीरिया में एक मीरिया मजदुराई मजदुर की  
मजदुराई जिस पर दर्जिनिष्ट की कार्यशुची ए० के  
कार्यशुची के मजदुराई का मजदुर दयावद्ध का मजदुर

पश्चिम-समर्थक और कम्युनिस्टविरोधी नीति पर चलने को तैयार हो।" \*

सीरिया में लगायी गयी सुरंग तैयार थी, मरणात्मक पत्ती को आग दिखाना ही बाकी था। इस कर्म के लिए सी० आई० ए० जिस बारूद का इस्तेमाल करने की सोच रही थी, वह ईरान की ही भानि देना था। इस पैसे को ईंग्लैंड ने चोरी में सीरिया पहुँचाया और अपने एक स्थानीय एजेंट को सौंपा था।

सी० आई० ए० से यह आर्थिक सहायता प्राप्त करके शीर्षस्थ सेनाधिकारियों के बीच विद्यमान दृष्टांतकारियों ने दमिश्क, अलेप्पो, होमस और सामा को काबू में लेने की विस्तृत योजना तैयार की। उनके योजना के अनुसार सभी सीमांत चौकियों को नष्ट कर दिया जाना था और रेडियो स्टेशन को कुचल ले लेकर यह ऐलान किया जाना था कि देश में कम्युनिस्ट वर्गवादी कब्जाने के नेतृत्व में नयी सरकार ने शक्ति ली है।

बाद में योजना में कुछ तब्दीलियाँ की गयीं। वाशिंगटन ने आसकर यह फैसला किया कि नयी सरकार भूतपूर्व सीरियाई तानाशाह अदीब शीशेकी के नेतृत्व में होनी चाहिए, जिन्हें फरवरी, १९१६ में जनवादी गैरिक अफगरो ने मनाख्युत कर दिया था। सी० आई० ए० एजेंट ज़ाफी पागमोर्ट पर फरवरी १९१६ ईस्वी की योजना को बेहतर में आये, जो शीशेकी के

\* Wilbur Crane Eveland, op. cit., p. 193

शामन में सुरक्षा सेवा के प्रधान थे और अब रोम सीरिया के सैनिक अतासे थे। आर्थर क्लोज का इरादा हमनी को अपनी कार के टुक में छिपाकर चोरी लेबनान-सीरिया सीमा के पार ले जाने का था ताकि भूतपूर्व प्रतिगुप्तचर्या अधिकारी की स्थानीय एजेंटों से छुद मुलाकात हो सके और वह उनके साथ सीनेकनी को पुन सत्तामंड करने की योजना पर विचार कर सके।

लेकिन भूतपूर्व तानाशाह को फिर से प्रधानमंत्री बनने की आशाओं को तजना पड़ा। देशानुराग सीरियाई सैनिक अफसरों की मतवर्तता के परिणामस्वरूप यह वासना न हो सकी। ६ नवंबर, १९५६ को सीरियाई सुरक्षा अधिकारियों ने प्रतिश्रियावादी निम्न बुर्जुआ तत्वों और ब'आथ पार्टी के दक्षिण पक्ष की सरकारविरोधी साजिश का परदाफाश कर दिया। प्रधान पट्टयत्रकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया और अन्यो को राजनीतिक पदों से बरखास्त कर दिया गया। सीरिया में एक नयी सरकार की स्थापना की गयी, जिससे ब'आथ पार्टी के उन सभी सदस्यों को निकाल दिया गया था, जिनका पट्टयत्र से संबंध था।

इस प्रकार सी० आई० ए० की सीरियाविरोधी योजनाए पूर्णत ध्वस्त हो गयी। लेकिन जैसा कि वाशिंगटन के घटनाचक्र ने सिद्ध किया सयुक्त राज्य अमरीका के शासक हलकों ने मध्य-पूर्वी जनगण के विरुद्ध अपने गुप्त युद्ध का अंत करने की बात सोची भी नहीं

गद्दीद चौक में साइडों की पुनर्गियों की तोपों

के गोलों के टुकड़ों ने उड़ा दिया था। चौक के किनारों पर स्थित मकान तोपों की गोलाबारी में विह्वल होकर बीरान पड़े थे। वे सभी म्यानकारी रूप में एक जैसे लग रहे थे—जले हुए और कालिघ से डंके हुए। टूटी हुई दीवारों में लोहे के ढांचे के उखड़े हुए निरे मरोड़ी हुई उगलियों की तरह से निकले हुए थे और हवा के भोके टूटी हुई मीढ़ियों से मीमेंट की धूप को बहाकर ला रहे थे

१९७५ के वसंत में, जब देश में प्रचंड दहशुद छिड़ उठा था, विल्बर ईवलेड ने लेबनान की राजधानी में जो देखा, वह यही था। जहां उन्होंने अपने "दुन राजनय" के कैरियर का समापन किया था, उन गहरा की यह दर्दनाक ज्ञानत देखकर उन्हें अपनी भ्रमरात्मा कुछ कचोटनी-सी लगी।

"अपने नीचे मैं जिस बदरगाह को जलने देख रहा था, वह पबीस साल पहले जब मैं बहा पड़ा था आया था, एक गान बदरगाह हुआ करता था," ईवलेड को याद आया। "विगन में मैं लेबनान के आंतरिक मामलों में अमरीका के प्रच्छन्न हमलों के एक सहभागी रहा था। लेबनान का विनाश, जो था अनिवार्य प्रतीत होता था, वस में वस कुछ इस तरह हमारे दम्नदात्री का नतीजा था।" \*

'एट टेंड' पत्रिका ने मीधे-मीधे कहा "सी. आई. ए. ने ही लेबनानी गणराज्य की एका और

\* Wilbur Crane Eveland, *op cit.*, p. 15

समदीय व्यवस्था के घबस के बीज बोये थे । \*

लेबनान के विरुद्ध सी० आई० ए० का पहला अमरीकी कायेस द्वारा मार्च, १९५७ में अन्तर्मासिन आइन्हावर सिद्धांत से घनिष्ठ जूटा हुआ था। यह पहला मौका था कि जब समुक्त राज्य अमरीका ने "कम्पुनिस्ट आक्रमण" से मध्य-पूर्व की रक्षा करने के लिए सशस्त्र सेनाओं का उपयोग करने की अपनी उद्यता की खुले तौर पर घोषणा की थी और राजनीतिक व्यवहार में "यूनियादी अमरीकी हितों की स्थापना को प्रस्तुत किया था। मध्य-पूर्व में अमरीकी नीति के बारे में एक विशेष संदेश में राष्ट्रपति आइन्हावर ने समुक्त राज्य अमरीका की इस क्षमता में अपनी सेनाओं का उपयोग कर सैन्य की आवश्यकता पर जोर दिया और कायेस में तथाकथित मैनिव सहायता तथा सहयोग कार्यक्रम के लिए २० करोड़ डॉलर की मांग की।

लेबनान के पश्चिम समर्थक नेताओं - राष्ट्रपति बामिल शामू और विदेश मंत्री चार्ल्स मलिक - ने आइन्हावर सिद्धांत के लिए अपने पूर्ण समर्थन की गुरु घोषित कर दिया। शामू की मध्य-पूर्व में अमरीकी रणनीति पर चमने की उद्यता ने उनके लिए अमरीकी समर्थन को सुनिश्चित कर दिया। जून १९५७ में होनेवाले समदीय चुनावों की पूर्ववेला में उनके लिए यह समर्थन कोई कम महत्व का नहीं था।

“इलेस चाहते थे कि वह (शामू - सं) अपने पद पर बने रहे, अरब जगत में और बौद्ध नेता ऐसा न था, जो अमरीकी आकांक्षाओं के इतने अधीन हो।” इस प्रसंग में अमरीकी अनुसंधानकर्मी यूजेन एम. फिशर तथा एम० डोरिफ बैस्पूनी ने लिखा है।\*

लेकिन सिर्फ इच्छा ही काफी नहीं थी—शामू को पदासीन रखने के लिए कुछ न कुछ किया जाना जरूरी था। इसलिए १९५७ से बेरुत मध्य-पूर्व में सी० आई० ए० के सामस्त ध्वसकार्य का केंद्र बन गया। मेबरन में अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या एजेण्टों को सी० आई० ए० के बेरुत केंद्र के प्रमुख गोस्न जोगी के अधीन का दिया गया। एलेन इलेस ने मेबरनानी गतिविधियों की पहचान के लिए किम मजबेल्ट को व्यक्तिगत रूप से उभारवाते बना दिया। इस गतिविधि का लक्ष्य था रिव्वा, विरोधों की बदनामी, स्वीकृति, आदि हर उपाय प्राप्त का उपयोग करने हुए चुनावों में शामू और सविह को विजयाना। इस कार्यक्रम के लिए पैसा जरूरी था और सी० आई० ए० ने अपने कठगुलियों के चुनावों में मुक्त हस्त पैसा दिया।

ईसाई लिखते हैं “चुनाव के दौर भर में निर्वासित रूप से मेबरनानी गाउहों में भरे घरे को मेबरन सड़कें आगाह जाया करना था और फिर देर गये रूप से मैं उसे हारवी आर्मीहों के सी० आई० ए० विन कार्यालय

\* Eugene M Fisher and M Cheryl Bassett, *Save Over the Arab World*, Potting Publishing Co., Chicago, 1972, 132.

के लोगो द्वारा फिर से भरे जाने के लिए दूनावास  
सौदा करता था। जल्दी ही मेरी एकदम भफेद छतवानी  
हिसोटी कार राष्ट्रपति प्रसाद के बाहर देखी  
जानेवाली एक आम चीज बन गयी \*

सी० आई० ए० के पैसे ने अपनी अनिष्टकारी  
भूमिका अदा की। अमरीकी कठपुतलो द्वारा हाथ  
खोलकर दी गयी रिश्वतो की बदौलत उन्हें श्यामा  
बहुमत प्राप्त हो गया। लेबनानी संसदीय प्रणाली में  
एक गहरी दरार पैदा हो गयी। जल्दी ही देश भर में  
अमतोष की लहर दौड़ गयी और १९५८ के वमत  
में शामू शासन के विरुद्ध त्रिपोली में विद्रोह फूट पड़ा  
जो गृहयुद्ध में परिणत हो गया।

'एट डेज' पत्रिका ने सही ही टीका की है  
"इसे १७ साल बाद कही अधिक लंबे और रक्तस्त्रित  
गृह कलह का पूर्वगामी सिद्ध होना था। "

लेबनानी इतिहास के इन दोनों त्रासद घटनाक्रमों  
के बीच संबंध प्रत्यक्ष है, जैसे १९७५-७६ में लेबनान  
में दूसरे गृहयुद्ध के भड़काने में सी० आई० ए० की  
प्रच्छन्न सहभागिता भी छिपी हुई नहीं है।

"लेबनान के खूनी गृहयुद्ध में गर्क हो जान के  
साथ कुछ अधिकारियों ने सी० आई० ए० पर लड़ाई  
का प्रच्छन्न रूप से समर्थन करने का आरोप लगाया  
राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में हेनरी किमिज़र के भ्रूणपूर्व



मजदूरों की बात बर्लिन में लिखी है।\*

दूसरा तथ्य के अलावा निम्नलिखित नहीं है। अतः हम प्रकट हो गया है कि इसका मतलब है मो० आर्दे० ए० की एक विशेष तात्कालिक सेवाएँ मजदूरों को मजदूरों की कार्य-वाहियों में सक्रिय भाग ले रही थीं। सेवाओं की एवम में निम्न एक और तात्कालिक दस्तावेजों द्वारा दलों को पैसा दे रही थी और प्रतिनिधि कर रही थी।

मो० आर्दे० ए० ने लेबनान के पनाजी नेताओं के साथ अपने अनिष्ट मकदुमों को गृहयुद्ध के बाद, क्रांति प्रशासन के अधीन भी बनाये रखा। १९८१ में राष्ट्रपति रैगन के मता दूर के बाद में मकदुम और भी बढ़े।

नवंबर १९८० में अमेरिकी मजदूरों के गैर-न्याय रैगन को निर्वाचित करने के निर्णय के बाद, जिन्होंने फिलिस्तीनी मुस्लिम मजदूरों को बार-बार 'आतंकवादी मजदूर' की मजा दी थी, मो० आर्दे० ए० ने पनाजीयों को लेबनान को भीरियाई शान्तिरक्षक सेवा (लेबनान में अरब देशों की शान्तिरक्षक सेवाओं का अंग - स०) और फिलिस्तीनी कमांडो दलों में 'मुक्त' करवाने की एक योजना सुझाई, जिसे इतराएन के सहयोग से कार्यरत दिया जाना था।\*\*

लेबनी में तैयार की गयी गुप्त योजना में फिलिस्तीनियों को पश्चिमी बेरुत में खदेड़ बाहर करने के लिए गृहयुद्ध के पुनरावृत्ति की कल्पना की गयी थी,

\* Ibid., p. 10.

\*\* 8 Days, p. 11.

जब कि इसराएल को, मशरूफ पार्यन्यवादी दलों के साथ सहयोग करते हुए बेकाबा घाटी में तैनात सीरियाई सेनाओं पर प्रहार करना था।

फरवरी, १९८१ में 'मिडिल ईस्ट' पत्रिका ने सैडविच सन्धिया के विवरण प्रकाशित करके लेबनान में सी० आई० ए० की प्रच्छन्न गतिविधियों का एक नया भंडाफोड़ किया। सी० आई० ए० की इस योजना के अनुसार इसराएल को लेबनान के दक्षिण में सीरियाई पौबों को लड़ाई में उतारना था और फिर दक्षिण एसी ईसाइयों के हमले को, जिसे वेस्त के आम-गाम फिनिस्तीनी शरणार्थी निवासियों को नष्ट करना था समर्थन प्रदान करने के लिए उत्तर की नग्न प्रहार करना था। सी० आई० ए० की मान्यता थी कि हमले द्वारा ही लेबनान दक्षिणपथ के हाथों में आ जायगा और फिनिस्तीनी मुक्ति संगठन को नष्ट करके यह योजना फिनिस्तीनी समस्या को हल कर देगी। लेबनी का विश्वास था कि हमले जाईन को रैंप डेविड समझौते में शामिल होने और तथाकथित फिनिस्तीनी स्वायत्तता के बारे में, जिसे फिनिस्तीन को अरब जनता ने निश्चयात्मक रूप में अस्वीकार कर दिया था वार्ता में भाग लेने को मजबूर किया जा सकेगा।

१९८२ की गरमियों में मध्य-पूर्व की स्थिति नए और मनरनाक मोड़ लिया। हाइट हाउस की एरी मिलीभगत से इसराएली सैन्यनष्ट ने लेबनान के मेन्नाक एक नया व्यापकतरंगीय हमला शरू किया और फिनिस्तीनियों तथा लेबनानियों के मिन्नाक अवि

राम और गुलकर जनमहार की नीति बरतने हुए देश के एक बड़े भाग को अपने कब्जे में ले लिया। इसराएली फौज ने बर्बरतम अस्त्रों—कन्स्टर बम, प्लेनेट बम, फास्फोरम बम, नेपाम का प्रयोग किया, माइदा (सीडोन), नवातिया और एस्मूर (टायर) के मुशहाल शहरों को भूमिसात कर दिया और लेबनानी प्रदेश में फिलिस्तीनी शिविरो को जलाकर خاک कर दिया। आक्रमणकारियों ने लेबनानी राष्ट्रवादी देशभक्त शक्तियों और फिलिस्तीनी प्रतिरोध आंदोलन के अंतिम गढ़ पश्चिमी बेरुत के रिहायशी इलाकों को घेरकर छड़हरो में बदल दिया।

विश्व प्रेस ने ठीक ही कहा है कि सौयोनवादी फिलिस्तीनी समस्या को “हल” करने के लिए जिन तरीकों को इस्तेमाल कर रहे हैं, उनकी सिर्फ द्वितीय विश्वयुद्ध के समय नात्सियों के “यहूदी समस्या के हल” से ही तुलना की जा सकती है।

लेकिन ऐसा नहीं लगता कि जघन्य ऐतिहासिक सादृश्यो से आक्रमणकारी के समुद्रपार सरसक तनिक भी सकोच का अनुभव करते हो—वे प्रत्यक्षतः यही मानते हैं कि मध्य-पूर्व में समुक्त राज्य अमरीका की साम्राज्यवादी रणनीति को कार्यरूप देने के मामले में साध्य किसी भी साधन को उचित बना देने हैं।

१९८२ के ग्रीष्म में लेबनान पर इसराएल के आक्रमण ने इस भूमध्यसागरीय देश में अमरीकी सैनिक घुमपैठ के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। शीघ्र ही लेबनान में (३० वर्षों में दूसरी बार) अमरीकी सैनिक

अमेरिकी प्रशासन इस देश में स्थिति को सामान्य बनाने में सहायक "शांति-स्थापक" सेना के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा था, काफी-कुछ सैनिक बच्चे की याद दिमाने लगी। यह बात लेबनानी-इसराएली शांति सम्मेलने पर हस्ताक्षर के बाद, जो वास्तव में लेबनान पर इसराएली, अमेरिकी हुक्मशाही की स्थापना का परिचायक या विरोध उत्पन्न करने आया।

घीष्म, १९८३ के अंत तक स्पष्ट हो गया कि लेबनान में राष्ट्रीय मतस्य की स्थापना में हर तरह से अड़काकर और इसराएल तथा लेबनानी प्रतिपक्षियों को नये कुहियों के लिए उकसाकर रंगन प्रशासन करने लिए एक सामरिक सेतुशीर्ष बनाना और लेबनान में अरब राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन तथा स्वतंत्र राज्यों, सैन्य शौरिया के विरुद्ध सर्प के लिए अड़े में खर्च करना चाहता है।

लेबनान की घटनाओं ने सब और भी अनर्थसूचक बन ले लिया, जब अगस्त के अंत में तथाकथित "इसराएली सेनाओं" में शामिल अमेरिकी सैनिकों ने राष्ट्रीय देशभक्त शक्तियों के दमन में दक्षिण-पूर्व ईसाई सैन्य दलों की सहायता करते हुए सामरिक विवादों में प्रत्यक्ष भाग लेना शुरू कर दिया।

२० सितंबर, १९८३ को लेबनान के गृहयुद्ध में अमेरिकी शिरकत सहसा बढ गयी। उस दिन अमेरिकी सैनिकों ने बेरुत के निकटवर्ती पहाड़ी इलाके पर हस्त गोलावारी की। गोलावारी का आदेश लेबनानी

सेना की मदद करने के उद्देश्य से दिया गया था। यह वियतनाम युद्ध के बाद से अमेरिकी नौसेना का सबसे बड़ी सामरिक कार्रवाई थी। लेबनान के तटीय समुद्र में गस्त लगाते हुए अमेरिकी नौसेना के दो युद्धपोतों ने मुसलमानों की पोखीशनों पर गोले बरसाये। इस तरह से संयुक्त राज्य अमेरिका ने बेरूत के गिर्द की पहाड़ियों में लेबनानी सेना को अपनी महत्वपूर्ण पोखीशने हाथ से न जाने देने में मदद करने के लिए सामरिक कार्रवाइयों में अपनी शिरकत की। पैटागॉन के प्रवक्ताओं ने बताया कि अमेरिकी युद्धपोतों ने एक दिन के भीतर अपनी १ इंची तोपों से ३०० से अधिक गोले बरसाये थे।

अरब देशों के सारे प्रगतिशील जनमत की यह है कि लेबनान के विवाद में अमेरिका का प्रत्यक्ष सैनिक हस्तक्षेप नाम अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की निशाना है, जिसका महाराष्ट्र वाशिंगटन हमला से रहा है कि इन छोटे से भूमध्यसागरीय देश पर अपनी हानिकारी कायम कर गये।

हाथ के समय में अफगानिस्तान मुक्ति के लिये १०० आई० ए० का एक मुख्य मध्य बन गया है। १९७८ के समय में अफगानिस्तान, जिनके समय में सबसे गिराई हुए देशों में गिना जाता था, अफगान में सत्याग लगाकर खैबरखी गंदी में आ गया। इंदीरा गांधी ने अफगान जनता के लिए मासिकी उपकरण और साधनात्मकता निर्भरता से मुक्त होने और उन्नति विकास तथा प्रगति के पथ को उन्मुक्त कर दिया।

पाना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है लेकिन अवामी सरकार की पहली ही आज्ञप्तियों ने दूरगामी सामाजिक-आर्थिक रूपांतरणों की बुनियाद रख दी।

उमोदारो और मूदखोरो के बजों की मसूची स्थियों की मुक्ति, नया विवाह कानून और भूमि मुशार के बारे में प्रसिद्ध आज्ञप्ति नं० ८ - सभी ऐसे कदम थे कि जिन्हें अभी हाल तक अकल्पनीय समझा जाता था और वे लाखों उत्पीड़ितों को संबंधित कार्रवाइयों के लिए जागृत करने लगे।

शानि के शारभिक दिनों में ही अफगानिस्तान के भूतपूर्व नामक पुरख की तरफ, इयूगेंड रेखा के उस पार पाकिस्तानी प्रदेश में भागकर चले गये जहाँ वे पठान कबीले रहते हैं, जिन्हें अंग्रेजों ने पिछली सदी में अपने वनन में काटकर अलग कर दिया था।

निकातिकागियों ने इस्लाम के रक्षार्थ जिहाद के नारे लगाकर अफगानिस्तान में छोटे-छोटे गिराहों को भेजना शुरू कर दिया जो वहाँ अलग घलग गाँवों में हमले करने और अफगानिस्तानी अवामी जमहूरी के सदस्यों, ग्रामीण अध्यापकों महकागी आदामन कार्यकर्ताओं और नयी सरकार के सभी समर्थकों को निर्ममतापूर्वक हत्याग करने थे।

यद्यपि नोडफोड और आतकवादी कार्रवाइयाँ न केवल स्थिति में अस्थिरता उत्पन्न की पर दम्यगणात्मक लिया कि मुमज्जन शिविंग और अह्दा के बाहर से वित्तीय सहायता और हथियारों और

निदेशकों के बिना उनके प्रयासों का विफल होना अवश्यभावी है।

इस बात को साम्राज्यवादियों ने भी समझ लिया और उन्होंने जाति के फौरन ही बाद स्थानीय प्रतिस्पर्धावादियों को अपने मुख्य हथियार की तरह से इस्तेमाल करते हुए नयी व्यवस्था के विरुद्ध अघोषित युद्ध छेड़ दिया। मिसाल के लिए, ठेठ अप्रैल, १९७८ में ही पश्चिमी प्रचार ने विभिन्न सामंती कुलों द्वारा जुड़ा हुआ हथियारबंद गिरोहों को "राजनीतिक संगठन" घोषित कर दिया था।

जनवरी, १९८० में पाकिस्तान में हुई इस्लामी सम्मेलन संगठन की बैठक में अफगान प्रतिस्पर्धावादियों का प्रतिनिधित्व पाकिस्तान में आधारित छ पाटियों और गुटों ने किया। ये सभी चरम दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी संगठन हैं और उनका "जिहाद" का नारा अफगानिस्तान के बड़े बुर्जुआजी और सामंती भूमिालीनों के पुरानी व्यवस्था को बहाल करने और अपने बर्तते हुए प्रभुत्व को पुनः प्राप्त करने के प्रयासों के लिए एक आवरण मात्र है। हिस्बे इस्लामी, जो अफगान प्रतिजातिकारी संगठनों में सबसे बड़ा और सर्वाधिक संगठित है, के नेता गुलबुदीन हिकमतयार हैं, जो जाति के पहले बुद्धू मूढ़ों में एक बड़े जमींदार थे। हिस्बे इस्लामी का राजनीतिक कार्यक्रम अफगानिस्तान के जनवादी प्रगतिशील शासन को उलटना है। इसे वेरो रुढ़िवादी भावों की आदर दिया जाना है, जैसे औरतों के लिए बुना





निदेशको के बिना उनके प्रयामों का बिना  
अवश्यभावी है।

इस बात को साम्राज्यवादियों ने भी कहा  
और उन्होंने क्रांति के फौरन ही बाद स्थानीय  
वादियों को अपने मुख्य हथियार की तरह बेच  
करते हुए नयी व्यवस्था के विरुद्ध अशांति फैला  
दिया। मिसाल के लिए, ठेठ अप्रैल, १९१८।  
पश्चिमी प्रचार ने विभिन्न सामग्री कुम्भों का  
हथियारबंद गिरोहों को "राजनीतिक सच" फैला  
कर दिया था।

श्रम की अनिवार्यता, बालक-बालिकाओं की अलग शिक्षा, सरकारी कर्मचारियों के लिए पश्चिमी पहनावे के बजाय "राष्ट्रीय पोशाक" और धराब तथा जुए पर पाबंदी। तिस पर भी "पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध मार्च" हिक्मतयार को सी० आई० ए० और इसराएल के मोम्साद के साथ पनिष्ठ सहयोग करने से नहीं रोका।

अफगानिस्तानी कौमी इस्लामी मुहाज के नेता मयद अहमद जिलानी और एक अन्य प्रतिभातिकारी मोरचे के नेता भुजादीदी सिबगतउल्लाह खानदानी पीर हैं, जो हिक्मतयार की ही तरह मजहबी लफ्फाजी या इस्तेमाल अपने प्रतिभातिकारी कार्यक्रम पर परदा डालने के लिए करते हैं। दोनों ही उन सामान कुलों के हैं, जिनकी अफगानिस्तान के विभिन्न इलाकों में बड़ी-बड़ी जमीदारिया थी। अफगानिस्तान की जमान-ए-इस्लामी के नेता बुराहानुद्दीन रब्बानी भी गामन कुल के ही हैं। ज़ाति के पहले उनकी काबुल और बदगशा कुलों में विशाल जमीदारिया थी और वह ब्रिटेन और अमरीका को कराकुल (पोस्तीन) की थोक कंगेज किया करते थे। हिक्मतयार की ही तरह रब्बानी ने भी सी० आई० ए० के साथ पनिष्ठ गपक है और उसमें वह पैसे और निर्देश प्रान्न करते हैं।

अब्रैल ज़ाति के फौरन ही बाद प्रसिद्ध अफगानिस्तान-विरोधज्ञ, सी० आई० ए० एग्नेट मुई मुई काबुल पहुँचे, ताकि अफगान प्रतिभातिकारियों में गपक स्थापित कर सके। अपने कार्यभार में वह अगस्त १९९१

निदेशको के बिना उनके प्रयासों का विफल  
अवश्यभावी है।

इस बात को साम्राज्यवादियों ने भी समझा  
और उन्होंने जाति के फौरन ही बाद स्थानीय प्रजा  
वादियों को अपने मुख्य हथियार की तरह में इस्ते  
करते हुए नयी व्यवस्था के विरुद्ध अथोपनि पुन  
दिया। मिसाल के लिए, डेड अप्रैल १९३८ में  
पश्चिमी प्रचार ने विभिन्न सामग्री बुनो द्वारा न  
हथियारबंद गिरोहों को "राजनीतिक संगठन" घो  
कर दिया था।

जनवरी, १९८० में पारिस्मान में हुई इंग  
सम्मेलन संगठन की बैठक में अफगान प्रजा  
वादियों का प्रतिनिधित्व पारिस्मान में आयोजित  
पार्टियों और गुटों ने किया। वे सभी वर्ग दक्षिण  
राष्ट्रवादी संगठन हैं और उनका विचार का ता  
अफगानिस्तान के बड़े बुद्धिवादी और सामग्री भूमिका  
के पुरानी व्यवस्था को बहाल करने और जन को  
हुए प्रमुख को पुन प्राप्त करने के प्रयास  
के लिए एक आवश्यक माध्यम है। जिस इस्लामी  
को अफगान प्रजावादी संगठन में सबसे  
बड़ा और सर्वोच्च संगठन है वह नेता सुबुद्धि  
हिकमतदार है जो वर्तन के पत्र बुद्धि गुरु म  
एक बड़े इस्लाम है। जिस इस्लामी का सदस्य  
बर्तमान अफगानिस्तान के जनवादी प्रजावादी संगठन  
को उद्देश्य है। इन सभी वर्गवादी का अर्थ  
में विचार है, जिन

जिने की अनिवार्यता, बालक-बालिकाओं की अलग उम्र, सरकारी कर्मचारियों के लिए पश्चिमी पहनावे : बजाय "राष्ट्रीय पोशाक" और शराब तथा जुए पर पाबंदी। तिस पर भी "पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध जर्ज" हिक्मतयार को सी० आई० ए० और इसराएल : मोम्माद के साथ घनिष्ठ सहयोग करने से नहीं जाता।

अफगानिस्तानी कौमी इस्लामी मुहाज्र के नेता सैयद अब्दुल जिलानी और एक अन्य प्रतिजातिकारी पोरबे के नेता मुजादीदी सिबगत-उल्लाह मानदानी पीर हैं, जो हिक्मतयार की ही तरह मजहबी लफ्फाजी का इस्तेमाल अपने प्रतिजातिकारी कार्यक्रम पर परदा डालने के लिए करते हैं। दोनों ही उन सामंत कुलों के हैं, जिनकी अफगानिस्तान के विभिन्न इलाकों में बड़ी-बड़ी जमीदारियां थीं। अफगानिस्तान की जमात-ए-इस्लामी के नेता बुराहानुद्दीन रब्बानी भी सामंत कुल के ही हैं। जाति के पहले उनकी काबुल और बदशशा कुलों में विशाल जमीदारियां थी और वह ब्रिटेन और अमरीका को कराकुल (पोम्तीन) की थोक फरोस्न दिया करते थे। हिक्मतयार की ही तरह रब्बानी के भी सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ सम्पर्क है और उसमें वह पैसे और निर्देश प्राप्त करते हैं।

अरब जाति के फौरन ही बाद प्रसिद्ध अफगानिस्तान-विशेषज्ञ, सी० आई० ए० एजेंट सुई दूरे काबुल पहुँचे, ताकि अफगान प्रतिजातिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर सकें। अपने कार्यभार में वह असफल रहे

और नवंबर, १९७८ में अफगानिस्तान से निष्क्रान्त कर दिये जाने पर वह पाकिस्तान चले गये और वहाँ सी० आई० ए० एजेंटों की एक टोली का मकान करने लगे। उनकी टोली मजम्बू प्रतिक्रान्तिकारी निरोहों का समन्वयन केंद्र बन गयी। लगता है कि पाक-अरबान मीमात पर अन्य अमरीकी गुप्तचर्या एजेंट भी मादक द्रव्य निरोध प्रशासन और एशिया फाउंडेशन के आवरण में इसी तरह के कार्यों का निर्वहन करते हैं।

१९७७ में इस्लामाबाद में सी० आई० ए० केंद्र के प्रमुख जॉन रैगन थे। उनके सहकारी रॉबर्ट तैर्न नामक अमरीकी "राजनयज्ञ" थे, जिन्हें १९७४ में ही अवाछनीय व्यक्ति घोषित करके अफगानिस्तान से निकाल दिया गया था। अप्रैल क्रांति के बाद उनकी सहायता के लिए सत्ता-परिवर्तन और अन्तर्धर्म क्रांति के विरोधज्ञ ली रॉबिन्सन, रॉजर्स बॉक और वान डेविल सऊदी अरब से इस्लामाबाद पहुंच गये। ये "सामान्य अमरीकी" अपनी गतिविधियों का पाकिस्तानी राष्ट्रपति के वैदेशिक मामलों के मलाहकार आगा शाही और पाकिस्तानी विदेश सचिव नवाज शाही के साथ समन्वय करते थे। आगा शाही का अपने भाई, संपुक्त राज्य अमरीका में पाकिस्तानी राजदूत आगा मलीक के जरिए सी० आई० ए० के साथ अरसे से संबंध था, जब कि नवाज शाही की अफगानिस्तान के भूतपूर्व शाही शाहदान के साथ रिश्तेदारी थी।

अमरीकी तथा विश्व जनमत के आगे अफगान प्रतिक्रान्तिकारियों को वित्तीय सहायता देने और उन्हें

प्रतिष्ठित तथा हथियार भेजने का औचित्य-स्थापन करने के लिए वाशिंगटन अफगानिस्तान के जातिकारी नेताओं पर मजबूत राज्य अमेरीका के प्रति शत्रुतापूर्ण कार्यों का आरोप मढ़ने का कोई बहाना खोज रहा था। इस तरह का बहाना १४ फरवरी १९७६ को काबुल में अमेरीकी राजदूत एंड्रयू डय्य की हत्या में बना। डय्य सी० आई० ए० की वाशिंगटन और काबुल के बीच पूर्ण विच्छेद करवाने की शिष्ट के शिकार हुए।

डवर्ड के साप्ताहिक 'व्जिट्स' के अनुसार अमेरीकी सरकार ने डय्य की हत्या का अफगानिस्तान के साथ संबंध-विच्छेद करने के बहाने की तरह उपयोग किया। आर्थिक सहायता सबधी सभी समझौतों और कर्जों को मजबूत कर दिया गया। डय्य के बदल विभीमने उनराधिकारी की नामजदगी नहीं हुई और एडम काबुल पर मानवाधिकारों के उत्खनन व शरण मगाये जाने लगे।

नूर मुहम्मद तर्कती की हत्या और हाकिम उल्लाह अमीन द्वारा मला के हथियारे जाने की पुर्वकता में सी० आई० ए० ने अफगानिस्तान व विन्ड अफगान पत्रकारों को विशेषकर लेख कर दिया। अगस्त १९७६ में जॉन कैमल पाकिस्तानी सुरक्षा व प्रधान अतिरिक्तियों - राडीर और आलम - म मिन और उनसे अफगानिस्तान में आगामी परिवर्तना व मिनीगन में परिवर्तन के बारे में सहमति हा मया। डय्यस है कि मिन को इन परिवर्तनों की पक्ष ही सुचना मिन कभी थी। इस बैठक में सी० आई० ए० कया पाकिस्तानी

मुफ्तचर्या द्वारा जनवादी अफगानिस्तान के विचार  
कार्रवाई का एक समुक्त कार्यक्रम स्वीकार किया गया।

सी० आई० ए० प्रमुखों द्वारा इस कार्यक्रम के  
अनुमोदित किये जाने के बाद जॉन रैमन उन पाकिस्तानी  
जनरलों से मिले, जिन्हें कुछ ही बाद अफगानिस्तान  
में समे इलाकों के कमांडर नियुक्त किया गया। रैमन  
और मैसई ने पाकिस्तानी सूचना मंत्री हाजिद हबी  
से भी भेट की। उनके साथ उन्होंने अफगानिस्तानविरोधी  
प्रचार अभियान के बारे में विस्तार में विचार  
किया।

आगे चलकर मैसई ने तीर्थस्थ पाकिस्तानी क्षेत्र  
प्रकारियों के साथ मिलकर बुरहानुद्दीन रब्बानी के  
नेतृत्व में तथाकथित इस्लामी अनुमन-ए-विज्जत  
अफगानिस्तान की स्थापना करनी शुरू की।

मध्य में है। मगर फ़ाइट हाउस उनकी ज़ोर  
करना ही धैर्यस्वर समझता है और अमरीकी प्रचारण  
साथ जोर लगाकर सी० आई० ए० द्वारा वॉरिंग रण  
और और प्रभावकों को "स्वाधीनता संधियों" से  
नग्न वेदा करता है।

समझता है कि अमरीकी सागर अपने ईरानी उप  
बागी राजनयिकों की गुटों के सागरविरोधी व्यवहार  
को भी "स्वाधीनता संधियों" का अंग ही समझते हैं।  
विश्व युद्ध में प्रचारित ईरान में तैयार सन्तानिक  
को को समझती है तैयारियाँ में सी० आई० ए० की  
संज्ञित सन्तानिकता के अनेक समाचार बता जाते हैं  
हैं वे ?

१९८१ की गरमियों में वाशिंगटन में हुए एक पत्रकार सम्मेलन में अमरीकी पत्रकार क्लार्क किमिजर ने ईरानी उत्प्रवासियों की कुछ गुप्त दस्तावेजों को उद्घुन किया, जो ईरान में सैनिक सत्ता-परिवर्तन के लिए पश्चिम की तैयारियों और अमरीकी निदेशन को प्रमाणित करती थी।

इन दस्तावेजों से यह पता चलता था कि ईरानी शक्ति के विरुद्ध पड़्यत्र में शाह की अग्ररक्षक सेना और सुरक्षा पुलिस के भूतपूर्व प्रमुख तथा राजमन्त्र के अन्य समर्थक ऐक्यबद्ध थे। उनका लक्ष्य ईरानी सरकार को उलटना और देश में अमरीका-समर्थक सरकार की स्थापना करना था। पड़्यत्रकारियों का मुख्यालय वाशिंगटन में, ह्वाइट हाउस से कुछ ही बंदमो के फासले पर, स्थित था और उन्होंने ल्यूइस ब्रैपटन एमो निण्ड्स नाम की प्राइवेट कंपनी को अपना आवरण बना रखा था। पड़्यत्र में केंद्रीय व्यक्ति थे ईरानी नागरिक, वाशिंगटन में शाह के दूतावास में भूतपूर्व परामर्शदाता असद जोमायू और अमरीकी नागरिक मयुक्त राज्य अमरीका की वेस्ट पॉइंट सैनिक अकादमी के स्नातक जॉन मैमफर्ड।

पत्रकार सम्मेलन में प्रकट हुआ कि पड़्यत्रकारियों ने ईरान की इस आगामी अमरीका-समर्थक सरकार में प्रधान मंत्री पद के लिए उम्मीदवार का चयन भी कर लिया था। यह पद जनरल बहगम आग्विआना को मिलना था, जो इस समय बेरिस में रह रहे हैं।

सत्ता-परिवर्तन के सगटनवर्त्ताओं के पाम बढ़न



बड़ी धन-राशि उपलब्ध थी। एक निर्देश के अनुसार केवल पश्चिमी देशों के जनमन को प्रभावित करने के लिए प्रति मास ५ लाख डॉलर खर्च किये जाने थे।

१९८२ के वमन में तेहरान में भूतपूर्व ईरानी विदेश मंत्री मादिक कुतुबजादे द्वारा रचे गये आयातुल्लाह मुर्मनी की हत्या के पड्यत्र का भडाफोड करने का ऐलान किया गया। इस पड्यत्र के काफी व्योरे अभी प्रकट नहीं किये गये हैं, मगर कुछ प्रेसको का विज्ञान है कि इस बार भी पड्यत्र के मूत्र अनन सैली हो पहुचेंगे।

स्वतंत्र देशों के विरुद्ध सी० आई० ए० की ध्वनात्मक कार्रवाइयो के बारे में दुनिया को आये दिन नयी नयी खबरे सुनने को मिलती हैं। ऐसी ही सबसे ताजा खबरो में से एक यमनी लोक गणराज्य से आयी है। जहा मार्च, १९८२ में सुरक्षा सेवा ने सी० आई० ए० द्वारा प्रशिक्षित एक आतंकवादी गुट का पता लगाया, जो बडे पैमाने पर तोडफोड और राजनीतिक हत्याएं करने के लिए देश में चोरी से घुस आया था। अदन में खुले मुकदमे के दौरान यह प्रकट हुआ कि इन दक्षिण यमनी उत्प्रवासियों को अमरीकी और ब्रिटिश प्रशिक्षको ने भरती और प्रशिक्षित किया था। पड्यत्र में दो चरण थे—तेल भंडारों, बिजलीघरों तथा अन्य औद्योगिक उद्यमों को विस्फोटों द्वारा ध्वंस करना, जिनमे देश में दहनत मच जाये और फिर देश के नेताओं और यमनी समाजवादी पार्टी के सदस्यों की हत्याओं का मिलमिला।

पर्यप्त असफल रहा — जैसे सैग्ली की ऐसी वित्तनी  
 ही और ही योजनाएँ भी विफल रही हैं। लेकिन फिर  
 भी यह बात नहीं भुलायी जानी चाहिए कि अभग्न्यवश  
 अन्तर्राष्ट्रीय आतङ्कवाद के उपकरण हमेशा ही निशाना  
 नहीं चूकते। आज जब संयुक्त राज्य अमरीका ने लगभग  
 सारे ही विश्व को अपने “दुनियादी हितों” का क्षेत्र  
 घोषित कर दिया है, संसार के पारस्परिक रूप में  
 विशेषकर विस्फोटक माने जानेवाले इलाकों में तनाव  
 अपने त्रातिक बिंदु पर पहुँच गये हैं। सम्भवतः सर्वोपरि  
 यह बात मध्य-पूर्व और दक्षिण एशिया पर लागू होती  
 है। इन प्रदेशों की बाहुदभरे एक विशाल पीछे में तुलना  
 की जा सकती है, जिसमें वाशिंगटन अन्तर्राष्ट्रीय आतङ्क-  
 वाद के अपराधिक आचरणों को घुने तौर पर प्रोत्साहन  
 देकर पत्तीना लगाने की कोशिश कर रहा है।

## अफ्रीका में नये-नये राज खुलते हैं

“वह तुझसे प्यार करने का दम भरता है। उस यह तो देख कि वह तेरे लिए क्या करता है!” जब भी कोई नया अमरीकी राष्ट्रपति अपने पद की शपथ ग्रहण करते समय अपने उद्घाटन भाषण में यह वचन देता है कि संयुक्त राज्य अमरीका उत्पीड़ित देशों के न्याय्य सघर्ष का समर्थन करेगा, जनतंत्र को सुदृढ़ करने के लिए काम करेगा और नस्लवाद, र्वभेद और भेदभाव के विरुद्ध सघर्ष करेगा, तो यह सेनेगाली कहावत हमेशा ही याद आ जाती है।

१९८१ में पदाह्म होने पर राष्ट्रपति रैगन ने इस परंपरा में कुछ परिवर्तन करने का निश्चय लिया। अपने चुनाव अभियान के दौरान ही उन्होंने कहा रास्ता अपनाने का और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य तथा उन देशों के भी सदस्य में, जिन्होंने साम्राज्यवादी हुकमशाही को अस्वीकार कर दिया था और प्रगतिशील सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण करना शुरू कर दिया था, संयुक्त राज्य अमरीका की नीति को बदलने का प्रयत्न किया था। रॉनल्ड रैगन ने वाशिंगटन की राजनीतिक शब्दावली में एक नयी परिपाटी का प्रचलन किया है-

आज ह्वाइट हाउस मसलवाद और रंगभेद के खिलाफ लड़नेवाले दक्षिण-पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन ( स्वापो ) और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस सहित सभी अफ्रीकी मुक्ति आंदोलनों को "अंतराष्ट्रीय आतंकवाद" का समानार्थक मानता है। इसके बाद अगर अफ्रीकी राष्ट्रपति दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को आधिकारिक रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका का 'मित्र' होने की मंजा देने हैं, तो इससे किसी को भी अचरज नहीं होगा।

राष्ट्रपति रैगन की इस धुली स्वीकारोक्ति ने कम अफ्रीका में अमेरिकी नीति के वास्तविक लक्ष्यों को एक बार फिर जाहिर ही किया है और ये लक्ष्य हैं राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का तनोन्धेदन करना, प्रगतिशील देशों में अस्थिरता उत्पन्न करना, आतंकवादों और प्रतिक्रियावादी शासनो को सर्वतोमुखी समर्थन देना, और सामरिक दृष्टि से बहुत्वपूर्ण अफ्रीकी इलाकों में अमेरिकी सैनिक-राजनीतिक उपस्थिति कायम करना।

अफ्रीका के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रसारवादी योजनाओं में सी० आई० ए० को एक विशेष भूमिका है। अगस्त, १९८१ में अमेरिकी कांग्रेस के प्रतिनिधि सदन की एक विशेष समिति ने निर्णय किया कि अफ्रीका में सी० आई० ए० की प्रच्छन्न कार्रवाइयों में पैसा लगाना अत्यावश्यक है। प्रेस रिपोर्टों के अनुसार रैगन प्रशासन ने सी० आई० ए० को अफ्रीका में कोरा परवाना दे दिया है और उसके सारे गह्रित कार्यों की पूर्ण गोपनीयता को प्रत्याभूत किया है। सी० आई० ए०

के मुख्य सक्ष्यों में इथियोपिया, अंगोला, मोजाम्बिक, जिम्बाब्वे, तजानिया, जाम्बिया, कांगो लोक गणराज्य, बेनिन, सीरिया, मारोशम, मदागास्कर, गिनी-बिसाऊ, गिनी, ज़ाइर और कीनिया शामिल हैं। स्वाभाविकतः, हर देश के लिए अलग विशिष्ट सक्ष्य है। सी० आई० ए० का मिशन उन शासनों को मजबूत करने के अपने प्रयासों को बढ़ाता है, जो नवउपनिवेशवादियों के साथ सहयोग करने को और ऐसे मूलगामी सामाजिक-आर्थिक रूपांतरणों को कार्यरूप देने से बाध आने को तैयार हैं, जो अमरीकी इजारे के हितों का अनिश्चय कर सकते हैं। दूसरी ओर, चूंकि अफ्रीका को "बुनियादी अमरीकी हितों" का क्षेत्र घोषित कर दिया गया है, इसलिए सी० आई० ए० को उन सभी के खिलाफ किसी भी साधन का उपयोग करने की खुली छूट दे दी गयी है, जो वाशिंगटन की नीति में आड़े आने की जुर्रत करते हैं।

अफ्रीका में सी० आई० ए० की कार्रवाइयों का इतिहास अफ्रीकी स्वतंत्रता संग्रामियों के विरुद्ध पाशाविष अत्याचारों से परिपूर्ण है।

भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट जॉन स्टॉन्डन ने 'दुश्मनों की तलाश में' शीर्षक अपनी पुस्तक में लिखा है कि सेंट्रल इटलीजिस एजेंसी की ध्वसात्मक गतिविधियाँ लगभग सारे ही अफ्रीकी देशों में फैली हुई हैं। सी० आई० ए० के अधिक जगविदित बायों में पत्नीस लुमुबा की हत्या, क्वामे एन्नुमा का सत्ता में हटाया जाना, अंगोला में साविबी के गिरोहों को

सहायता और बेनिन में सत्ता-परिवर्तन का प्रयास जाने है।

राजनीतिक हत्या अफ्रीका में सी० आई० ए० का एक प्रिय हथकड़ा है। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों को कमजोर करने और समाजवाद की ओर अभिमुख देशों को डराने के प्रयास में लेम्बी के विशेषज्ञ लोक-प्रिय अफ्रीकी नेताओं को "दूर" कर देते हैं और वाशिंगटन के आगे झुकने से इन्कार करनेवाली विधिसम्मत सरकारों को उलट देते हैं। यह कहना ही काफी होगा कि पिछले दो दशकों में अफ्रीका में जो ४० से अधिक सत्ता-परिवर्तन हुए हैं, उनमें से अधिकांश सी० आई० ए० द्वारा ही रचे और क्रियान्वित किये गये थे।

. . .

संयुक्त राज्य अमरीका के महायुक्त विदेश मंत्री (अफ्रीकी मामलों) चैस्टर ए० थॉकर ने जून, १९८१ में कहा था "दक्षिणी अफ्रीका—आइर से लेकर कंप (आशा अतीत-त) तक—में हमारी दिलचस्पी हमारे द्वारा इस क्षेत्र के संयुक्त राज्य अमरीका तथा पश्चिमी विश्व के लिए सामरिक, राजनीतिक तथा आर्थिक महत्व की मान्यता से उत्पन्न होती है। दाव इतने ऊँचे हैं हमारे पार-पारिक हितों को खतरे इतने ज्यादा हैं और, सर्वोपरि दक्षिणी अफ्रीका के जनगण के लिए कीमत इतनी भारी है कि हम इस प्रदेश की चुनौतियों में मुह मोड़ नहीं

सकते।" \* मचमुच, दक्षिणी अफ्रीका की "कुल-  
तियों का सामना करने" के लिए अमरीका डण्ड  
उठाये जानेवाले कदम हाल के समय में बहुत स्पष्ट  
हो गये हैं, घामकर जहां तक कि वे सीमान्त राज्यों  
में और नसलवादी दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध सशस्त्र  
अफ्रीकी मुक्ति पार्टियों से मध्य रखने हैं।

सी० आई० ए० ने अफ्रीकी देशों में प्रगतिशील  
प्रवृत्तियों को कमजोर करने और नसलवादी तथा प्रति-  
क्रियावादी शक्तियों की स्थिति को मजबूत करने के  
लिए बीसियों कार्रवाइया की हैं। इनमें से किसी  
ही कार्रवाइयो का परदाफास हो गया है।

१९७५ में सी० आई० ए० ने अंगोला में—अगर  
वियतनाम में अमरीकी आक्रमण को अन्त रहने दिया  
जाये, तो—अपनी युद्धोत्तर वर्षों की सबसे बड़ी कार्र-  
वाई शुरू की।

अंगोली जनता ने अंगोली स्वतंत्रता जन-आंदोलन  
( एम० पी० एल० ए० ) पार्टी के नेतृत्व में वर्षों के  
प्रघर संघर्ष के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की। ११ नवंबर,  
१९७५ को अंगोला लोक गणराज्य की उद्घोषणा की  
गयी और सप्ताह के अधिकांश राज्यों ने उसे मान्यता  
प्रदान कर दी। लेकिन उपनिवेशवाद के अवशेषों,  
दक्षिण अफ्रीकी नसलवाद और साम्राज्यवादी शक्तियों  
के विरुद्ध संघर्ष को समर्पित प्रगतिशील शक्तियों की

इस विषय को प्रिटोरिया में और विशेषकर वाशिंगटन में समझ नहीं लिया गया।

अमरीकी प्रशासन ने तत्काल नयी लोकप्रिय सरकार के विरुद्ध खुले तौर पर सन्तुष्टपूर्ण रवैया अपना लिया और अपनी कार्रवाइयों को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के साथ समन्वित करते हुए उसे बनपूर्वक उत्पटन की रोक लगा दी। सी० आर्च० ए० को अगोला की पूर्ण स्वतन्त्रता के राष्ट्रीय मण (यूनीटा) और अगोला की स्वतन्त्रता के राष्ट्रीय मोर्चे (एफ० एन० एफ० ए०) की सहायता के लिए बोर्ड १० करोड़ इन्डियन डॉलर भेजे। ये प्रतिनिधिकारी गुट है जिसके नेता सी० आर्च० ए० के बहनपुत्रने भोनाम गाबिबी और होबेन गेबेनो है। अमरीकी वायु सेना के परिवहन विमानों ने आइर में स्थित यूनीटा और एफ० एन० ए० के अड्डों को इंधन और गोलाबारूद पहुंचाये। प्रतिनिधिकारी गिरोहों के पास अमरीकी सैनिक सहायता और प्रशिक्षण पहुंच गया। अमरीकी डाढ़े के सैनिकों ने अगोला के लिवाक सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया।

१९८१ में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य गुल्ता गुल्ता (बोम्ब) के एक भूतपूर्व एजेंट गार्डेन बिटर ने एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें अगोला में सी० आर्च० ए० तथा बोम्ब के बीच सहयोग का विस्तृत वर्णन दिया गया था। नाम नीचे में बिटर ने बताया कि सी० आर्च० ए० तथा बोम्ब एफ० पी० एफ० ए० की सरकार की उत्पटने के अगले सभी प्रयासों में पूर्ण रूप से



बनाये रखते थे। अगोला में अमरीकी-दक्षिण अरीकी हस्तक्षेप के दौरान उनके प्रतिनिधियों की जादर के नियमित बैठके होती थी और बाँसा के निर्देशक के सी० आई० ए० के शीर्षस्थ अधिकारियों से परामर्श के लिए दो बार वाशिंगटन की यात्रा की।

इन ध्वमकारी गिरोहों—यूनीटा और एफ० एन० एल० ए०—के नेताओं, सावित्री और रोवेरों, को सी० आई० ए० का पूर्णतम समर्थन प्राप्त था। वेद कि पना चला, रोवेरों को अपने अमरीकी भागियों में १०,००० डॉलर सामाना मिला करते थे।

मेकिन, मयुक्त राज्य अमरीका के इस को समर्थन के बावजूद, यूनीटा और एफ० एन० एल० ए० की मैजिक स्थिति तेज़ी से बिगड़ती गयी और इन्हीं दक्षिण अरीकी गणराज्य की नियमित सेनाओं को भी अगोला के विरुद्ध लड़ाई में उतर आना पड़ा।

नवोन्मूलन गणराज्य ने, त्रिगके पास न बने अपनी कोई सेना ही थी और न दक्षिण अरीकी आक्रमण तथा आंतरिक प्रतिक्रियाकारियों द्वारा दिये जा रहे ध्वमचार्य का निरोध करने के पर्याप्त साधन ही थे। मरायना के लिए समाजवादी देशों की और मुर हिला। अन्य अन्तर्गन्तीयवादी वर्गस्थ के प्रति निरुत्साह समाजवादी देशों ने अगोला को इतिवार, संवेदनक किर्किस्कीय सामान और बावु-गदार्थ भेजे। इसके अलावा बावुई मैजिक दृष्टिवा भी मरायना के लिए अनेक पड़ोसी। इस मरायना ने अगोला के लिए प्रत्यक्ष की मरहम पर आये मरने को दूर कराया और एन०

के साथ अपने देश के निर्माण में लगना सभव कर दिया। अलबत्ता अंगोला की सरकार ने क्यूबा से जब तक दक्षिण अफ्रीकी आक्रमण का खतरा बना रहता है, तब तक अपने सैनिक वही रहने देने का अनुरोध किया। यह एक पूर्णतः विधिमम्मल अनुरोध या-संयुक्त राष्ट्र सभ का घोषणापत्र एक प्रभुतामय राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र से सहायता का अनुरोध किये जाने के अधिकार को मान्यता देता है।

“क्यूबाई सैनिक अंगोली सरकार के अनुरोध पर अंगोला आये थे, क्योंकि देश हस्तक्षेप का सर्वोपरि तत्त्ववादी दक्षिण अफ्रीकी सेना के हस्तक्षेप का शिकार हो गया था,” एम० पी० एल० ए० प्रमिक पार्टी के राजनीतिक व्यूरो के सदस्य तथा सचिव सूसीओ सारा ने जनवरी, १९८२ में कहा। ‘यह अनुरोध संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र में सन्निहित विधिमम्मल प्रति-रक्षा के अधिकार पर आधारित था।”

अंगोला में सी० आई० ए० की कार्रवाई ने सारी दुनिया में विरोध की लहर पैदा कर दी। अमरीकी जनमत ने, जहाँ वियतनामी मुहिमबाजी की याद अभी ताज़ा ही थी, अफ्रीका में वाणिज्य के गुप्त युद्ध का अंत किये जाने की मांग की। १९७६ में जनमत के दबाव ने अमरीकी कांग्रेस को यूनीटा तथा एक० एन० एल० ए० की प्रच्छन्न अथवा प्रत्यक्ष महायन्त्रा निषिद्ध करने का कानून बनाने के लिए मजबूर कर दिया। अपने प्रस्तावक के नाम पर यह कानून क्वार्क मण्डलन के नाम से विज्ञात है।

लेकिन कनार्क मगोघन अगोला में अमरीकी साम्राज्यवादी माहिनी का अन्न न कर सका। मनुष्य राज्य अमरीका के अगोली प्रतिनानिकारियों के साथ मपर्क बने रहे। ह्वाइट हाउस समलवादी दक्षिण अफ्रीकी शासन की महायत्ना में अगोला में अमिरता उत्पन्न करने के अपने प्रयामों में बाइ नही आया।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि १९७६ में सी० आई० ए० ने यूनीटा के नेता सावित्री को बोरो से वाशिंगटन पहुंचाया था, जहां सावित्री ने अनेक उच्च अमरीकी अधिकारियों से भेंट की, जिनमें अमरीकी राष्ट्रपति के भूतपूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक हेनरी किसिजर भी थे।

जहां तक रॉनल्ड रैगन की बात है, उन्होंने तो अपने चुनाव अभियान में यह कहते हुए यूनीटा का खुलकर समर्थन किया था कि "सावित्री का आघे से अधिक अगोला पर नियंत्रण है। मैं नहीं समझता कि कबो हमें उन्हें हथियार नहीं देने चाहिए।" \*

रॉनल्ड रैगन के सपथ ग्रहण करने के ठीक पहले विलियम केसी, जिन्हे जल्दी ही सी० आई० ए० का निदेशक बनना था, और रिचर्ड एलेन, जो बाद में राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक बने, ने यूनीटा के प्रतिनिधियों से भेंट की और उन्हें अमरीकी समर्थन का आश्वासन दिया। पद ग्रहण करने के बाद राष्ट्रपति

---

\* *Africa Report* (Washington), July-August, 1990. Vol. 25, No 4, p. 6.

रैगन ने काप्रेस द्वारा क्लार्क मशोधन के निरस्त किये जाने की जोरदार माग की।

मार्च, १९८१ में साबिबी को वाशिंगटन आने का आधिकारिक निमंत्रण दिया गया। उसी महीने अमरीकी विदेश मंत्री अलैग्जेडर हेग ने सदन में यूनीटा के प्रतिनिधियों के साथ इस संगठन को सहायता के बारे में बातचीत की। दिसंबर, १९८१ में साबिबी को विदेश विभाग में मिलने के लिए बुलाया गया और अमरीकी अधिकारियों ने उन्हें प्रत्यक्षत उक्सावे के उद्देश्य से "राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का नेता" कहा।

यह नापद ही मायोगिक है कि साबिबी की समुक्त राज्य अमरीका यात्रा के दौरान ही लुआडा में अगोला के सबसे बड़े तेल शोधन कारखाने में जबरदस्त विस्फोट हुआ। जाच-पड़ताल से यह सिद्ध हुआ कि तोड़फोड़ की इस कार्रवाई की योजना समुक्त राज्य अमरीका और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य में बनायी गयी थी और उस यूनीटा के दस्युओं ने कार्यरूप दिया था।

नवंबर, १९८१ में पश्चिमी जर्मन पत्रिका 'व्येस्तर फ्यूर दोंडने उड इटरनात्सीओनाले पोलितिक' ने लिखा था कि अगोला के लिए खतरा बढ़ रहा है। यह खतरा कितना गंभीर था, यह अगोला पर १९८१ और १९८२ के प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका के जबरदस्त हमलों ने दिखाया। नमलवादियों ने कूनेने नदी के दक्षिण में लगभग ५०,००० वर्ग किलोमीटर अंगोली भूभाग को कब्जे में ले लिया। दक्षिण अफ्रीका की आक्रामक

कार्रवाई के परिणामस्वरूप अंगोला को मान बराबर  
हानिर की आर्थिक क्षति उठानी पड़ी।

अमरीकी शासकों ने अंगोला में दक्षिण अफ्रीकी  
सैनिक घुमपैठों पर अपने हर्ष को छिपाया नहीं। इन  
घुमपैठों के दौरान बीमियां गांवों को मिट्टी में निचा  
दिया गया था और हजारों निरीह लोगों की जानें  
गयी थी। मितवर, १९८१ में संयुक्त राज्य अमरीका  
ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दक्षिण अफ्रीका की  
भर्त्सना और उसकी सेनाओं की अंगोला से तत्काल  
वापसी की मांग करने के प्रस्ताव पर एक बार फिर  
अपने निषेधाधिकार का प्रयोग किया।

आज यह स्पष्ट हो गया है कि दक्षिणी अफ्रीका में  
अंगोला तथा अन्य स्वतंत्र अफ्रीकी राज्यों के विरुद्ध  
दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के सशस्त्र हस्तक्षेप से जनित  
विस्फोटक स्थिति वर्तमान अमरीकी प्रशासन द्वारा  
अनुसृत "नयी" अफ्रीका नीति का ही प्रत्यक्ष परिणाम  
है।

अपने अपराधों का औचित्य-स्थापन करने के प्रयत्न  
में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य यह दावा करता है कि  
अंगोला नमीबियाई देशभक्तों की सहायता करता है,  
जिनकी गणना प्रिटोरिया और वाशिंगटन "आतंक-  
वादी आंदोलनों" में करते हैं। सचमुच, अंगोली  
सरकार ने नमीबियाई शरणार्थियों के लिए, जिनकी  
संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है, बस्तियों,  
अस्पतालों और स्कूलों की स्थापना की है। अंगोली  
सरकार संयुक्त राष्ट्र सच के निर्णयों से, जो स्वायं

को नमीबियाई जनगण का एकमात्र वैध प्रतिनिधि मानता है, और नमीबियाई जनता के न्याय्य हेतु के समर्थन में अफ्रीकी एकता संगठन के प्रस्तावों से मार्गदर्शन लेते हुए स्वापो को सर्वतोमुखी सहायता प्रदान करती है। और अंतिम बात यह है कि अंगोला नमीबिया पर नसलवादी कब्जे के खिलाफ स्वापो के समर्थन का इसलिए समर्थन करना है कि वह उसे अफ्रीका में उपनिवेशवाद तथा नसलवाद के अवशेषों के विरुद्ध स्वयं अपने समर्थन का अभिन्न अंग समझता है।

पश्चिम में जब नमीबिया समस्या की बात की जाती है, तो उसमें सामान्यतया पांच देशों — मयुक्त राज्य अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रान्स, कनाडा और पश्चिमी जर्मनी — के तथाकथित समर्क दल के कार्यकर्ताओं को अवश्य ध्यान में रखा जाता है। इस दल ने १९७८ में नमीबियाई स्वतंत्रता की एक योजना प्रस्तुत की थी जो मयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव सं० ४३५ में गृहीत है, और कहा था कि वह इस योजना के लिए दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को सहमति प्राप्त करने के लिए काम करेगा। लेकिन, वास्तव में समर्क दल दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के साथ मिलकर और नमीबियाई जनता की पीठ पीछे नमीबिया में पश्चिम की आर्थिक तथा रणनीतिक स्थितियों को बरकरार रखने की योजनाएँ तैयार करने में ही लगा हुआ है।

समर्क दल का प्रत्येक सदस्य मयुक्त राष्ट्र संघ के नानामध्य प्रस्तावों का उत्तरदायन करते हुए — के राष्ट्रीय समाधानों की मुनी मूठ में लगा हुआ

नमीबिया में कार्यरत ८८ बहुराष्ट्रीय निगमों में से २५ के मुख्यालय ब्रिटेन में, १५ के संयुक्त राज्य अमेरिका में, ८ के पश्चिमी जर्मनी में, ३ के फ्रांस में और २ के कनाडा में हैं।

नमीबिया के राष्ट्रीय समाधानों की लूट को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की विदेशी कंपनियों को खनिजों का अप्रतिबंधित दोहन करने देने, करां की दरें नीची (स्वयं दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य से भी नीची) रखने और खनन कंपनियों से यह माग न करने की नीति सुगमतर बना देती है कि वे अपस्को का निष्कर्षण की जगह पर ही परिष्करण करे और अपने लाभों के एक हिस्से को अर्थव्यवस्था के दूसरे क्षेत्रों में निवेशित करें। सेवा के बदले सेवा — पश्चिम रणभेद प्रथा से अपने को प्राप्त सुविधाओं के बदले दक्षिण अफ्रीका के नमीबिया पर गैरकानूनी अधिकार का समर्थन करता है।

यूरेनियम के विराट निक्षेपों के खोजे जाने के बाद से नमीबिया पश्चिमी कंपनियों के लिए विशेषकर आकर्षक हो गया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इन सदी के अंत तक वहां इस रणनीतिक सामग्री का संवर्धन १५,००० टन प्रतिवर्ष की दर से उत्पादन संभव हो सकता है। इससे आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बाद नमीबिया पश्चिमी जगत के यूरेनियम का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक बन जाएगा। इस प्रकार से नमीबिया पर अवैध अधिकार नस्लवादियों और उनके पश्चिमी सरसहकों को विश्व यूरेनियम ३।१ के एक बड़े भाग को अपने नियंत्रण में रखने,

उन्हें बाजार में जाने के परिमाण और समय में हेरफेर करने और दाम निर्धारित करने में समर्थ बनाना है। इस सबसे उन्हें भारी मुनाफे प्राप्त होने है।

नमीबिया में पश्चिमी जितों के सुरक्षण के प्रयासों की कारगरता सीधे-सीधे रंगभेद नीति के किसी भी तरह के प्रतिरोध को कुचालने की प्रिटोरिया की क्षमता पर निर्भर करती है। इसमें यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों वाणिज्यिक स्वायत्त के महात्म्य संघर्ष की दक्षिणी अफ्रीका में साम्राज्यवाद की आर्थिक स्थितियों के लिए मुख्य जनता समझता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और सार्ब देश के अन्य सदस्य राज्य इस जनता का दूर करने के लिए किसी भी साधन अथवा प्रयास में परहेज नहीं करते। क्यों से वे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के ४ नवंबर, १९७७ के प्रस्ताव सं० ४१८ द्वारा संघर्ष से दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को हथियारों की बिक्री पर प्रतिबंध का निर्धारित रूप में उल्लंघन करने आद्य है।

इस प्रतिबंध की समानांतर अवज्ञा करनेवालों की सूची में संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे ऊपर है। स्पष्ट सिमर्र वॉशिंगटन द्वारा दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को मुफ्त रूप १५२ मि० सी० लॉन्ग व गोल्ड का डबो जाना इसका सबसे बुरा उल्लंघन था। इस सीट की बलीपन प्रिटोरिया के लिए ३ से ३ बिलियन डॉलर तक के वार्षिकिक गोले लाइव से सक्षम नगरपालिका बना जाता संभव हो गया है।

हथियारों के अभाव में संयुक्त राज्य अमेरिका ने



अन्य पश्चिमी देश दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को "कप-रिफ" मात्र-भामान भी दिन खोबर मुद्रा का है, जिसका मुख्य प्रयोजनो के लिए उपयोग विज्ञान मकाना है। यह ज्ञान हत्यके वाणिज्यिक तथा परिवार विमानो, इस्तेमाली उपकरणो और विभिन्न इन्हे पर विशेषकर लागू होती है।

देशक, एक भी पश्चिमी राजनीतिज्ञ कुराक यह स्वीकार करने का माहम न करने कि समर्थनों को दी जानेवाली महापता सर्वोपरि राष्ट्रीय बुद्धि आशेषन और प्रगतिशील अफ्रीकी जागनों के लिए मशिन है। लेकिन मध्य बहुत अधिपत होने है और यह मध्य है कि समीक्षा, दक्षिण अफ्रीका, मोरॉको अफ्रीका तथा अन्य देशों में ज्ञान वाणिज्य उन हस्तगत में जा रहा है जो पश्चिम में बढ़ने है और पश्चिम में बढ़ने की महामति में ही दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को पहुँचाये जान है।

विद्यार्थियों की आलसकारी नीतियों के ज्ञान की अनुपस्थिति में वाणिज्यिक अथवा इन्कार भी नहीं जाना। अर्थात् १९८१ में अफ्रीकी अन्तर्गत 'नेशनल रिजर्व' में अफ्रीकी इन्डस्ट्रियल अनुसंधान मन्त्रालय, जो कि १९८० के मध्य ज्ञान मन्त्रालय के लिए स्थित है। किन्तु वह जो वह अफ्रीकी अफ्रीकी नीति की दिशा में बढ़ता जा रहा है कि ज्ञान को अफ्रीका में न ज्ञान दिया जाना चाहिए और जो ज्ञान न मन्त्रालय में न जाना है, जो अफ्रीका अफ्रीका में दिग्दर्शन मन्त्रालय में न जाना है। अफ्रीका

अमेरिका के उपयोगी खनिजों के बिना पश्चिम का अस्तित्व  
असंभव है।”\*

उसी साल मई-जून के महीनों में ‘वाशिंगटन  
पोस्ट’ और ‘न्यूयॉर्क टाइम्स’ सहित कितने ही अमेरिकी  
पत्रकारों ने अमेरिकी तथा दक्षिण अफ्रीकी अधिकारियों  
के बीच हुई वार्ताओं के बारे में विदेश विभाग के गुप्त  
साक्ष्य प्रकाशित किये। सहायक विदेश मंत्री चैस्टर  
जॉकर की दक्षिण अफ्रीकी विदेश मंत्री रॉएल्लोफ बोता तथा  
प्रतिरक्षा मंत्री मैक्स मैसन के साथ बातचीत का विवरण  
तो हम का धमाका साबित हुआ। विदेश विभाग के  
सौजन्य विचारों का मानव-अधिकारों के समर्थन और  
अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नस्लवाद और रंगभेद के विरुद्ध  
आधिकारिक बक्तव्यों से ऐसा घोर विरोधाभास था  
कि दक्षिणपन्थी प्रेस तब ने अमेरिकी प्रशासन पर पाखंड  
का आरोप लगाया।

बातचीत का विवरण दिखाता है कि दक्षिणी  
अफ्रीका में राजनीतिक स्थिति के अपने आवतन में  
और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के सदस्यों ने अपने सक्षमों  
में दोनों पक्षों ने अद्भुत मतैक्य का प्रदर्शन किया।

मौखिक, जरा चैस्टर जॉकर ने शब्दों पर गौर  
कीजिये- “संयुक्त राज्य अमेरिका तथा दक्षिण अफ्रीकी  
गणराज्य के बीच राजनीतिक संघर्ष इस समय अत्य-  
धिक महत्व, कहना चाहिए कि ऐतिहासिक महत्व  
रखते हैं। दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के प्रति संयुक्त

\*National Review, 1981, April 17

अन्य पश्चिमी देश दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को "नागरिक" साज-सामान भी दिल खोलकर मुहैया करते हैं, जिसका सैन्य प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह बात हलके वाणिज्यिक तथा परिवहन विमानों, इलेक्ट्रानी उपकरणों और विभिन्न इंसानों पर विशेषकर लागू होती है।

बेशक, एक भी पश्चिमी राजनीतिज्ञ खुदकर यह स्वीकार करने का साहस न करेगा कि नसलवादियों को दी जानेवाली सहायता सर्वोपरि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और प्रगतिशील अफ्रीकी शासनों के विरुद्ध सक्षित है। लेकिन तथ्य बहुत अडियल होते हैं और यह तथ्य है कि नमीबिया, दक्षिण अफ्रीका, मोजाबीक, अंगोला तथा अन्य देशों में शांत नागरिक उन हथियारों से मारे जा रहे हैं, जो पश्चिम में बनते हैं और पश्चिमी सरकारों की सहमति से ही दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को पहुँचाये जाते हैं।

प्रिटोरिया की आतंकवादी नीतियों के अपने मौन अनुमोदन से वाशिंगटन अब इन्कार भी नहीं करता। अप्रैल, १९८१ में अमरीकी अखबार 'नेशनल रिव्यू' में अमरीकी डब्ल्यू स्थिति अनुसंधान सम्पान, जो सी० आई० ए० के साथ अपने संबंधों के लिए विज्ञान है, के निदेशक की यह स्वीकारोक्ति छपी थी कि सबसे पहला कार्यभार यह है कि स्वाधीन को नमीबिया में सत्ता में न आने दिया जाये, क्योंकि अगर उसे ऐसा करने में सफलता मिल जानी है, तो दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य विषकुल अकेला रह जायेगा और दक्षिण





शक्ति नहीं प्राप्त कर लेती कि स्थिति को नियंत्रित कर सके। हम वहाँ सोवियतविरोधी काली सरकार (अर्थात् दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त राज्य की आज्ञा पर चलनेवाली और अफ्रीकी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का विरोध करनेवाली सरकार-से०) चाहते हैं।'

चैस्टर जॉकर ने फरियाद की कि 'हम (संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव-स०) ४३५ को बड़ी पूर्णता से ही रही की ढेरी में डाल सकते हैं। हम उसे अपने के बजाय उसकी अनुपूर्ति करना चाहते हैं।

प्रिटोरिया में जॉकर की वार्ताओं के कुछ ही महीने बाद संयुक्त राज्य अमरीका ने दक्षिण अटलांटिक में तैमिक पुढाभ्यास किये। उनके तीन हफ्ते बाद दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की सेनाओं ने हज़ारों की सख्या में अंगोला पर आक्रमण कर दिया। इस सेनाओं में दक्षिण अफ्रीकी तथा अमरीकी गुप्तचर सेवाओं द्वारा अंगोला में आतंकवादी कार्यवाहिया करने के लिए स्थापित भाड़े की इकाइया - ३२वीं बुफैलो बटालियन और विशेष कांवैट टुकड़ी - भी शामिल थी।

सदन से प्रकाशित 'एफ्रीका वॉन्क्लीडेशिअल पत्रिका के अनुसार दक्षिणी अफ्रीकी और अमरीकी गुप्तचर सेवाओं ने डेढ १९७६ में ही स्वापो का समर्थन करनेवाले अफ्रीकी देशों और सर्वोपरि अंगोला पर दबाव डालने का एक कार्यक्रम तैयार कर लिया था। इसके अनुसार सी० आई० ए० को स्वापो में पूट पैदा करना उसके मुख्य नेताओं को बदनाम करना और नमीबिया में परितम-समर्थक शासन स्थापित करने में सहायता देना

था। इसके अलावा अगोला में आंतरिक राजनीति अस्थिरता पैदा करना एक और लक्ष्य था। १९७७ में 'काउंटरस्पार्ड' पत्रिका ने अपने ३१ अक्तूबर के अंक में 'नमीबिया के विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रच्छन्न कार्रवाई' शीर्षक लेख प्रकाशित किया, जिसमें वाशिंगटन द्वारा प्रिटोरिया के सहयोग से "स्वापो को अलग छोड़ने और यह सुनिश्चित करने कि सत्ता उन्हीं के हाथों में जाये जिन्हें नियंत्रण में रखा जा सकता है" के लक्ष्य के निरूपित गुप्त योजना के उद्धरण दिये गये थे। इस योजना के रचनाकारों ने तो कठपुतली सरकार को वित्त-पोषण करने और उसकी "अंतर्राष्ट्रीय मान्यता" सुनिश्चित करवाने का कार्यक्रम तक तैयार किया था लेकिन मुख्य लक्ष्य स्वापो तथा अगोला पर सैनिक दबाव बढ़ाना था, जिससे नमीबियाई छापामारों को यथामूल्य कमजोर किया जा सके, उन्हें दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य और संयुक्त राज्य अमरीका के अनुकूल समझौते को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जा सके, अथवा—संभव हो, तो—समझौते से बिलकुल ही बाहर रखा जा सके।

रैगन प्रशासन की नीति पर टीका करने हुए स्वापो के अध्यक्ष सैम न्यूमोमा ने कहा था: "दक्षिण अफ्रीका के प्रति थी रैगन की नीति से हमें अस्वास्थ्य नहीं होना। राष्ट्रपति चुने जाने से पहले ही रैगन ने यह स्पष्ट कर दिया था कि अफ्रीका में उनका मध्य नसलवादी तथा प्रतिक्रियावादी शासनो की मुक्ति आंदोलन के खिलाफ लड़ने में सहायता करना होता।





नमीबिया में कठपुतली शासन स्थापित करने के प्रयास की बात करते हुए इसकी याद दिलायी जा सकती है कि ज़िबाध्वे में संयुक्त राज्य अमरीका ने अफ्रीकी देशभक्तों के स्वाधीनता संग्राम के दौरान वैसी प्रधान भूमिका अदा की थी।

नसलवादी रोडेसिया के प्रति संयुक्त राज्य अमरीका की नीति असाधारणतः नरम रही थी। अमरीकी सरकार ने निया संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अवैध शासन के विरुद्ध लगायी अनुशास्तियों का उल्लंघन करते हुए सामरिट्स खनिजों से संपन्न इस देश के साथ व्यापार करती थी। संयुक्त राज्य अमरीका तथा अन्य पश्चिमी देश स्मिथ सरकार को तेल और अस्त्र-शस्त्र सहित उसकी जरूरतों की लगभग सभी चीजों का प्रदाय करते थे। सी० आई० ए० का रोडेसियाई केंद्रीय गुप्तचर्या मण्डल के साथ सक्रिय सहयोग था। सी० आई० ए० के भूगर्भीय निदेशक रिचर्ड हेल्म ने स्वीकार किया है कि उनकी एजेन्सी अमरीकी कामुलेट के अधिकारियों के जरिए साल्मबरी में अपने समकक्ष संगठन के साथ घनिष्ठ संपर्क रखती थी। यही कारण है कि सी० आई० ए० ने कामुलेट को बंद करने पर अमल न होने देने के लिए जो कुछ हो सकता था, किया।

ठीक है कि संयुक्त राज्य अमरीका को अपने बावजूद विश्व जनमत के दबाव के कारण जायूसी के इस केंद्र को बंद करना पड़ा। लेकिन सी० आई० ए० ने अफ्रीकी स्वतंत्रता संग्रामियों के खिलाफ अपनी कार्रवाई जारी रखने का शीघ्र ही एक और तरीका



मार्क्सिज्म चुनाव में विजयी होने और प्रधान मंत्री बनने की आशा कर रहे थे। मुजोरेबा के चुनाव अभियान पर उनके समर्थकों ने मागों इतने बढ़ा दिये। पश्चिम और विशेषकर अमरीकी, प्रेम में देशभक्त मोरचे के उम्मीदवारों के विनाश प्रचंड अभियान छेड़ दिया। मोरचे के नेताओं और समर्थकों की हत्याएँ करने की कोशिशें की गयीं। वाशिंगटन और लंदन को अपने गुरुरों की सफलता में इनका विद्वाम था कि उन्होंने बड़ी जल्दी में "स्वतंत्र" जिवाब्वे को विनाश विहीन महामता देने का वचन दे दिया। पेट्रिटेन के डेविड मार्टिन और कनाडा के फिलिम जॉनसन नामक पत्रकारों ने अपनी पुस्तक 'जिवाब्वे के लिए संघर्ष' में लिखा है कि अमरीकी विदेश मंत्रालय, सी० आई० ए० और पैटागॉन ने १९७६ में "स्वतंत्र जिवाब्वे को कोनिश के नमूने पर 'नरम' रास्ते पर ले जाने" के लिए एक "जिवाब्वे निधि" स्थापित करने की सोची थी।"

लेकिन साम्राज्यवादियों की योजनाएँ धरी की धरी रह गयीं। अफ्रीकियों के अत्यधिक भारी बहुतांश ने जिवाब्वे की देशभक्त शक्तियों के पक्ष में मत दिये। और बेचारे मुजोरेबा को संसद में सिर्फ तीन स्थान ही प्राप्त हुए—उनके पास जितने हेलीकॉप्टर थे, उनमें भी कम।

पश्चिम को ताबडतोड़ अपनी कार्यनीति बदलनी पड़ी—देशभक्त मोरचे के नेताओं के प्रति दर्प और







अरीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के तीन प्रमुख सदस्यों के बीच एक बैठक में ऐसा हुआ था, जिसमें से एक पोल्लोको मेचानो थे, जो अमरीकी मूचना सेवा के कार्यालय में एक समय काम करने थे।”

गॉरेन विटर के अनुसार बन्नुन सोर्रिनि अरीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभाव का, जिसे आबादी के सभी समूहों का समर्थन प्राप्त है, प्रतिकार करने के प्रयत्न में सी० आई० ए० दक्षिण अरीका में कई अरीकी मण्डलों को पैसा देनी है। विटर आगे कहने हैं कि अरीकी गुणधर्मा दक्षिण अरीका में पैसा पहुँचाने के प्रयत्न में समुक्त राज्य अमरीका के अनेक मण्डलों का उपयोग करती है, जिसमें एक विध्वानुमार नागरिक अधिकार रक्षार्थ अमरीकी वकील समिति भी है। १९७७ में इस समिति के जरिए कोई १० लाख डॉलर की रकम भेजी गयी थी। जनरल वान डेन बर्ग ने विटर को बतलाया था कि सी० आई० ए० जोरो में नये एजेंटों की तलाश कर रही है। वान डेन बर्ग ने जोर देकर कहा कि “सी० आई० ए० इस दौड़ में सभी अज्ञान घोड़ों का समर्थन करती है, ताकि चाहे जो भी घोड़ा जीते, अमरीका का इनाम की रकम में हिस्सा रहेगा। और इनाम है हमारे रणनीतिक खनिज निक्षेप और संभवतः इतने ही महत्व की हमारी विराट और सस्ती काली श्रम शक्ति।”

११ रैमन के प्रशासन में दक्षिण अरीकी  
 १२ साथ सी० आई० ए० के सहयोग ने  
 १३ ग्रहण कर लिया। समुक्त राज्य





फ्रेन्चोमी ( मोडाबीक मुक्ति संग्राम ) की विजय और स्वतंत्रता की उद्घोषणा के बाद सी० आई० ए० ने मोडाबीक में अन्तिमोत्तम शासन की प्रशिक्षण करने और संरक्षित नया दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की तरफ कानूनी के लिए रोडेसियाई और दक्षिण अफ्रीकी गुलाम मेराओं के साथ अपने मतभेदों को और बढ़ाया। उदाहरण के लिए, सी० आई० ए० दलों ने इमान्दारी के गुलाम मेराओं को मोडाबीक में विवाधे गणनाओं निवासों की अवस्थिति के बारे में सूचना प्रदान की। इस जानकारी का उपयोग करते हुए रोडेसियाई मेरा ने मोडाबीक में पूरे के पूरे गांवों को मिट्टी में मिटाया और उनके शान्तिपूर्ण निवासियों को बेरहमी के साथ मौत के घाट उतारा।

वाशिंगटन द्वारा दक्षिणी अफ्रीका में मुक्ति आंदोलनों को " आतंकवादी " घोषित किये जाने ने दक्षिण अफ्रीकी नसलवादियों की हिम्मत को बढ़ाया और स्वयं अफ्रीकी देशों के विरुद्ध उनकी भड़कावे की कार्यवाहियों को और भी उद्दृष्टपूर्ण बनाया। ३० जनवरी, १९८१ को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य ने कहने को तो अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के एक अंग्रेज को मारने के उद्देश्य से, पर असल में स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों सहित दक्षिण अफ्रीकी शरणार्थियों के खिलाफ ताजीरी कार्यवाई करने के लिए मोडाबीक की राजधानी मापूतो के विरुद्ध अपने छतरी सैनिक उतारे।

बाद में पता चला कि नसलवादियों ने अपनी कार्यवाई को सी० आई० ए० के साथ समन्वित किया था,



और प्रिटोरिया द्वारा इस सूचना का अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के खिलाफ सशस्त्र छेड़छाड़ की योजनाएं बनाने में उपयोग किया जाता था।

जामूसो को एक पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों के सामने पेश किया गया। सी० आई० ए० का एक एजेंट मोजाबीकी विदेश मंत्रालय का उच्चाधिकारी होसे शीनाल मास्सीगा था। सी० आई० ए० ने उसके साथ पहले-पहल संपर्क १९६६ में, जब वह मयुक्त राज्य अमरीका में अध्ययन कर रहा था, अपने एक कर्मियों के जरिए स्थापित किया था, जिसने अपने को विली कहकर परिचित करवाया था। नौ साल बाद जब मास्सीगा मयुक्त राष्ट्र महासभा में मोजाबीकी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य की हैसियत से आया, तो विली ने उससे फिर संपर्क स्थापित किया, उसे पैना देने की पेशकश की और मास्सीगा सहयोग करने को तैयार हो गया। मास्सीगा ने स्वीकार किया कि वह मापूतो में सी० आई० ए०-कर्मियों को नियमित रूप से गुप्त सूचनाएं दिया करता था।

अल्मीडू चिवीते एक और सी० आई० ए० एजेंट था, जो मोजाबीकी जनरल स्टाफ के सैनिक रूप विभाग का प्रधान था। उसे १९७८ में भरती किया गया था और मोजाबीकी सेना द्वारा प्रयुक्त हथियारों की किस्मों की पूरी सूची तैयार करने और सैनिक इकाइयों की संख्या, प्रशिक्षण तथा अवस्थिति के बारे में और मोजाबीक में स्थित जियाध्वेई तथा दक्षिण अफ्रीकी मुक्ति आंदोलन के सशस्त्र दलों की गतिविधियों के



मोजाबीक की जनशक्ती सरकार के विरोधियों के मजबूत विरोध पहले अपनी कार्यवाह्या रोडेनियार्ड प्रदेश में किया करने थे, मगर देशभक्त शक्तियों की विजय के बाद उन्हें बिदाय में भागना पड़ा। नज़र की 'म्यू एक्टिव' पत्रिका के अनुसार उन्हें पूर्वी ट्रामवान (दक्षिण अफ्रीकी मगराज्य) में शरण मिली। दक्षिण अफ्रीकी सेना और भूतपूर्व रोडेनियार्ड सेना के प्रशिक्षक आनरवादियों को विशेष निविदा में प्रशिक्षण देते हैं।

सी० आई० ए० की योजनाओं में मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध के दम्पु-दलों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि ये मोजाबीक में अमरीकी ध्वमकार्य को सुगम बनाते हैं। इसके अलावा, सी० आई० ए० प्रतिक्रियाकारी भूमिगत आंदोलन के पुर्नगती प्रतिक्रियावादियों के साथ, जो मोजाबीक में पुरानी व्यवस्था को फिर से स्थापित करना चाहते हैं, संपर्कों को भी समन्वित करती है। सी० आई० ए० के साथ अपने संपर्कों के लिए मजहूर और मोजाबीक में पुर्नगती अभियान सेना के भूतपूर्व कमांडर जनरल दी अरियागा १९८० में प्रतिक्रियाकारियों से मिलने के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे। उल्लेखनीय है कि इसके बाद मोजाबीकी सरकार के खिलाफ मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध की छेड़छाड़ की कार्यवाह्या सहसा बृद्धि हुई।

सी० आई० ए० के जामूसी जाल के रहस्योद्घाटन के सिलसिले में मोजाबीकी सुरक्षा मंत्रालय द्वारा जारी



[illegible][illegible]





माण को "मधुका राज्य अमरीका की राष्ट्रीय सुरक्षा" के लिए खनरे की तरह समझता है।

यही कारण है कि पोल बेराभे सी० आई० ए० की गुप्त फाइलों में "पहले नंबर के शत्रु" की हैमियत रखते हैं।

मॉरीशस में सी० आई० ए० के परदाफाश से पैदा हुई नाराजगी की लहर अभी शांत भी न हो पायी थी कि लैंग्ली की एक नयी गुप्त योजना प्रकाश में आ गयी। यह लीब्रियाई नेता कर्नल मुअम्मर कदाफी की हत्या करने की योजना थी।

पोल बेराभे की ही भांति मुअम्मर कदाफी भी अफ्रीका में अमरीकी प्रशासन के मुख्य शत्रुओं की सूची में हैं। कारण ? कारण यह कि लीब्रिया राष्ट्रीय मुक्ति की शक्तियों और उन स्वतंत्र देशों को सहायता देता है, जो अफ्रीका तथा मध्य-पूर्व के मामलों में साम्राज्यवादी हस्तक्षेप का अविचल विरोध करते हैं और अमरीकी ध्वंसकार्य का प्रतिरोध करते हैं। जैसे कि अमरीकी पत्रिका 'न्यूजवीक' ने अपने ३ अगस्त, १९८१ के अंक में कहा था, यही कारण था कि सी० आई० ए० ने कर्नल कदाफी के "आखिरी तौर पर" मत्ता से अलग किये जाने की योजना तैयार की।

लीब्रियाई नेता की हत्या का दायित्व सी० आई० ए० ने अपने एक भूतपूर्व कर्मी एडविन विल्मन को सौंपा। यह योजना अमरीकी गुप्तचरों की जानकारी अनुरूप ही थी। अमरीकी अखबार 'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार कर्नल कदाफी की हत्या

उनके तरीके में 'एक तेजी वाली मशीन' की डिग्री सीढ़िया में अन्तर है, राज्य के मन्त्र-मन्त्र द्वारा "एक पावर बिज का प्रवेश करवाकर की जानी थी।

विश्व प्रेम में लहर के आ आन व बाज़ मी० आई० ए० की ये योजनाएँ गांधी न ही मचीं मगर इसमें कॉन्ग्रेस का सीढ़िया व बिजु नयी आनकवादी योजनाओं का फैलाव करना बंद नहीं हो गया। अमरीकी जनमत का ध्यान १५ मई १९८० का अमरीकी कांग्रेस अनुमोदन सेवा द्वारा अमरीका में अमरीकी प्रभाव को फैलाने तथा मुद्रा करने के उद्देश्य में सीढ़िया के बिजु कार्यवाहियों का गठन व बार में प्रकाशित रिपोर्ट की जाय गया। इस रिपोर्ट में उनकी अमरीका में कॉन्ग्रेस का सामाजिक मर्यादों की प्रकट किया गया था

- इस प्रदेश में मयुक्त राज्य अमरीका के साथ सामान्य हित रखनेवाले देशों का सीढ़ियाविरोधी काम था " बनाने के लिए अमरीकी एजेंडा मण्डल का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना

- इस प्रदेश के देशों की सैनिक महायुद्ध बढ़ाना

- कहाँ की हराकर रोचने के माधुन के रूप में इस प्रदेश में बाज़ अमरीकी सैन्य उपस्थिति का निर्माण करना।

संगत है कि कहाँ की हत्या इसी योजना का अंग थी। और इसीलिए अमरीकी प्रशासन द्वारा

नयी लीबियाविरोधी कार्रवाई प्रत्यागित ही थी।

इसमें कोई अधिक समय लगा भी नहीं।

जुलाई, १९८१ में सीनेट विदेश सव्य समिति के सामने बोलते हुए अफ्रीकी मामलों के लिए उत्तरदायी सहायक विदेश मंत्री चैस्टर थॉकर ने कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका "लीबिया के घबसकार्य और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के समर्थन के राजनय" का प्रतिरोध करनेवाले किसी भी देश को सहायता बढ़ाने के लिए तैयार है। इसके फौरन बाद द्यूनीशिया को अमरीकी सैनिक सहायता एकदम बढ़ाकर ५०० लाख डॉलर से ६५० लाख डॉलर और सूडान को ३०० लाख डॉलर से १००० लाख डॉलर कर दी गयी। १६ अगस्त को सीदरा की छाडी पर नियमित गश्ती उड़ान करते दो लीबियाई विमानों को अमरीकी छठे बेड़े के एक विमान-बाहक पोत से उड़े अमरीकी विमानों ने मार गिराया। लीबियाई विमानों पर इस अकारण आक्रमण ने संपूर्ण अरब विश्व ही नहीं, पश्चिमी यूरोप में भी सख्त नाराजी पैदा की। प्रगतिशील प्रेस ने इस दस्यु-कार्य को लीबिया के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका के आक्रामक इरादों का सबूत बताया। मगर अमरीकी अधिकारियों ने पाघड़-पूर्वक कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका अपने को दोषी नहीं मानता और ज़रूरत पड़ने पर लीबिया के खिलाफ भविष्य में भी ऐसे ही कदम उठायेगा।

या में अस्थिरता पैदा करने की अमरीकी ही एक हिस्सा चाद की घटनाओं के निर-व्यापक लीबियाविरोधी अभियान का छेड़ा



इस क्षेत्रों का मुकाबला दिया। जो संयुक्त राज्य अमेरिका के लोग समझते हैं सीबिया बाद में जाने की कमी महसूस न होगा।

अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्तमान की तरह जैसा घटना बरत होगा जब सीबियाई सरकार ने असीसी एका सदन के मुकाबल का मन्त्री से वापस करने हुए अपनी योजनाओं को एक सत्र के भीतर ही बाद में रोक दिया। अमेरिकी प्रशासन ने यह कहकर अपनी निमिषाहट छिलाने की कोशिश की कि सीबियाई पक्षों को बलमी के पीछे उभर कोई "हुट्टे डगरे" है।

दिसंबर, १९८१ में सी० आई० ए० ने एक नया सीबियाविरोधी गमारा खड़ा किया। मैन्नी के कर्जधारों ने राष्ट्रपति रैगन की हत्या के एक सीबियाई पड्डन<sup>(१)</sup> में संबंधित "परम मोदनीय सूचना" के प्रेम में "पहुचने" का इन्जाम किया। इस आचार्य की बेमिरदार की अफवाहें फैलायी गयी कि राष्ट्रपति तथा उनके सहकारियों का खान्मा करने के लिए "दो सीबियाई हत्या-टोनिया" संयुक्त राज्य अमेरिका भेजी गयी है। टेलीविजन, रेडियो और प्रेम सी० आई० ए० द्वारा आविष्कृत "पड्डन" के बारे में रोज नये-नये चटपटे किस्से पेश करते। संयुक्त राज्य अमेरिका में सीबिया-विरोधी प्रचार अपने चरम पर पहुच गया। सदन के 'ऑब्जर्वर' अखबार ने इस सिलसिले में लिखा: "तयना या कि जैसे देश को सीबिया पर सैनिक प्रहार जैसी किसी निश्चयात्मक कार्रवाई के लिए तैयार किया



जंगली गो ब्रीड है जो आबाद करना चाहती है  
अमरीका मारी दुनिया पर दबदबा करना और दुनिया  
को अमरीका के दुश्मनों या गुनाहों में बांटना चाहता  
है और हम गुनाह होने में इन्कार करते हैं।

प्रश्न: आपके देश और मयुक्त राज्य अमरीका  
के बीच विरोध वास्तव में हिंसा की तरफ ले जा चुका  
है। अमरीकी छोटे बड़े के विमानों ने आपके दो  
विमानों को मार गिराया है क्या आपने कुछ करने  
की, अमरीकी में बदला लेने की सोची है?

उत्तर: यह बदले की बात नहीं है, यह हमारे  
देश की रक्षा की, हमारी प्रतिष्ठा की बात है। हम  
अपने मीमानों पर आनेवाली अमरीकी सेना के खिलाफ  
लड़ने को तैयार हैं। हम अमरीका का सामना  
करने को तैयार हैं और हम अमरीका से लड़ने से  
बचरायेगे नहीं।"

सी० आई० ए० का झूठा शोर मचाने के बुलबुले  
की तरह फिस हो गया। लेकिन उमरीकी प्रशासन  
ने अपने कटु लीबियाविरोधी अभियान को पूर्ववत्  
जारी रखा। साथ ही उसने अब आर्थिक प्रतिरोधों  
की धमकी भी दी। लीबिया में काम करनेवाले अमरी-  
कियों को सरकारी तौर पर स्वदेश लौट आने की सलाह  
दी गयी, क्योंकि उनकी जाने कथित रूप में खतरे  
में थी। राष्ट्रपति रैगन ने खुले तौर पर लीबियाई  
की खरीद पर रोक लगाने के अपने दरारों की  
॥ की। १९८२ के आरम्भ में ये धमकिया वास्त-





मे भी खिलाफत और मिठाइयों के नीचे, जिन्हें वस्तु-  
 डिक्लेरेसन में पाखंडपूर्वक स्थानीय अपाहिज बाल  
 अस्पताल के लिए भेटे बतलाया गया था, हथियार  
 छिपे हुए निकले। जब "रग्बी खिलाड़ियों" ने देखा  
 कि भेद खुल गया है, तो उन्होंने बंदूकें निकाल लीं  
 गोलियां चलने लगीं। सेरील्ल के सुरक्षा दस्तों ने दस्त्रों  
 को जल्दी ही काबू में ले लिया। मुठभेड़ में उनमें से  
 कुछ मारे गये और सात को हिरासत में ले लिया  
 गया। दोष दस्त्र एयर इंडिया के एक विमान को हाईजैक  
 करके दक्षिण अफ्रीका भेज दिये

"रग्बी खिलाड़ी" दक्षिण अफ्रीकी तथा अमरीकी  
 गुप्तचरों सेवाओं द्वारा सेरील्ल की सरकार का तथ्या-  
 उत्पत्ति के लिए भरती किये गये भाड़े के सैनिक निरपेक्ष  
 कागो में अपने कारनामों के लिए कुख्यात कर्नल माइंग  
 होर, जो अपनी व्याधिकीय रक्तपिपासा के कारण  
 "पागल माइक" के नाम से जाना जाता था, इन  
 लोगों का नेता था। पागल माइक के गिराव में अफ-  
 रीकी, ब्रिटिश, फ्रांसीसी और न्यूजीलैंड नागरिक भी  
 थे, मगर अधिकांश भड़की भूतपूर्व रोडेशियाई सुरक्षा-  
 कर्मी थे, जो जिवाब्वे में देशभक्त शक्तियों की विजय  
 के बाद भागकर दक्षिण अफ्रीका चले गये थे।

भाड़े के सैनिकों में से प्रत्येक को १,००० डॉलर  
 मिले थे। कार्रवाई के सफल होने की मूर्त में प्रत्येक  
 को १०,००० डॉलर और देने का आश्वासन दिया  
 गया था।

बंदी बनाये गये इन सैनिकों में से दो, राइडर



ने जल्दी से यह ऐलान किया कि उसे पड़्यत्र-प्रचार की "कोई भी जानकारी नहीं" है। अमरीकी विदेश मंत्रालय ने भी यह कहकर फौरन ही सारे मामले से हाथ साफ कर लिये कि वह सिद्धाततः ऐसे हिंसात्मक प्रयासों के विरुद्ध है। दूसरे शब्दों में, ठीक जिन शक्तियों की सेरील्लु में राजकीय व्यवस्था को बदलने में मान दिलचस्पी हो सकती थी, वे ही दावा कर रही थी कि उनका इस प्रयास से कोई संबंध नहीं है।

लेकिन इस प्रसंग में भी यही हुआ कि जो सोच इस पड़्यत्र के पीछे थे, वे अपने सुरागों को पूरी तरह से नहीं छिपा पाये। ७ जनवरी, १९८२ को ब्रिटिश अखबार 'डेली टेलीग्राफ' ने यह रिपोर्ट प्रकाशित की कि "मामले की जांच से सामने आनेवाला प्रमाण पश्चिमी गुप्तचर्या अधिकरणों, विशेषकर मैग्न इटैलीजेम एजेंसी, को पहले से जानकारी होने की ओर इशारा करता है और संभव है कि उन्होंने प्रयत्न समर्थन प्रदान किया हो।" ब्रिटेन की ही 'सेक्टर बीबीसी' पत्रिका के अनुसार यह मानने का हर कारण है कि सेरील्लु के हमले को दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या और सी० आई० ए० - दोनों ने ही प्रायोजित किया था। आखिर यह सर्वज्ञान है कि मयुक्त राज्य अमरीका सेरील्लु के राष्ट्रपति फ्रान्स आल्बेर रेने की मृत्यु की में बहुत असमनुष्ट है, जो हिंसा प्रहाराणर के और अधिक मृत्युकरण की अमरीकी योजनाओं के विरोधी है। पत्रिका ने इंगित किया कि "यह एकदम सत्य है कि अगर यह प्रयास सफल हो जाता, तो इस देश में मरणा



जाहिर कर दीं। हॉल के अनुसार सत्ता-परिवर्तन प्रयत्न की तैयारियाँ लगभग पूरी हो चुकी थी और उन गानाई सपक व्यक्ति क्वेबी ओफोरी वाशिंगटन से सी० आई० ए० से १,८०,००० डॉलर अतिरिक्त धन तियों के लिए और इसके अलावा ६०,००० डॉलर रॉलिंग्स को सत्रम करने के लिए लेकर संदन पहुँच भी चुका था। भाडे के सैनिकों ने हथियार इस्तेमाल अफ्रीका से खरीदने का निश्चय किया। इसके बाद कई गानाई नगरों पर एकसाथ हमला किया जाना था और देश में शासनविरोधी असतोष फैलाया जाना था।

सी० आई० ए० ने कितनी और ऐसी ही आतंकवादी कार्रवाइयों की तैयारी की है? कौनसे असीरी राज्य अमरीकी प्रशासन की मुहिमवाजाना नीति के विचार हो सकते हैं?

संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा अफ्रीका में अनुप्राणित अतर्गम्य आतंकवाद की नीति किन्ने ही नशाओं और तरीकों का उपयोग करती है और वे आगामी में पश्चिम में नहीं आने है। लेकिन देर-सबेर सब सामने आ ही जाता है और विश्व एक बार फिर साम्राज्यवाद की गर्तिन और रक्तमय चालों में गिर उठता है।

आज अफ्रीकी जन वाशिंगटन द्वारा समर्थन पर बढ़ते जानेवाले मुन्गीटों के पीछे देखना सीधे बुद्धि है। 'आसीर-आसी' पत्रिका के अनुसार "बदल उमरें दिनों का बनना होता है, तो संयुक्त राज्य अमरीका जैसी भी आतंकवादी कार्रवाई का सामना

ले सकता है।" वाशिंगटन किसी भी देश द्वारा अपने को नवउपनिवेशवाद से मुक्त करने के किसी भी प्रयास को समुक्त राज्य अमरीका के "बुनियादी हितों" के लिए खतरा मानता है। 'आफ़्रीक-आज़ी' पूछता है "क्या इस तरह के राजकीय आतंकवाद से भी बदतर किसी आतंकवाद की कल्पना की जा सकती है?"

न अमरीकी प्रशासन ही इस सवाल का कदाचित्त जवाब देगा और न सी० आर्द० ए० के सूत्रधार ही इसका जवाब देगे - आखिर विज्व-प्रभुत्व के सघर्ष में आतंकवाद हमेशा ही उनका मुख्य हथियार जो रहा है।

## मित्र-देशों के ही खिलाफ ...

जनवरी, १९८१ में इतालवी पत्रिका 'इल सेतीमनाले' में प्रकाशित एक भेटवार्ता में रॉनल्ड रैगन ने कहा था कि वह "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उद्गम केंद्रों" पर प्रहार करने की ठान चुके हैं। इस प्रकार, औपचारिक सत्ता ग्रहण के भी पहले अमरीकी राष्ट्रपति ने एक अभियान छेड़ दिया, जिसे, तत्कालीन अमरीकी विदेश मंत्री अलेक्जेंडर हेग के शब्दों में, अमरीकी नीति में वही भूमिका अदा करनी थी, जो कार्टर के राष्ट्रपतित्व में "मानव-अधिकार" अभियान ने की थी। नये प्रशासन के बिल्कुल प्रारंभिक दिनों से ही हेग ने सोवियत संघ पर अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादियों को "प्रशिक्षित करने, पैसा देने और दस्त्र-सज्जिन करने" का आरोप लगाना शुरू कर दिया।\*

यह सोवियतविरोधी साधन-अभियान अधिकांश पश्चिमी यूरोप को ध्यान में रखकर छेड़ा गया था, जो आतंकवाद की कष्टदायी जड़ में समझा था। इसके जरिए मित्र-देशों को जनाया गया कि यह सोवियत

\* *The New York Times*, May 3, 1981, p. 1.





माग ने "मरकार के गुप्तचर्या अभिकरणों को अरबों दिया।" सी० आई० ए०, एफ० बी० आई० और अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या को स्वीकार करना पडा कि उनके पास आतङ्कवाद में सोवियत शिरकत का कोई प्रमाण नहीं है। प्रशासन के आग्रह पर सी० आई० ए० ने इस विषय के बारे में तीन रिपोर्टें पेश की, मगर परिणाम वह का वही रहा - "कोई प्रमाण नहीं है"।

इसके अलावा, जैसे कि अमरीकी समाचार एजेंसी एसोसियेटेड प्रेस ने १९८१ के अंत में सूचना दी, सी० आई० ए० के प्रवक्ता ने बतलाया कि सेन्सी ने भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय आतङ्कवाद के विषय पर कुछ भी प्रकाशित अथवा अनुसंधान न करने का फैसला कर लिया है। इसका कारण यह दिया गया कि इस प्रकार के प्रकाशन "बहुत विवाद उत्पन्न करते हैं और सी० आई० ए० की तरफ अनावश्यक ध्यान आकर्षित करने हैं।"

यह एक सुनी आत्मस्वीकृति थी। सी० आई० ए० इस नतीजे पर पहुंची कि अंतर्राष्ट्रीय आतङ्कवाद के "उद्गम" की खोज सेन्सी पर पड़ना सकती है, बल्कि कि आतङ्कवाद अमरीकी विदेश नीति का एक खराब उपकरण बन गया है और इसमें वह प्रच्छन्न मार्ग भी शामिल है, जो मजबूत राज्य अमरीका कई राज्यों में खुद अपने ही मित्र-देशों के खिलाफ चलाया जा रहा है। आइये, इस सच्चाई के कुछ प्रमाणों को लें।



चलाये जाने से बचने के लिए सातीनी अमरीका भाग गये थे, की बेटी पुलिस के जाल में फसी। जेलों ने मारीआ ग्रात्सीआ को पत्रवाहक बनाकर अपने साथियों को वे दस्तावेज पहुचानी चाही थी, जिनका इतालवी अधिकारियों और वाशिंगटन तथा नाटो मुख्यालय में कुछ अधिकारियों को ब्लैकमेल करने के लिए उपयोग किया जा सकता था।

जेल्लो ने सी० आई० ए० और नाटो के लिए वर्षों काम किया था और इतालवी मेसन संगठन के भीतर अति गुप्त पी-२ लॉज की स्थापना की थी, जिसका लक्ष्य देश में सत्ता को अपने अधिकार में ले लेना था। युद्धोत्तर वर्षों में जिन पद्धतियों ने इतालवी गणराज्य को डगमगाया था, उनमें यही सफना के सबसे निकट पहुच पाया था। और ऐसे पद्धत्यों भी बहूने थे। आइये, देखे कि इस विषय में जनरल जान जे-लीओ मालेत्ती क्या कहते हैं, जो कई साल इटली की प्रतिगुप्तचर्या सेवा के प्रधान रहे थे (यह अश जनरल मालेत्ती के साथ 'स'एक्सप्रेसो' पत्रिका के सहाय-दाता की भेटवार्ता से लिया गया है, जो पत्रिका में १५ मार्च, १९८१ को प्रकाशित हुई थी) :

“ प्रश्न : सीड \* में आपके कार्यकाल के दौरान कितने सत्ता-परिवर्तन पद्धत्यों रहे गये थे ?

\* सीड - SID - ( मूलतः सीफार - SIFAR इतालवी गुप्त सेवा का नाम है। जब इसे कई अलग-अलग सेवाओं में पुनर्गठित कर दिया गया है। - ज०



चलाये जाने से बचने के लिए सातीनी अमरीका गये थे, की बेटी पुलिस के जाल में फसी। उन्होंने मारीआ ग्रास्तीआ को पत्रवाहक बनाकर अपने सा को वे दस्तावेजों पहुंचानी चाही थी, जिनका इटा अधिकारियों और वाशिंगटन तथा नाटो मुख्यालय कुछ अधिकारियों को ब्लैकमेल करने के लिए उप किया जा सकता था।

जेल्सी ने सी० आर्द० ए० और नाटो के वर्षों काम किया था और इतालवी मेसन संगठन भीतर अति गुप्त पी-२ सांज की स्थापना की जिसका लक्ष्य देश में सत्ता को अपने अधिकार में ले लेना था। युद्धोत्तर वर्षों में जिन घट्यंत्रों ने इतालवी गणराज्य को डगमगाया था, उनमें यही सफलता के निकट पहुंच पाया था। और ऐसे घट्यंत्र भी बढ़ने

देखें कि इस विषय में जनरल जान बदे । क्या कहते हैं, जो कई साल इटली की सेवा के प्रधान रहे थे ( यह अंश जनरल साथ ' ' पत्रिका के संवाद

गया है, जो पत्रिका में

१

हुई थी ) :

कार्यकाल के दौरान  
रखे गये थे?

... - SIPAE इतालवी पुलिस सेवा  
सेवाओं में गुप्तचर



बलाये जाने से बचने के लिए लातीनी अमरीका भाग  
 लिये थे, की बेटी पुलिस के जाल में फसी। जेली  
 मारीआ ग्रास्सीआ को पत्रवाहक बनाकर अपने साथी  
 जो वे दस्तावेजें पहुचानी चाही थी, जिनका इतालवी  
 अधिकारियों और वाशिंगटन तथा नाटो मुख्यालय में  
 छ अधिकारियों को ब्लैकमेल करने के लिए उपयोग  
 किया जा सकता था।

जेल्ली ने सी० आई० ए० और नाटो के लिए  
 काम किया था और इतालवी मेसन संगठन के  
 अति गुप्त पी-२ साँज की स्थापना की थी,  
 जिसका लक्ष्य देश में सत्ता को अपने अधिकार में ले  
 लेना था। युद्धोत्तर वर्षों में जिन पद्धतों ने इतालवी  
 पराज्य को डगमगाया था, उनमें यही सफलता  
 सबसे निकट पहुच पाया था। और ऐसे पद्धत भी बढ़ते  
 आइये, देखे कि इस विषय में जनरल जान अने-  
 को मालेत्ती क्या कहते हैं, जो कई साल इटली की  
 गुप्तचर्या सेवा के प्रधान रहे थे (यह अज्ञ जनरल  
 मालेत्ती के माध्य 'ल'एक्सप्रेसो' पत्रिका के सवा-  
 द की भेटवार्ता में लिया गया है, जो पत्रिका में  
 मार्च, १९८१ को प्रकाशित हुई थी)

“प्रश्न: सीड\* में आपके कार्यकाल के दौरान  
 ने सत्ता-परिवर्तन पद्धत रहे गये थे?”

\* सीड - SID - ( गुप्त पीकार - SIPAR इतालवी गुप्त सेवा  
 का है। अब इसे कई अवयव-अवयव सेवाओं से पुनर्गठित कर  
 - में।







में इटली एक देशव्यापी सामन्यविरोधी पहलू के साथ  
में ही रहना रहा है। उसमें भाग लेनेवाले बढ़ने  
रहे हैं, इसी प्रकार ब्रिज मुठों के हाथ में पड़ने  
रही है, वे भी बढ़ने लगे हैं। मगर उसका लक्ष्य  
वही बना रहता है—जनवादी शक्तियों पर प्रहार  
करना, थर्मिक आंदोलन को मूल में डूबो देना और  
देश में प्रतिक्रियावादी तानाशाही की स्थापना करना।

जनरल मावेत्ती ने इन पहलुओं के खतरे को जान-  
बूझकर कम करके दिखाया था। सीन्यांग टोनीनी  
के पक्ष की ही तरह उनकी इस भेटवार्ता में भी एक  
गुल माना है। फासिस्त प्रेम बनेगीओ बोर्गेजे ने अपने  
गिरोही को गृह मन्त्रालय के सम्भागार के हथियारों  
में लैस किया था और पहलूवाली मार्क्सवादी इमारतों  
और टेनीविजन बंद को अपने नियंत्रण में लेने ही  
चाहे थे।

विद्रोही बोर्गेजे को एक 'नया मुसोलिनी'  
घोषित करने की तैयारियाँ कर रहे थे। वे सेना में  
अपने हमदर्दों—जनरल इगो रिबनी की कमान में  
स्विन टैंक बॉर और अमेरिकी अड्डों के निबट तैनात  
सेना की तीव्ररी बॉर—को अपनी सहायता के लिए  
बुलाने की सोच रहे थे। मैजिक गुप्तचरों के कर्नल  
आमोस स्पियात्सी के नेतृत्व में बागी टुकड़ियों को  
रोम को इटली के मध्यूरप्रधान उत्तरी भाग से काट  
देना था।

मावेत्ती के दावों के विपरीत भूतपूर्व छापामार  
और पी-२ साँज के सदस्य एदगार्दो सान्थो (उन्होंने

अनुसंधानों के माध्यम से विचारों को प्रसारित किया जा रहा था और यह शीघ्र ही एक सार्वजनिक धर्म के रूप में स्वीकार किया जा रहा था। यद्यपि के अनुसार राजनीति में प्रवेश को नियंत्रित कर दिया जाना था किन्तु आवश्यकताओं के अनुसार के रूप में जाने को प्रोत्साहित करना चाहते थे। यद्यपि का विनियमन अधिकारी पक्षों में ही निष्ठापूर्ण किया जा सका। दूसरा विनियम एक महीने बाद होने वाला था। इसमें बोरसों के अनुसंधानों भी शामिल थे। इसका भी निष्ठापूर्ण कर दिया गया। "

पांच साल में पांच यद्यपि वेमें इनके अन्वेषण भी चित्तों ही का उल्लेख किया जा सकता है। सन् १९२७ में जनरल दे मोरेन्को ने, जो पहले मैनिफेस्टो और बाद में सीफार के प्रधान रहे थे, सत्ता दबोचने की कोशिश की। उनकी योजना में ( जिसका कूटनाम सोलो था ) वामपक्षी पार्टियों तथा मजदूर सशस्त्र पर पाबंदी लगाये जाने और उनके नेताओं की निरफ्तारी की कल्पना की गयी थी। इस यद्यपि का परदाफास होने के बाद सीफार का पुनर्गठन हुआ और उसका नाम सीड हो गया। लेकिन नाम में परिवर्तन से संगठन के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया। नाटो की गुप्तचर सेवाओं ने अपनी अटार्कटिक सक्रियता इसकी सहायता से ही तैयार की थी। इसकी तैयारी प्रोमेथियस सक्रियता के नमूने पर ही की गयी थी, जिसने यूनान में "कासे कर्नलो" को उत्तारक करवाया था। लगभग सारे युद्धोत्तर काल



अमरीकी गुप्तचर्या एजेंट की तरह फाशिस्तविरोधी प्रतिरोध आंदोलन में भाग लिया था) के सफेद विद्रोह को, अपने संगठनकर्ताओं के ही शब्दों में, "प्रचंड, त्वर और निर्मम" होना था और भूतपूर्व प्रतिरक्षा मंत्री रादोल्फो पाञ्ज्यादी का अधिनायकत्व स्थापित करना था। स्पियात्सी ने ही रोजा देई वेंती पड़यंत्र भी रचा था।

मालेत्ती का इन बातों का उल्लेख न करना सभी कुछ स्पष्ट कर देता है—इटली की गुप्तचर सेवाओं ने इन सभी पड़यंत्रों में प्रमुख भूमिका निवाही थी। मालेत्ती और सीद के प्रमुख जनरल मिचेली उसी पी-२ सांज के सक्रिय सदस्य थे, जिसने प्रकाश में आये पड़यंत्रकारियों की मदद को आकर नये पड़यंत्रकारियों से उनकी प्रतिस्थापना की थी। यह बात इस भेटवार्ता के प्रकाशित होने के कुछ ही दिन बाद सामने आ गयी और मालेत्ती को अपने ऊपर फौजदारी मुकदमा चलाये जाने से बचने के लिए दक्षिण अफ्रीका भाग जाना पड़ा।

इससे यह समझ में आ जाता है कि क्यों जनरल मालेत्ती ने पड़यंत्रों की मुख्य संगठक सी० आई० ए० का उल्लेख नहीं किया। और असल में ये सी० आई० ए० और नाटो गुप्तचर्या अभिकरण—अमरीकी सैनिक-औद्योगिक गठबंधन के अभिकरण—ही है कि जो संयुक्त राज्य अमरीका की अपने मित्र-देशों के विरुद्ध गुप्त अंतर्ध्वंसात्मक सड़ाई के मूल में है और जिन्होंने इस सड़ाई की रणनीति तैयार की है।





संघटनों का उपयोग करना महायुक्त मिट्ट हो सकता है।”

अज्ञान पैदा करने के इस कुटिल निर्देश की यह व्यावहारिक शैली उस तथाकथित तनाव की रणनीति को प्रतिबिम्बित करती है जो अमरीकी पड़ोसकारियों और उनके इतालवी मित्रों की नानाशाही शासन की बुनियाद तैयार करने के लिए तबे समय में महामता पर रही है।

इस कार्य-प्रणाली में मौलिक कुछ भी नहीं है। इसके लिए राष्ट्रस्तान अग्निबाद का स्मरण करना ही काफी होगा, जिसे हिटलरियों ने कम्युनिस्टों और विरोध-पक्ष का सफाया करने के लिए करवाया था। नाटो के रणनीतिज्ञों ने पश्चिम में वामपक्ष के विरुद्ध अपने मर्ष में हिंसा आतंकवाद और जान में मारने की मालवी मिसाल का ही अनुकरण किया है।

अप्रैल, १९६७ में यूनाइटेड फ्रान्सिस बर्नार्डों ने मत्ता हड़प ली। उसी घड़ी में अमरीकी गुप्तचरों ने अपना भारी ध्यान इटली पर केंद्रित कर रखा है। यहारा, “स्वाह और छुप नाम आतंकवाद का बागी-बारी में महाराज लिये जान की प्रविधि पड़ी अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची है। लेकिन टीक इन्की को ही इसके लिए क्यों चुना गया ?

हान ही में मयुक्त राज्य अमरीका में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की १० फरवरी तथा ८ मार्च १९६८ की



अगर "अमरीकी समर्थन का उपभोग करनेवासी कोई सरकार सकल्प के अभाव अथवा शक्ति के अभाव में कम्युनिस्ट या कम्युनिस्ट-प्रेरित विद्रोह से लड़ने में कमजोरी दिखलाती है" या वह "अमरीकी हितों से असंगत अथवा उनके प्रतिकूल आत्यंतिक राष्ट्रवादी रुख" अपनाती है, तो यह समर्थन समाप्त कर दिया जाता है।

लेकिन अगर "एकमात्र निर्णेता" की हैमियन से संयुक्त राज्य अमरीका यह निर्णय करे कि उसके मित्र-देश निर्धारित शर्तों का पालन नहीं कर रहे हैं, तो? ऐसी सूरत में संयुक्त राज्य अमरीका मित्र-देश की "सरचना को रूपांतरित" करने के अपने अधिकार को जताता है। गुटका में कहा गया है कि अमरीकी सैनिक गुप्तचरों के पास "ऐसी विशेष बार्बाइया शुरू करने के साधन होने चाहिए, जो मेइवान देशों की सरकारों और जनमत को विद्रोह के सतरे की वास्तविकता और निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता का कायल कर सके। इस प्रयोजन के लिए अमरीकी सैनिक गुप्तचरों को विद्रोही आंदोलन में विशेष एजेंटों की सहायता में प्रवेश पाने की कोशिश करनी चाहिए, जिनका कार्यभार आंदोलन के अधिक उप सत्यों में विशेष कार्य-दल बनाना हो। ऊपर परिकल्पित ग्विन के उत्थान हो जाने पर अमरीकी सैनिक गुप्तचरों के नियंत्रण में इन दलों का हिमात्मक अथवा अहिमात्मक बार्बाइया शुरू करने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उपरोक्त सत्यों की गिडि में चारम बामोंपी

मशीनों का उपयोग करना महायुक्त मिद्ध हो सकता है।<sup>10</sup>

अज्ञान पैदा करने के इस कुटिल निर्देश की यह व्यावहारिक शैली उस तथाकथित नवाब की रणनीति की प्रतिबिम्बित करती है, जो अमरीकी पद्धतिकागिया और उनके इतालवी मणियों की मानाशाही सामन की बुनियाद तैयार करने के लिए लंबे समय में महायुक्त कर रही है।

इस कार्य-प्रणाली में मौलिक कुछ भी नयी है। इसके लिए राष्ट्रमस्तान अग्निकांड का स्मरण करना ही काफी होगा जिसे हिटलरियों ने कम्युनिस्टों और विरोध-पक्ष का मफाया करने के लिए बरबाद किया। नाटो के रणनीतिज्ञों ने पश्चिम में बाधपक्ष के विरुद्ध अपने मध्य में हिमा आनकवाद और जान में मारने की नाल्मी मिमान का ही अनुकरण किया है।

अप्रैल १९९७ में यूनान में कागिम्न करनेवां ने मना हुआ ली। उसी घड़ी में अमरीकी गुलबर्ग ने अपना मार्ग प्यान इटली पर बंदिन कर रखा है। बाइकला, "म्याह और छुप जान आनकवाद का बागी-बारी में महारा लिये जान की प्रबिधि यही अपनी पराकाष्ठा पर पहुची है। लेकिन टीक इग्ली का ही इसके लिए क्यों चुना गया ?

हाल ही में मयुक्त राज्य अमरीका में राष्ट्रीय युगला परिषद की १० परबगी लघा ८ मार्च १९९८ की

<sup>10</sup> Covert Action Information Bulletin No. 3 January 1979, p. 11.

रिपोर्टों को गुप्त दस्तावेजों की सूची से अलग करके प्रकाशित किया गया है। सारत, वे निष्ठुर "तनाव की रणनीति" के आधारवर्ती कार्यक्रम को निरुपित करती हैं। हम यहां इनके कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं:

"इटली में संयुक्त राज्य अमेरिका का बुनियादी लक्ष्य इस अत्यंत महत्वपूर्ण देश में हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के अनुकूल अवस्थाएँ स्थापित और कायम रखना है। अगर सोवियत संघ इन देशों—इटली, यूनान, तुर्की या ईरान—में से किसी पर भी नियंत्रण प्राप्त करने के अपने प्रयासों में सफल हो जाता है, तो समूचे पूर्वी भूमध्यसागर क्षेत्र और मध्य-पूर्व की सुरक्षा छतरे में पड़ जायेगी।" याद दिला दे कि साम्राज्यवादियों की शब्दावली में इस "नियंत्रण प्राप्त करने" का अर्थ इन देशों में वामपंथी सरकारों का विधिसम्मत, संसदीय तरीके से सत्ता में आना है।

१९४७ में संयुक्त राज्य अमेरिका ने इटली और फ्रांस की सरकारों से कम्युनिस्ट मंत्रियों को बरखास्त करवाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। लेकिन इटली में अप्रैल, १९४८ में पहले युद्धोत्तर चुनाव होनेवाले थे और वाशिंगटन इस आशका में सन्नस्त था कि वही चुनावों में कम्युनिस्ट और उनके साथ सहबंध में शामिल दल न जीत जायें। संयुक्त राज्य अमेरिका ने इतालवी मतदाताओं और राजनीतिज्ञों को खरीदने के लिए करोड़ों डॉलर सगा दिये। कारण राजनीतिक और मैनिफेस्ट अर्थों में रणनीतिक थे। रिपोर्ट में ब्राने कहा गया है: "भूमध्यसागर क्षेत्र में इटली की स्थिति



तो संयुक्त राज्य अमरीका सिसिली और सार्डीनिया पर सीधा आक्रमण करने का इरादा रखता था। इन टापुओं में जयचंदो के दल कायम किये गये थे, जो इटली से अपने वियोजन की और संयुक्त राज्य अमरीका में शामिल होने की इच्छा घोषित करने के लिए तैयार थे। सिसिली में पार्थक्यवादी आंदोलन में अगुआ भूमिका माफिया अदा करता था, भावी अधिमिलन से वह मादक द्रव्यों की तस्करी और अपने अन्य गैर-कानूनी कामों को बढ़ा सकता था।

प्रसंगत, पार्थक्यवादी प्रवृत्तियों को सी० आई० ए० आज भी प्रोत्साहित करती है। लेकिन आइये, अमरीकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की दस्तावेजों को फिर से। उनकी बात करते हुए 'ल'एक्सप्रेसो' पत्रिका लिखती है: "दूसरे शब्दों में, संयुक्त राज्य अमरीका गृहयुद्ध भड़काने और दक्षिणपंथी अधिनायकत्व स्थापित करने का प्रयास कर रहा था।"

## तीन "मकार"

पचास के दशक में इटली में संयुक्त राज्य अमरीका की राजदूत और 'टाइम' पत्रिका के स्वामी की पत्नी क्लेअर बूथ लूस ने एक बार अमरीकी पत्रकार माइरम मूल्लसबर्गर से कहा था, "सायद मुसोलिनी के मिर पर जेफरसन का विष चिपका दिया जाना चाहिए था, न?"



प्रभावितों के साथ मित्रि करने की अनुमति प्रभावितों प्रदान की है। माफिया की कार्यप्रणाली तो स्वयं मध्यम राज्य अमेरीका में भी प्रभावित हो चुकी है। जहाँ उसने दम्प निर्यस्त व्यवसाय का समर्थन अनेक मिडीकेट बना लिया है। जब द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरीकी गुप्तचरों तथा सेना को इतालवियों के समर्थन की उम्मीद पड़ी, तो इसके लिए कोरा मोस्का को ही चुना गया। उसके मरणों में से एक, मान्वातोर्रे सूचीआनो को, जो सकी सूचीआनो (सुग-किस्मत सूचीआनो) के नाम से अधिक सुजात है, जेल की कोठरी में एकदम एक आलीशान होटल में पहुँचा दिया गया। सूचीआनो के सूत्रों को मिमिलो में माफ़ीओसियो (माफिया-सदस्यों) के साथ संपर्क कायम करना सुगम बनाना था। मिमिलो में अमेरीकी सेनाओं के उतरने के पहले उन्हें "गुप्त उपवादी गुटों, उदाहरण के लिए, माफिया, के नेताओं के साथ संपर्क तथा संचार" स्थापित करने और उन्हें "हर संभव सहायता" देने का आदेश दिया गया था।\*

इस तरह से माफिया और अमेरीकी गुप्तचरों ने अपने भावी निरंतर बढ़ते सहयोग की नींव डाली, जो राजनीतिक हत्याओं और भड़कावे की कार्यवाहियों जैसे ध्वसात्मक कार्यों के लिए अपरिहार्य था।

मैसन संगठन सी० आई० ए० के लिए इसलिए

\* Gaia Servadio, *Mafioso. A History of Mafia from its Origins to the Present Day*, Secket and Warburg, London, 1976, p. 82.





गणनवधादियों की शक्ति में भाग लिया था और सा० से० का० तथा सी० आई० ए० ने आग्रह में उन पर दामपत्य भुक्तान ग्युने का मदेह किया था। बाद में कोर्वो ने अपने सम्पर्कों में लिखा "बैसी भारी गननी थी।" जरा यही देखिये कि शीनयुद्ध के समय पच्चीआदी ने इतालवी मजदूर मेनाओ को किस तरह से पुनर्गठित किया। "वफादार अमरीकी एजेंट ने इटली के प्रतिरक्षा मंत्री की हैमियत से अपने मालिकों की ईमानदारी से मच्ची मेवा की। हैमिये ने अपने 'नदी के पार, पेड़ों की छाह में' उपन्यास में इस "बड़े" सैन्यवादी-मंत्री के बारे में मर्मभेदी कटाक्ष के साथ लिखा है। आगे चलकर पच्चीआदी इटली में अपना अधिनायकत्व स्थापित पच्चीआदी इटली में अपना अधिनायकत्व स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील फाशिस्त-समर्थक शक्तियों के आदर्श बन गये। कोर्वो ने सिसिलियाई वकील सीदोना को भी अपने एजेंटों के जाल में शामिल किया। था, जो बाद में एक बैकर बन गये और 'वड्यंग्रो' का संगठन करने में सी० आई० ए० के सहयोगी और पी-२ लॉज के वित्तदाता बने।

अमरीकी यह बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि इस तरह के एजेंटों को किस तरह इस्तेमाल करना चाहिए। सा० से० का० के कर्णधारों द्वारा अनुमोदित अपनी योजना के बारे में मैक्स कोर्वो ने कहा था कि "यह केवल गुप्तचर्या की ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक युद्ध की भी योजना थी।" \* युद्ध किसके विलाफ?



अमरीकी राजदूत थीमनी लूस की बड़े उत्साह के साथ बराहना करने है "कनेक्ट्र बूथ लूस अपने दूता-  
 वाम में महात्मिनी सी० आई० ए० मन्त्रियाओं में गहरी  
 दिव्यमयी - और हिम्मा - सेनी थी अन्यत्र आकर्षक,  
 बुद्धिमान और मुखिज्ञ, आत्मविश्वास और शानीनता  
 में परिपूर्ण, तेज और दृढमन्य, किनी को भी इसके  
 बारे में मदेह न रहने देनेवाली कि प्रमुख कौन है,  
 थीमनी लूस जोरदार और प्रभावी राजदूतों की  
 मेरी सूची में बहुत ऊँचे स्थान पर है।" और होना  
 भी क्या! आखिर थीमनी लूस तो मुमोलिनी के  
 सिर पर जैफरसन का विग चम्पा करना चाहती थी।  
 राजदूतों के अधिकारों का स्पष्ट उत्सर्जन करते हुए  
 वह मनमाने ढंग में आदेशित करती थी कि इनकी  
 सरकार में किसे शामिल किया जाना चाहिए और  
 किसका शामिल होना रोका जाना चाहिए। वामपंथी  
 ईसाई जनवादी जोवान्नी प्रोकी के इटली का राष्ट्रपति  
 चुने जाने का विरोध इसकी एक ज्वलंत मिसाल है।\*

## मात्तेई का दूर किया जाना

जोवान्नी प्रोकी सोवियत संघ के साथ राजनीतिक तथा  
 आर्थिक संबंधों के सामान्यीकरण के पक्ष में थे। वह

---

\* १९८२ में राष्ट्रपति रैगन ने थीमनी लूस को अपनी नि-  
 सदस्यीय गुप्तचर्या मन्त्रिया परिबीक्षण परिषद की सदस्य मनोनीत  
 किया।



पूर्ण था कि जितना अंतर्राष्ट्रीय तनावों को बढ़ाना और हथियारों की होड़ को नेत्र करना। तेल इजारेदारिया अपने अतिनाभों को युद्ध उद्योगों में महत्वपूर्ण है। वे ब्राइट हाउस पर अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी नीति धोपने के लिए भी जोरदार प्रयास करती है। इसलिए हममें अंतरज की कोई बात नहीं कि सोवियत मध्य के विरुद्ध राष्ट्रपति कार्टर और ऐसे ही राष्ट्रपति रेगन द्वारा भी लगाये गये प्रतिबंधों में तेलवेधन उपकरण और इलेक्ट्रानिकी उपकरण भी शामिल हैं। बुरी तरह से चढ़ाये हुए दामों पर तेल की बिक्री से अतिनाभ तेल इजारेदारियों के लिए इतने ही महत्वपूर्ण है कि जितने फौजी ठेको से प्राप्त लाभ। इसके अलावा उनका सोवियतविरोध उन्हें पश्चिमी यूरोपीय बर्जुआजी के कम्युनिस्टविरोधी प्रतिवर्तों का लाभ उठाने और ईंधन तथा सैनिक सामग्री के लिए अतिशय दाम वसूल करके अपने ही साभेदारों को ठगने में समर्थ बना देता है। तनाव-रीधित्य का विरोध करते हुए अमरीकी अल्पतम के नेता एक पत्थर से दो शिकार करना चाहते हैं। वे अपने विचार-धारात्मक विरोधियों को हानि पहुचाने के उतने ही आकांक्षी है कि जितने अपने "मित्रों" को, क्योंकि "मित्र" का मतलब "प्रतिद्वंद्वी" भी है। और जब बात अरबों-खरबों डॉलरों की हो, तो उसके लिए सभी कुछ बाजिब है।

जिस सक्रिया का अंत २७ अक्टूबर, १९६२ को अमरीकी मास्केई के निजी विमान की दुर्घटना में हुआ,



मार्गों पर इन मन्त्रों को मान्य बनाने" (म  
विशालकर्म के दृष्टान्तों) को सिद्धान्त देने  
लिए विद्वत् कर्म के कर्मों को भी कुछ किया।

मार्गों के मार्ग के मार्ग का पता नमाने  
इसके कारणों से नाना प्रकार इस विमान-दुर्घटना  
बहुतों बाद भी पता चल रहे। उदाहरण के लिए  
मिमिनिदाई पत्रकार मातुरों के मातुरों ने अपने प्र  
गतायें जिन्होंने सीवान की अपनी यात्रा उदा  
के पत्रों मिमिनी में मानेई के अन्तिम दिनों के बा  
में सूचना पत्र की थी। मिमिनी के महाप्रमोद  
स्वामीश्रीने मारे गये जो मानेई की हत्या और  
मातुरों के गायक होने के बारे में अवश्य ही बहुत  
कुछ जानने रहे होंगे। इसी प्रकार व्यापारी कानेन  
कोको भी मारे गये जो स्कानीश्रीने की हत्या के  
जांच करने के लिए जेनोवा से मिमिनी आये थे  
ये सभी अपराध सी० आई० ए० तीन "मकार" और  
इटली की गुप्तचर्या सेवाओं के समुक्त कार्य की दौलत  
ही संभव हुए थे।

## उत्सावा-तंत्र

इटली के काताइकारो नगर के  
गुप्तचर्या एजेन्टों द्वारा १९६६  
में कराये गये विस्फोटों के बारे  
में। सीद के भूतपूर्व प्रधान,





गन्धीय इस ईश्वर सम्राट को "मान बनो" (मान विगावणम मेव इच्छामहे) को सिद्ध करने देने के लिए शिष्टा करने के वास्ते सभी कुछ किया।

मातेई की मृत्यु के रहस्य का पता लगाने का प्रयत्न करनेवाले लोग स्वयं इस विमान-दुर्घटना के बरसों बाद भी गायब होने रहे। उदाहरण के लिए मिमिनिवाई पत्रकार माउरो दे माउरो ने अपने प्राण गंवाये, जिन्होंने सीवान को अपनी घातक उड़ान के पहले मिमिनी में मातेई के अन्तिम दिनों के बारे में सूचना एकत्र की थी। मिमिनी के महाअभियोजक स्कालीओने मारे गये, जो मातेई की हत्या और दे माउरो के गायब होने के बारे में अवश्य ही बहुत कुछ जानते रहे होंगे। इसी प्रकार न्यायाधीश फाचेस्को कोको भी मारे गये, जो स्कालीओने की हत्या की जांच करने के लिए जेनोवा से सिमिनी आये थे। ये सभी अपराध सी० आई० ए०, तीन "मकार" और इटली की गुप्तचर्या सेवाओं के संयुक्त कार्य की बदौलत ही संभव हुए थे।



संश्लेषित इस विशाल समूह को "मान बूढ़ों" (मन विज्ञान-तन्त्र के एक विशेषज्ञ-समूह) को नियंत्रित करने के लिए नियंत्रित करने के लक्ष्य मधी कुछ दिना।

मान-बूढ़ों की मृत्तु के रक्षण का पता लगाने का प्रयत्न करनेवाले लोग स्वयं इस विमान-दुर्घटना के कारणों का भी मायब होने रहे। उदाहरण के लिए मिमिनिवाई पत्रकार माउरो दे माउरो ने अपने प्रान्त मध्यादे विज्ञानों मोमान को अपनी पापक उडल के लक्ष्ये मिमिनी में मानेई के अन्तिम दिनों के बारे में सूचना एकत्र की थी। मिमिनी के महाप्रबिगीक स्वामीजीने मारे गये जो मानेई की हत्या और दे माउरो के मायब होने के बारे में अवगत ही बूढ़ कुछ जानने रहे होये। इसी प्रकार स्वायाधीन फावेन्को कोको भी मारे गये, जो स्कानीजीने की हत्या की जाच करने के लिए जेनोवा से मिमिनी आये थे। ये सभी अपराध मी० आई० ए०, तीन "मकार" और इटली की गुप्तचर्या सेवाओं के संयुक्त कार्य की बदौलत ही संभव हुए थे।

## उकसावा-तंत्र

१९७६ में दक्षिण इटली के काताड्जारी नगर में इतालवी तथा यूनानी गुप्तचर्या एजेटी द्वारा १९६६ में रोम और मीलान में कराये गये विस्फोटों के बारे में सूचनाएँ शुरू हुईं। सीद के भूतपूर्व प्रधान,

आंदोलन के नेता प्लेटिस के साथ संपर्क स्थापित  
 लिये । ( यह " आंदोलन " तानाशाह मेनाक्मस के  
 विचारों से निर्देशित होता था, जिन्होंने ४ अगस्त,  
 १९३६ को यूनानी संसद को भग कर दिया था और  
 राजनीतिक दलों पर पाबंदी लगा दी थी ) अप्रैल,  
 १९६६ में राज्जी ने पादुआ में एक गुप्त सम्मेलन  
 में भाग लिया, जिसमें समस्त उत्तरी तथा मध्य इटली  
 में उग्रवादों की कार्यवाहियाँ करने का निश्चय किया  
 गया था । इन उग्रवादों को दो बट्टर फासिस्ती फ्रांको  
 फेदा और जोवान्नी बेनूरा के पादुआ स्थित गुट द्वारा  
 संगठित किया जाना था । फेदा ' आर्य ' विचारों  
 के प्रचारक और प्रकाशनगृह का प्रधान था ।

पादुआ सम्मेलन के बाद फेदा गुट काम  
 में लग गया — नौ महीने की अवधि के भीतर उसने  
 २२ हत्याओं और अग्नि-बमबाँझों का आयोजन किया ।  
 इन सभी कार्यवाहियों की परिणति १२ दिसंबर, १९६६  
 को मोलान के कृषि बैंक में एक जबरदस्त विस्फोट  
 में हुई, जिसमें १६ लोग मारे गये और ८० घायल  
 हुए । इसी के साथ-साथ रोम में भी विस्फोट हुए ।

अपने एजेंट जेड ( जानेंतीनी ) के जरिए सीड  
 ( और, निस्संदेह, सुपर-सीड ) को प्रस्तावित  
 भाराघों के बारे में मानूँ या मगर उसने उन्हें  
 रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया । इन आतंकवादी  
 कार्यवाहियों के बिलने ही संगठनकर्त्ताओं — बट्टर फासिस्ती  
 की सीमा पार करने में सहायता की गयी । उनके  
 बचाव अराजकतावादियों को बलि के बकरे बनाया



के नमूने पर होनेवाले विद्रोहों के अविराम सिलसिले में अपने डम का अनूठा पद्वयत्र है।

१९७३ के वसंत की बात है। मीलान में पुलिस आयुक्त कालाब्रेस्सी के सम्मान में निर्मित स्मारक का अनावरण समारोह हो रहा था। समारोह में भाग लेने के लिए इटली के प्रधान मंत्री मारीग्रानो रूमोर विशेष रूप से आये थे। समारोह के दौरान भीड़ में एक दक्षिण आदमी ने "पीनेल्सी जिदाबाद!" का नारा लगाते हुए एक हथगोला फेंक दिया। विस्फोट से चार लोग मारे गये, बीसियों घायल हुए और भगड़ मच गयी। लेकिन रूमोर को कोई हानि नहीं पहुँची और अपराधी को, पद्वयत्रकारियों की आशा के विपरीत, मौके पर ही पकड़ लिया गया। पूछ-ताछ के दौरान वह यही दुहराता रहा कि वह पीनेल्सी की मौत का बदला लेना चाहता था। मगर असल में रूमोर की हत्या को रोखा देई बेती दल द्वारा आयोजित सत्ता-परिवर्तन के समारम्भ का संकेत होना था।

हथगोला फेंकनेवाला बेर्नोली महज एक मोहक था। वह एक सामान्य अपराधी था जिसका राजनीति में कोई दूर का भी संबंध नहीं था। इसके लिए कि उसका उद्देश्य विद्रोही प्रतीति हो सके उसे "सबुरबा पाने" के लिए एक अराजकतावादी संगठन में शामिल होने का अवसर दिया गया था। इसके बाद बेर्नोली को जेल भेजा जाते और अदालत में लाये जाने का अवसर था। इसका अर्थ है कि यह एक अराजकतावादी

गया। उनमें से एक - कानवेरा - को अपराधी घोषित कर दिया गया। एक और अपराधकनावादी पीनेन्सी मीनान गुविम द्वारा गूल्-गाल के दौरान मर गया। पीनेन्सी ने गूल्-गाल करनेवाले गुविम आयुक्त काना-वेरा की आत्मकथादियों ने हत्या कर दी।

जाप के दौरान महत्वपूर्ण माध्यम नष्ट कर दिया गया। जब मुख्य आधिकारिक विभाग अवर्तमान मिड हुआ, तो गुप्तचरों सेवाओं ने दूसरा विवरण गड़ दिया। कई वर्ष बाद जाकर ही इस अप्रत्यक्ष अपराध के वास्तविक कर्माओं फेदा और बेनूरा को कठपुतरे में लाया गया। लेकिन कानाद्वारों ने मुकदमे का अंत अपराधियों को शर्मनाक दोषमुक्ति में हुआ।

इस प्रकार इटली में वर्तमान आतंकवाद के मूर्कों की खोज हमें आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के अलवरदारों, सर्वोपरि नाटो के मनोवैज्ञानिक युद्ध-भिकरणों, पर ले जाती है। वे व्यवस्थाभ्रंशक शक्तियों के लिए दडमुक्ति मुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि तीन "मकारों" की सहायता से पड़्यों और आतंकवाद के सिलसिले को जारी रख सकें।

रोजा देई घेंती

रोजा देई बेती ('हवाओं का गुलाब') "फासिस्त पलीता, वामपंथी बहाना, दक्षिणपंथी सत्ता-परिवर्तन"





गया जहाँ एक गांव में अधिक बड़ा एक कीमती\* में रहा। जब उपर्युक्त समझ आया तो उसे इतनी बुराई मानकर मीनान में डाला गया और हाथ में एक हथियार दे दिया गया। उसमाका कनीमून हुआ - दशिनगामी प्रेम ने कम्युनिस्टों के निवास पर हमला होकर मारा गया कर दिया। लेकिन हत्या-प्रणाली को विफलता के कारण रोडा देई वेनी गुट मना-परिवर्तन को कार्यरत न दे सका।

पड़्यनकारियों द्वारा तैयार की गयी दस्तावेजों में कहा गया था कि कमोर की मृत्यु वह घमाका साबित होगी, जो "मशम्र मेनाओं को सीधे राष्ट्रीय मस्याओं के रक्षार्थ सामने आने के लिए मजबूर कर देगा"। म्यामाधीन ताबूरीनो के कथनानुसार रोडा मता-परिवर्तन के दौरान "२००० राजनीतिक और सैनिक हस्तियों का शारीरिक विनोषन" हो सकता था।

पड़्यन में कई शीर्षस्थ सेनाधिकारी शामिल थे। इतालवी प्रेम के अनुसार नाटो सुरक्षा सेवा के प्रधान जनरल जॉनसन पड़्यन से प्रत्यक्षत जुड़े हुए थे। पड़्यन की तफसीली पर पी-२ सॉज के सदस्य, बैकर सीदोना के घर पर बातचीत की गयी थी। जैसे कि सीदोना ने बाद में स्वयं स्वीकार किया, वह अमरीकी बैकरी\*\* के मित्र और सी० आई० ए० के एजेंट थे।

\* इसराएली सहकारी कार्य और उसकी बस्ती। - ४०

\*\* आनाय कानेली और डेविड कनेडी से है। दोनों ही अमरीका के वित्त मंत्री रह चुके थे। डेविड कनेडी राष्ट्रपति रीघन के आंतरिक हमको से सबड है।



और उनके द्वारा विधानाम में अमरीकी मुद्रिमन्त्री की निम्न के कारण नकल करने थे। सी० आई० ए० के चरम दक्षिणपंथी मण्डल ओ० ए० एम० के भाव, त्रिगुणों के गोल के विरुद्ध विनये ही पद्धतों में निरवकाश थी, मन्त्र कोर्ट अज्ञान नहीं है। यह बाद दिवाना ही काफी रहेगा कि दे गोल की हत्या के कोर्ट ३० (१) प्रमाण विनये गये थे। अगर वह इनमें डब पाये, तो अज्ञान फामोसी मुरझा मेवाओं के प्रदानों की बदौलत, त्रिगुणों उन्होंने पुनर्गठित किया था, और अज्ञान शुद्ध सयोग में ही।

भूतपूर्व सी० आई० ए० कर्मी मोमालेस-माता ने अपनी पुस्तक 'दुनिया के असली मालिक' में दे गोल के विरुद्ध सी० आई० ए० के प्रच्छन्न कार्यों का वर्णन किया है। सी० आई० ए० ने मई, १९६८ में पेरिस में छात्रों के जनरल दे गोल के विरुद्ध आंदोलन का किस प्रकार उपयोग किया, इसका विवरण विशेषकर रोचक है। एजेंट 'राजहस' (स्वयं मोमालेस-माता ही) को उपपथी छात्र मंडलियों में घुसपैठ करने का कार्यभार सौंपा गया था। इसके बारे में उन्हें पेरिस में स्वयं जनरल वाल्टर्स ने निर्देश दिये थे और इस बैठक में अमरीकी थमिक मण्डल ए० एफ० एन० - सी० आई० ओ० के मोलीजानी नामक एक प्रतिनिधि ने भी भाग लिया था।

यह सचमुच हैरत की बात है कि अमरीकी मजदूर सभों कर्ता-धर्ता यूरोप में ध्वंसात्मक कार्रवाइयों में कितना भाग लेते हैं। उनके प्रतिनिधि अरविग ब्राउन



आई० ए० तथा अमरीकी सैन्य गुप्तचरों मरियाओ के समन्वयक टैलम ने राजद्रुम को उनका कार्यनार ग्राह्य करने हुए कहा था कि "नश्य वामपंथियों द्वारा मत्ता के हथियारों को मुगम बनाना नहीं, बल्कि प्रदर्शनकारियों और व्यवस्था की शक्तियों के बीच मुठभेड़ करवाकर और अमनोप को प्रोत्साहन देकर फाम की 'मूक बहुमस्या' को ऐसी कार्यवाई करने के लिए उकसाना है, जो दे गोल को अपनी नीति बदलने, पूर्वी देशों में विरत होने और मयुक्त राज्य अमरीका के साथ मैत्री-मन्धों में जुड़े यूरोप के आचन में लौटने को विवश कर देगी। दाये बाजू के दबाव को इस्तेमाल करके दे गोल को इस्तीफा देने और ऐसी सरकार के वास्ते रास्ता छोड़ने के लिए भी मजबूर किया जा सकता है, जिसके साथ सहमति ज्यादा आसान होगी हमें विद्रोही नेताओं का विश्वासपात्र बनना होगा, ताकि उनकी योजनाओं को जान सके और उन्हें अपने हित में प्रभावित कर सके।

"प्रारम्भिक अवस्थाओं में यह महत्वपूर्ण है कि हमारे मित्र, जो आंदोलनकारी गुटों में शामिल हो गये हैं, प्रदर्शनकारियों को यथासंभव अधिक टकराव की स्थितियाँ पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करें।"

राजद्रुम को सोरबोन (पेरिस विश्वविद्यालय) में पहुँचा दिया गया और वह ओडियन थियेटर में स्थित लडाकू वामपंथी गोशियों\* के मुख्यालय



कृष्णी पर वे गभीर खाने वागिगटन को बहूत  
 शिगिग कर रूी थी। यही कारण है कि स्पेन में  
 वागिगन पचात्री आदोवन और तानाशाही दामन में  
 नवत्रोवन का मचार करने के उद्देश्य में उमी पुरानी  
 'तनाव की रगनीति' का प्रयोग किया गया। इसके  
 लिए इटली की ही मानि यहा भी एक मान हीआ  
 यडा करना, आतकवाद की समन्या पैदा करना जरूरी  
 था। अमरीकी गुप्तचर्या और स्पेनी सुरक्षा सेवाओं  
 ने इस कार्य के लिए पार्यक्यवादी प्रकृतियों का उपयोग  
 करने का निश्चय किया।

पार्यक्यवाद पर, अनेक यूरोपीय देशों में अपनी  
 विशिष्टताओं को बनाये रखनेवाले सजातीय समूहों  
 पर दाव लगाना "साल और काले" आतकवाद के  
 खेल की तरह ही सी० आई० ए० का एक सामान्य  
 तरीका बन गया है। "पार्यक्यवादी तुरप" का नि-  
 सिली और सार्दोनीआ में भी प्रयोग किया गया था।  
 १९७८ के फ़ासीसी समदीय चुनावों की पूर्ववेला में  
 समाजवादी नेता मिशेल रोक़ार ने कहा था कि सी०  
 आई० ए० ने वामपक्ष के विजयी होने की सूरत में  
 फ़ास के अस्थिरीकरण की एक योजना तैयार की है।  
 इस योजना के अनुसार फ़ासीसी वामपक्ष के विरुद्ध  
 विभिन्न सजातीय-कोर्सिकाई, ब्रेटन, एलसास-लोरी-  
 नी-आतंकवादी गुटों का उपयोग किया जाना था।  
 और सचमुच, चुनावों के ठीक पहले उनकी सरदर-  
 ॥ तेजी आ गयी। १९७८ के आम चुनावों  
 यों की ही जीत हुई, मगर १९८१ में





करने का तदर्थ रखा जा रहा था। इन "राजनयत्रों" में से एक ने अपने बहिष्कृत अधिकारियों को इसी गृहना दी और ज्ञेय कि गोंगालेस-माता अपनी पुस्तक में लिखने है "यह मानने हुए कि कार्ररो ब्लाको का हटाया जाना स्पेन तथा पुर्नगान में अपनी राजनीति के प्रयोग में सहायक रहेगा", उस "राजनयत्र" में "हत्या-प्रयत्न की सफलता सुनिश्चित करने के लिए सभी कुछ" करने को कहा गया। लेकिन इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि सभी कुछ "पार्लियामेन्टारियों द्वारा की गयी आतंकवादी कार्रवाई" ही प्रतीत हो। आतंकवादियों ने उस सड़क के नीचे एक सुरंग खोद डाली, जिसमें कार्ररो ब्लाको आम तौर पर गिरजाघर आया करते थे। १६ दिसंबर, १९७३ को उन्होंने सुरंग को विस्फोटकों से भर दिया। "राजनयत्रों" के एजेंटों ने चोरी से सुरंग में प्रवेश किया और ("ताकि पूर्ण सफलता मिले") उनमें इलेक्ट्रिक पत्ती के दो टुकड़ों की सुरंगों और रख दी। अगली सुबह "बास्क आतंकवादियों" और स्पेन के साथ मैत्री संबंध रखनेवाले एक देश के "राजनयत्रों" ने मिलकर स्पेनी प्रधान मंत्री और उनके अलावा दो पुलिसवालों को विस्फोट द्वारा स्वर्ग पहुँचा दिया। भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट गोंगालेस-माता ने ब्लाको की हत्या का यही विवरण दिया है। उन्होंने "राजनयत्रों" के नाम भी दिये हैं—अमरीकी दूतावास के सुरक्षा अधिकारी वेन तथा स्पेन में अमरीकी गुप्तचर्या-प्रमुख रॉबर्ट। एलम्बेडर हेग को, जो उस समय सहायक विदेश

गयी थे, सूचित कर दिया गया था कि हत्या किस दिन होनेवाली है।\*

राष्ट्र में स्पेन में शीर्षस्थ सैनिक न्यायाधीशों और वकीलों की हत्याओं और शासक दलों के कार्यकर्ताओं के अपहरणों की खबरें आयीं। १९८१ में स्पेनी बोरगेज़े-ब्रानोनीओ तेहेरो मोलीना—ने अपने सह-अपराधियों के साथ आंतरिक अस्थिरता और आतंकवादी सतरे के आगे सरकार की “शक्तिहीनता” को कारण बताकर स्पेनी समद-भवन को कब्जे में ले लिया। विद्रोह को तो कुचल दिया गया, मगर अमरीकी सरकार स्पेनी सरकार को इस सफलता पर बधाई देना “भूल” गयी—प्रत्यक्षतः, “शांत अमरीकियों” की साक्षनिक मनश्चकता के कारण ही।

## साल ब्रिगेडों के अजीब पहलू

इटली में तथाकथित लाल ब्रिगेडों की मन्गगमियों में आठवें दशक के आरम्भ में छामकर तेज़ी आयी। उनकी “चोट करो और भाग जाओ” की कार्यनीति ने विकसित होकर “अन्तर्गततापूर्ण आतंकवाद” का रूप ले लिया। गहरी अवस्थाओं में यौद्धिक कार्य-कलाप को प्रचारित किया जाने लगा। हथियारों की दूकानों पर छापी और हिरोनी के लिए अपहरणों

\* Gonzales Mata L. *Les vrais maîtres du Monde* Paris, 1979, pp 111-116

कभी-कभी ब्राह्मण लोग का यह कहना कि "राजन्य" के लोभ के कारण वे अपने पाले-पुल्ले के अर्थसंग्रह को अपने स्वयं के लिये ही करते हैं कि संगठनमय व्यवस्था के लिये कुछ वे निरर्थक हैं। यह वाक्य ही कि हमारे लिये ही हमारा व्यवस्थापक लोग तथा पुनर्वसन के लिये रखने के उद्योग के अर्थसंग्रह करना। उस "राजन्य" में हमारा उद्योग ही सङ्गठन सुनिश्चित करने के लिये सभी कुछ करने को कहा गया। लेकिन अपने अर्थसंग्रहों का यह कहना ही कि सभी कुछ "सार्वजनिक" शासकों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु। अर्थसंग्रहों ने उस सङ्गठन के नीचे एक मुरग बोझ डाली, जिसने हमारे स्वाच्छा आत्म और पर गिरावट आना करीब १६ दिसंबर १९७३ को उन्होंने मुरग को विच्छेदित कर धर दिया। "राजन्य" के एजेंडों ने लोगों के मुरग में प्रवेश किया और ("नाकि पूर्ण सङ्गठन मिले") उनमें इमेडियती पर्वों ने सभी को टंकनाली मुरगों और रख दी। अपनी मुबह "हाम्क आर्थसंग्रहों" और स्पेन के माघ मंत्री सङ्घ रखनेवाले एक देश के "राजन्य" ने मिलकर स्पेनी प्रधान मंत्री और उनके अलावा ही पुनर्वसन के लिये।



करने का पहला स्तर था राजा का। इन "राजनयों" के दो स्तर थे जिनके अधिकारियों को इसी मंच पर ही बीजे देने के लिए गोसांवेस-माता अपनी पुस्तक में लिखते हैं "यह मानने शुरू कि कार्मेरो ब्लॉक का इलाका जंगल भोज तथा दुर्गमत्व में अपनी रणनीति के उपयोग में सहायक रहेगा" उस "राजनय" में "हत्या-प्रवास की संयोजना सुनिश्चित करने के लिए सभी कुछ" करने को कहा गया। लेकिन इसमें घटकापूर्ण बात यह थी कि सभी कुछ "पार्यक्षवादियों द्वारा की गयी आणकवादी कार्रवाई" ही प्रतीत हो। आणकवादियों ने उस मंच के नीचे एक सुरंग खोद डाली, जिसमें कार्मेरो ब्लॉक आम तौर पर गिरजाघर आया करते थे। १६ दिसंबर, १९७३ को उन्होंने सुरंग को विस्फोटकों से भर दिया। "राजनयों" के एजेंटों ने चोरी से सुरंग में प्रवेश किया और ("ताकि पूर्ण सफलता मिले") उनमें इलेस्ट्रानो पत्तीले सगी दो टैंकनाली सुरंगों और रख दी। अगली सुबह "बास्क आतंकवादियों" और स्पेन के साथ मैत्री संबंध रखनेवाले एक देश के "राजनयों" ने मिलकर स्पेनी प्रधान मंत्री और उनके अलावा दो पुलिसवालों को विस्फोट द्वारा स्वर्ग पहुँचा दिया। भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट गोसालेस-माता ने ब्लॉक की हत्या का यही विवरण दिया है। उन्होंने "राजनयों" के नाम भी दिये हैं—अमरीकी दूतावास के सुरक्षा अधिकारी वेन तथा स्पेन में अमरीकी गुप्तचर्या-प्रमुख रॉबर्ट। एलैम्बेडर हेन को, जो उस समय सहायक विदेश





तयारकित अराधकतापूर्ण (अधा) आतङ्काद सी० आई० ए० द्वारा अपने भित्र नाटो-देशो की विभिन्न ममान सेवाओ के सहयोग से निरूपित कार्यनीति है जिसका उपयोग अधिकांशतः सरकारो को अभ्यर करने और सबद्ध आबादी से एक मजबूत पुलिस राज्य की स्थापना को स्वीकार करवाने के लिए अभोष्ट कार्यक्रमो के एक मुख्य तत्व की तरह बिया जाना चाहिए।

चरम मामपयी नेताओ के अमरीकियो और दक्षिण पक्ष के साथ सपनों में कोई अमान्य बात नहीं है। पहले फासिस्त और बाद में साल विरोधो के एक नेता रेनातो बूचीओ पेरिस में लंबे समय लेयी के साथ-साथ रहे थे। उन्हें अनेक बार गिरफ्तार बिया गया पर हर बार वह जेलो में बड़ी आसानी से निराल भागने थे, जो है तो अजीब मगर उनके बहुत से मित्रो के लिए भी साक्षणिक है। लेकिन जब उन्हें पीडा नगर के जेममाने में डाला गया तो एक अद्भुत समय में उन्हें किसी रॉनल्ड स्टार्क नामक अमरीकी के साथ एक ही कोठरी में रखा गया। स्टार्क ने बूचीओ को मध्य-शुब में अपने मित्रो के पले दिये जो हथियारो की लरीद में उनकी महायता बर सजने थे। स्टार्क ने बूचीओ को यह भी मियमाया कि बिम्बोडको को किस तरह इम्नेमान बिया जाना चाहिए।

स्टार्क को जल्दी ही रिहा कर दिया गया यद्यपि उन पर बितने ही आरोप लगाये दये थे। यह जान है कि वह मजबूत राज्य अमरीका में और बाद में बेन्जमिन डे शक्तिशाली मारक इन्ध बनाना



४। उनके मध्यम कर्मी से सबसे बड़े हेमोसुन मन्त्रों के  
 साथ संबंध थे। उनका बीचो-बीच में एक रेश (पशु-  
 कार्य) था, जहाँ 'मादक पशुओं के कर्मी' दिखते  
 थे। यह कहते थे, जिन्होंने गाने प्रयोगों में एम०  
 एम० सी० का गुणमान किया था। मोरो एम० एम०  
 सी० का अपने शिष्टी अनुमानियों पर परीक्षण करना  
 समझते थे। बाद में यह दृष्ट हुआ कि वे प्रयोग  
 एक सी० आई० ए० कार्यक्रम के अंग थे, जिसके अंतर्गत  
 "मानव आचरण बदलने", मनुष्य की मनोवृत्ति को  
 विकृत करने और उसे अपने हाथों का आधार बनाने  
 में समर्थ औद्योगिक कर्मियों को विकसित किया जाना था।

जब ११ अक्टूबर, १९७६ को (इतनी में आन्दो  
 मोरो को हत्या के बाद) एक बार फिर-इस सर्वज्ञ  
 बोमोन्वा में-स्टार्क को जेल से रिहा किया गया,  
 तो इसलिए कि न्यायाधीश का कहना था कि उनपर  
 मुकदमा चलाया ही नहीं जा सकता, क्योंकि अभियुक्त  
 "सी० आई० ए० एजेंट है और वह इसी हैमिजन  
 में काम कर रहा था" (!)।

तो यह रहा जनरल वैंस्टमोरलैंड के मुद्दा  
 में "चरम वामपंथी संगठनों" के अमेरिकी गुप्तचरों  
 द्वारा उपयोग किये जाने के प्रकरण का विदा सङ्ग।

क्या यह अचरज की बात है कि नाल बिगेडो  
 और सर्वहारा सशम के मुछौटे पहनकर पूजीवादी  
 ॥ को "उलटनेवालों" ने प्रगति के घोर शत्रु-  
 ॥ होने की अपनी असलियत को उघाड़ दिया है!  
 । फ़लागियों के नेता, नाटो की गुप्तचर्या सेवाओं

की सहायता से स्थापित नवफाशिस्त काले इंटरनेशनल के सदस्य तोलो ज्वास्को ने इतालवी पत्रिका 'एऊरोपीओ' के सवाददाता से बातें करते हुए कहा था "हम एक आश्चर्यजनक परिघटना के प्रत्यक्षदर्शी हैं। हमने दिखला दिया है कि माओ के विचार हिटलर के विचारों के निकट हैं " "स्पेन में नाल ब्रिगेडों में कितने ही लोग चीन-समर्थक रक्तान के हैं। हम उनमें कहते हैं 'स्वागतम्'।" \*

दक्षिणपक्ष को वामपक्षी आवरण ओढ़ने से कोई आपत्ति नहीं। मैग्ली के मित्रातकार इसकी उपयोगिता को बहुत पहले ही खोज चुके हैं - वामपक्षी आतंकवादी उकसावों के लिए बढ़िया आवरण पेश करते हैं, फिर चाहे वे अपने वामपक्षी विज्ञानों के अनुसार काम कर रहे हों, अथवा मरीदे हुए प्रोने-जक ही हों। इस आवरण का बीमा भी राजनीतिक अपराध करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। आन्दो मोरो की हत्या इसकी एक मिगाल है।

"मे संयुक्त राज्य अमरीका में  
सर्वथा कोई सहानुभूति नहीं पाता"

बैनेडी बघुओं की हत्याओं की ही भाँति इटली की ईसाई-शोषताक्षिण पार्टों के अध्यक्ष आन्दो मागो की

\* *L'Europeo*, 17 XI 1978, 18.XI.1979

मृत्यु कीमतों मोरो के तुलनाई का एक मशीनमन राज-  
 नीतिक अंगण है। बाहरी राजनाकम मरिजान है। १९७८  
 में मार्च के मध्य में मान रिगेडो ने रोम में बीजा  
 कानी ( कानी मार्ग ) पर आन्दो मोरो की बार को  
 गोक विधा। उनके अंगणको का आगानी में बाग्या  
 का दिया गया और मोरो को तपाकविन "जन-  
 कारागार" में हाथ दिया गया। ६ मई को मान  
 रिगेडो ने एक टेपीकोन-मदेन प्राप्त होने के बाद  
 मोरो की मान राजधानी के केन्द्र में, ईमाई-नोक-  
 ताविक पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यालयों के अग्र-  
 बीध, पायी गयी। मान का इस तरह से पाया जाना  
 अपने ही वृग का एक प्रतीक था—मोरो को शासक  
 ईमाई-नोकतववादियों और कम्युनिस्टों के बीच मोहार्द-  
 स्थापन करवाने के अपने मोद्देश्य प्रयामों के लिए  
 "दडित" किया गया था।

मोरो के अपहरण में भाग लेनेवाले ६३ व्यक्तियों  
 में से ५४ को गिरफ्तार कर लिया गया। फरवरी,  
 १९८२ में गृह मन्त्रालय ने रोम के निकट ही "जन-  
 कारागार" का पता लगाये जाने की घोषणा  
 की। अप्रैल, १९८२ में आतकवादियों पर मुकदमा  
 शुरू हुआ। लेकिन सवाल अब भी बना हुआ है—  
 इस दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की हत्या से लाभ असल में  
 किसे होना था?

क्या लाल रिगेडों को? शायद ही। मोरो  
 की हत्या ने उनकी कतारों में फूट पैदा कर दी।  
 "जन-कारागार" में मोरो की पूछ-ताछ से प्राप्त

सामग्री इतनी अपर्याप्त मिट्ट हुई कि ब्रिगेडवाने अपने इस घमकीभरे वचन को भी पूरा न कर सके कि वे मनमनीमेज रहस्यों को प्रकाशित करने जा रहे हैं।

मोरो का अपहरण करने का निश्चय क्योंकर लिया गया? उसकी प्रेरणा किसने दी? अमहाय बड़ी के मारे जाने पर किसने जोर दिया, जब यह स्पष्ट था कि उससे लाल ब्रिगेडो को फायदे की जगह नुकसान ही ज्यादा होगा?

सबसे तनावपूर्ण घड़ी में, जब यह आशा अब भी बनी हुई थी कि मोरो को बचाया जा सकता है, रोम की एक समाचार-एजेंसी ने यह रिपोर्ट प्रसारित की "मोरो के अपहरण के मूल में जो निदेशनकारी बंड है, उसकी लाल ब्रिगेडो से कोई भी सामान्यता नहीं है।" और इसके आगे कहा गया था 'उनका अपहरण सिर्फ इस मुरत में ही वांछित हो सकता है कि वह ईसाई-लोकतन्त्रवादियों और कम्युनिस्टों को सीहार्द-स्थापन की ओर निरंतर धकेलनेवाले सीक्रेट एजेंट को उमटने में सहायक हो।'

यह समाचार-एजेंसी काष्मीनो वेकोरेल्ली की थी जो सीको जेल्ली के भूतपूर्व मित्र और उनके पी-० मोरि के गद्यम्य थे। लेकिन जेल्ली में गुप्तचर सेवाओं की पाइने प्राप्त करने के बाद ब्रिगेडो इलायची राज-नीतिज्ञों से संबंधित पाइने भी थी वेकोरेल्ली अपने ही सहयोगियों को स्वीकृत करने लगे। इन सहयोगी-

पादनों के कुछ ही महीने बाद वेकोरेन्सी को मार डाला गया। उनकी ज़्यादा मुद्र में गोली दागकर की गयी थी। यह अपना मुद्र बंद न रख मरनेवालों के साथ निपटने का माफिया का तरीका है।

एक बात महोदयोंन है - वेकोरेन्सी जानते थे कि अपहरण के अमामी सूत्रधार साथ बिसेडवाने नहीं है और यह कि उनके सूत्रधारों की खोज अन्यत्र की जानी चाहिए। लेकिन कहा?

आइये, कागानार से मोरो के पत्रों पर नज़र डालें। ईसाई-सोवियत पाटों के शीर्षस्थ नेताओं की उन्हे बचाने की अनिच्छा को जानने के बाद मोरो ने लिखा था - "संभव है कि मेरे मामले में सली की यह स्थिति अमरीकी अथवा पश्चिमी जर्मन प्रभाव के कारण है।" अपहरण के कुछ सप्ताह पहले मोरो ने सीनेटर चेरवोनो से कहा था - "आप देखेंगे कि हमें अपनी नीति के लिए भारी कीमत अदा करनी होगी।" "किसे?" - सीनेटर ने पूछा। मोरो ने कहा - "देश में और विदेश में हमारे शत्रुओं को। मिसाल के लिए, मैं संयुक्त राज्य अमरीका में सर्वथा और पश्चिमी जर्मनी में आशिक रूप में कोई सहानुभूति नहीं पाता हूँ।"

मोरो राष्ट्रीय समझौते की अपनी नीति के प्रति संयुक्त राज्य अमरीका के विद्वेषपूर्ण रविये से बहुत परेशान थे। दिसंबर, १९७७ के अंत में उन्हे पता चला कि रोम में अमरीकी राजदूत रिचर्ड गार्डनर उनके बारे में वाशिंगटन को अत्यंत प्रतिकूल रिपोर्टें

भेज रहे हैं। मोरो ने अपने सहकारी पीजानू को वाशिंगटन भेजा, ताकि वह उनकी वाशिंगटन यात्रा की सलाहनाओं की बाह ले सके, जो इस तनाव को कम कर सकेंगी। पीजानू के साथ उदासीनता से पेश आया गया। रबोर्गेव वूभेज़ीन्स्की के सहायक ने उन्हें बताया कि वाशिंगटन में "कोई भी ईसाई-सोकतवावादियों के नेता से मिलना नहीं चाहता"।

संयुक्त राज्य अमरीका को यह आशंका थी कि मोरो की नीति यूरोप में समग्र स्थिति को विशेषकर फ्रांस में आम चुनावों को, जिसमें वामपक्ष की विजय बिल्कुल संभाव्य प्रतीत होती थी, प्रभावित कर सकती है। १२ जनवरी, १९७८ को अमरीकी विदेश मंत्रालय ने एक बड़ा वक्तव्य प्रकाशित किया जिसमें फ़ामी-मियो और इतालवियों को स्पष्ट सलाह दी गयी थी कि वे कम्युनिस्टों को अपनी सरकारों में किसी भी रूप में प्रवेश न दें।

मोरो जानते थे कि इस चेतावनी का मतलब क्या है। उन्होंने पेरबॉनो से कहा था 'ये लोग हमारे लिए सब कुछ करेंगे कि छूटे से छूटे बैन्नीफ़ो-निर्वाह मंजूर कर सकें।' निस्संदेह 'मंजूर' शब्द का प्रयोग यहाँ इन्तेज में किया गया था - बैन्नी-फोर्निया अमरीकी गैरिब-औद्योगिक गटजोड का हृद-स्थल था और अगला अमरीकी राष्ट्रपति बही में आनेवाला था।

मोरो पर प्रहार अधिकाधिक बढ़ होने जा रहा था। 'एऊरोपीओ' में प्रकाशित एक समाचार में

अनुसार ३ मार्च को कोनरिया विन्डविमान में भाग्य देव हुए राखद्वज गार्डन में कहा था "आन्दो मोंगो इनामचो गवर्नोर्निक समर्थ पर मचने मनमनाह और दुहरी बान कग्नेवाये ध्यस्ति है।"

और १६ मार्च को मोरों को राह में हड़ाने के पक्षत्र के पचीने में पानी मार्ग पर चिनपारी सपा दी गयी।

## नाटो के कठपुतली नचानेवाले

एक भेटवार्ता में सीचो जेल्मी ने कहा था कि वह बचपन से ही ऐसा कठपुतली नचानेवाला "बूरातीनाइओ" बनने का सपना देखते आये हैं, जो "सत्ता के सचा-सको" सहित लोगो को मन-मरजी के मुताबिक नचा सकता है। यह कोई कोरी डींग नहीं पी-पी-२ साँज के लगभग १,००० सदस्यो\* में इटली की सभी सशस्त्र सेनाओं के शीर्षस्थ अधिकारी, समस्त गुप्तचर सेवाओं के संचालक सम्मिलित थे—जनरल ग्रास्सीनी, सातोवीतो, जान्नीनी और पेलेग्नी, नाटो संगठन में एक उच्च पद पर नियुक्त ऐडमिरल तोर्रोर्नी।

\*यह ओरेल्सो में जेल्मी के निवास की तलाशी में मिली रस्तावेजों में उल्लिखित नामों की संख्या है। वास्तव में, इनामचो म रिपोर्टों के अनुसार, उच्च पदाधिकारियों में उत्तरी सदस्य-संख्या २,००० से अधिक है।

उमके सदस्यों में प्रमुख बैकर तथा उद्योगपति, अमबारो और टेलीविजन केंद्रों के मालिक, ईसाई-लोकतन्त्रवादी तथा समाजवादी मंत्री और समदीय नेता भी थे। लांज के अफीरा और लातीनी अमरीका के साथ मपर्क थे, मगर धनिष्ठतम मवध मयुक्त राज्य अमरीका के साथ ही थे।

इतना ही नहीं—पी-२ लांज के जगिए कोई २०,००० इतालवी मेसन सी० आई० ए० की एक तरह की शाखा का निर्माण करते थे। ऐसा क्यों? इसलिए कि अन्य पश्चिमी यूरोपीय देशों की भांति इटली में भी मेमोनिक लांजों का युद्धोत्तर पुनर्गठन अमरीकी गुप्तचर्या के नियंत्रण में हुआ था। इस पुस्तक में पूर्वोद्धृत मैक्स कौर्वो के बयानानुसार सी० आई० ए० का संचालन करनेवाले अमरीकी मेसन फीग्न हो इटली जा पहुंचे, जो अभी पूरी तरह से मुक्त भी नहीं हुआ था, नाकि वहां अपना जान फैला सके। यह कार्य फ्रैंक जीत्योनी नामक एक मेसन और दीर्घस्थ सी० आई० ए० अधिकारी के निदेशन में हुआ। उदाहरण के लिए, जेल्ली स्पेनी गृहयुद्ध में फाशिस्तों के पक्ष में लड़नेवाले स्वयंसेवकों में एक थे। मुसोलिनी की सेना में अफसर बनने के बाद उन्होंने इतालवी प्रतिरोध आंदोलन के छापामारों के खिलाफ अपनी बर्बरतापूर्ण कार्रवाइयों में कुख्याति अर्जित की थी। वह उन लोगों की एक मिसाल थे जिन्हें नये अमरीकी मेसन मण्डलों में लिया गया था।

जैसे कि पहले ही बतलाया जा चुका है मयुक्त



राज्य अमरीका के राजनीतिक आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि समुदाय में - राष्ट्रपतियों में लेकर विज्ञानजन नियमों के प्रणाली और मेना के सर्वोच्च अधिकारियों तक - मेमन पत्रिका में ही प्रमुख स्थानों पर रहे हैं। उदाहरण के लिए, मगभन मारे ही नाटो कमांडर मेमन है। पश्चिम के देशों के अन् और माउ के दृष्टि के आग्रह में इटली में नाटो के कार्यालयों और अमरीकी फौजी अटो में अमरीकी अफमरो के लिए विशेष मेमोनिक सांख्यिकी स्थापित किये गये थे - बेरोना में बेरोना एमेरिकन, बीचेन्सा में जार्ज वाशिंगटन, लीबोर्नो में बैजेमिन फ्रेडरिक्स, नेपल्स के निकट हैरी एम० ट्रूमैन और फोऊली में एबीआनो सांख्यिकी रोम में कोलोजिज्जअम सांख्यिकी अमरीकी राजनयज्ञों और सैनिक अफमरो के लिए है। नाटो के मेमन मास्टर ( बुद्धिया ) समुक्त राज्य अमरीका और इटली, दोनों देशों की 'ग्रेड ओरीएंट' मेमोनिक सोसाइटियों के एकसाथ सदस्य हो सकते हैं - इसकी बढौलत वे अपने इतालवी अधीनस्थों की डोर को हाथ में रख सकते हैं।

इस अमरीकी सहायता के बिना जेल्ली कहा हुए होते, जिन्होंने शुरुआत मन्त्रियों को अपनी कर्म द्वारा निर्मित गद्दे भेंट करके की थी? अपनी बारी में स्वयं फाशिस्त-बूरास्तीनाइयो की हैसियत कही अधिक कुशल कठपुतली नचानेवालों की कठपुतली से अधिक नहीं थी। अमरीकी सैन्य-औद्योगिक गठजोड़, ह्वाइट हाउस, सी० आई० ए० और विल्डरबर्ग क्लब तथा

4. आयोग के अधिपति जेल्ली और उनके सर्व-



मान्यता राम स्टेशन पर रिम्फोट त्रिमं २०० में  
अधिक मोंग माने गये और भ्रमण हुए थे। जेम्सी और  
उनके दुर्गों के मात्र मान त्रिमेटो में मीथे-मीथे  
जुड़े हुए थे।

ईमार्ड-मोंगनात्रिक पार्टी के राजनीतिक मंत्रि  
पीकरोसी ने कहा था कि 'मोंगों को इमर्निह हटाया  
गया कि वह नहीं पात्रने थे कि इटली मेंमनी मनि-  
विधियों का गुप्ता मच बन जाये।' जुलाई, १९८१  
में युनिग इम्पेक्टर माम्मीए के परिवार की मार्नेई  
के एक शान उपनगर में बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी  
गयी। माम्मीए पी-२ लांज के फामोसी समकक्ष-  
यम्शलम मंदिर के नाइटो के मघ-में सबड रहे थे।  
यह तुर्की में हथियार मरीडा करने थे और उन्हें इटली  
भेज देते थे, जहा वे लाल त्रिमेटो को दे दिये  
जाने थे। माम्मीए को ऐसे एक मौदे से हुई प्राप्तियों  
को छा जाने के कारण मारा गया था। इसके अलावा,  
फामोसी अधिकारियों की जाच से यह पता चला  
कि हथियारों का प्रेषण सी० आई० ए० के निर्देशों  
पर जेल्सी के लांज द्वारा संगठित किया जाना था।  
इतालवी और अमरीकी गुप्तचर्या सेवाओं के साथ  
यह लांज इटली में "काले" और "लाल" आतंक  
का संचालन करता था। इस प्रकार इटली तबे समय  
से अमरीकी "तनाव की रणनीति" के लिए भारी  
कीमत अदा करता आया है।

आज यह सुझात है कि जेल्सी का न्यूयार्क के  
इतालवी समुदाय के नेता और रॉनल्ड रेगन के राष्ट्रपति



## निष्कर्ष

'संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों' की प्रस्थापना ने जो अमरीकी हस्तक्षेपवाद का महत्त्वनात्मक आधार है वहाम के दशक के उत्तरार्ध में राजनीतिक गणराज्यी में पक्की तरह में प्रवेश पा लिया था। मिस्र के विरुद्ध निष्फल आत्म-कामीनी-इमराणी आक्रमण के फौरन ही बाद राष्ट्रपति आइज़नहॉवर ने कायेस में मध्य-पूर्व में मशरूफ़ सकिन का प्रयोग करने का विवेकाधिकार प्रदान करने का अनुरोध किया। ह्वाइट हाउस ने "मोवियन तथा कम्युनिस्ट मतरे" की कथोन-कल्पना को अपने नये आक्रामक सिद्धान्त की आधारशिला बनाया।

५ मार्च, १९५७ को अमरीकी कायेस के दोनो सदनों ने एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें, और बातों के साथ-साथ, कहा गया था:

"अगर राष्ट्रपति इसकी आवश्यकता समझें, तो संयुक्त राज्य अमरीका किसी भी ऐसे राष्ट्र अथवा राष्ट्रों के ऐसे समूह को सहायता देने के लिए सशस्त्र सेनाओं का उपयोग करने को तैयार है, जो अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के नियंत्रणाधीन किसी भी देश द्वारा सशस्त्र आक्रमण के विरुद्ध सहायता का अनुरोध करता है।"

इस तरह से तथाकथित आइज़नहॉवर सिद्धान्त

अभित्व में आया था, जिसने न केवल आनेवाले कई वर्षों के लिए अमरीकी रणनीति को आक्रामक ही नहीं बनाये रखा, बल्कि तत्काल कार्टर सिद्धांत के आदर्श का काम भी किया, जिसे सर्वप्रथम जनवरी १९८० में इस प्रकार सूचित किया गया था

“कारम की खाड़ी के क्षेत्र में बाहरी शक्तियों द्वारा नियंत्रण प्राप्त करने के किसी भी प्रयास को संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों पर प्रहार माना जायेगा, और इस तरह के प्रहार का सैनिक शक्ति सहित आवश्यक हर साधन से निवारण किया जायेगा।” \*

दोनों ही सूत्रीकरणों में युग्मजो जैसी समानता है। लेकिन फिर भी उनके बीच एक तात्त्विक अंतर है - आइज़नहाउवर सिद्धांत जहां किसी के “सहायता का अनुरोध” करने के प्रत्युत्तर में अमरीकी हस्तक्षेप की परिकल्पना करता है वहां कार्टर सिद्धांत अमरीकी राष्ट्रपति को सैनिक शक्ति का जहां वही भी वह “संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों” पर “प्रहार” का खतरा महसूस करे, वहां उपयोग करने का अनन्य अधिकार प्रदान करता है।

कार्टर सिद्धांत की बात करते समय इसका विशेषकर उल्लेख किया जाना चाहिए कि अपने निष्पक्ष में उमने राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में राष्ट्रपति के तत्वावधान विशेष सलाहकार ब्रुकेजीन्की द्वारा प्रतिपादित तथा-

\* *The Washington Post*, February 4, 1980, p. A 25

कथित "मकट के चापों" अथवा "अस्थिरता के चापों" की सकल्पना से बहुत कुछ ग्रहण किया है। इस सकल्पना का सारतत्त्व यह है कि कितने ही अफ्रीकी तथा एशियाई देशों में जातिकारी तथा मुक्तिकारी प्रक्रियाएँ "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" के लिए एक सभाव्य सुतरा प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रपति कार्टर ने २३ जनवरी, १९८० को अमरीकी कांग्रेस में सम्मुख भाषण देते हुए अपने नये मित्रता के मूलाधारों को प्रस्तुत किया। यह मित्रता संयुक्त राज्य अमरीका के महासैन्यशक्ति के वर पर विश्व-प्राधान्य के दावे पर आधारित था। कार्टर मित्रता को अपना प्रस्थान-विन्दु बनाकर पैटागॉन ने तुरत तडितपात मक्रिया की योजनाएँ तैयार करना शुरू कर दिया। इन योजनाओं में उन देशों तथा क्षेत्रों को अमरीकी मंत्राओं की विनोद इकाइयों के द्रुत प्रेषण की परिकल्पना की गयी थी, जहाँ कम्प्रे-जीन्सकी की सकल्पना के अनुसार "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" के लिए मनरनाक म्पिनि उत्पन्न हो सकती थी। तार्किक रूप में यह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को कुचलने के लिए एक नया हथियार निकालने की ही बात थी।

अन रैगन प्रशासन द्वारा मत्ता में आने के साथ प्रतिपादित "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध मर्षन" का मित्रता पूर्ववर्ती प्रशासन की आशामक मामलिक-

... सकल्पनाओं का तार्किक निवर्तन ही है।

... गंध की कम्युनिस्ट पार्टी की छद्मोपकी

राष्ट्र में प्रस्तुत राष्ट्रीय समिति की रिपोर्ट में इंगित किया गया है कि "मुहिमवादी और सकीर्ण तथा स्वार्थपरक लक्ष्यों की खातिर मानवद्वानि के हितों को दाब पर लगा देने की उद्यतता - अधिक आक्रामक साम्राज्यवादी हलकों की नीति में जो चीख विशेषकर बुने तीर पर सामने आयी है, वह यही है। राष्ट्रों के अधिकारों और आकांक्षाओं के लिए चरम तिरस्कार का प्रदर्शन करते हुए वे जनसाधारण के मुक्ति मर्षों को आत्मवाद की तरह से दिखाने का यत्न कर रहे हैं। उन्होंने सर्वथा असाध्य की सिद्धि करने के लिए - मरार में प्रगतिशील परिवर्तनों के आगे अवरोध डाल करने के लिए, जनगण की नियति का फिर से नियामक बनने के लिए - पग उठाया है।" \*

एशियाई, अफ्रीकी तथा लातीनी अमरीकी जनगणों के अपनी स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता के लिए न्यायमगत मर्षों को ह्वाइट हाउस अंतर्राष्ट्रीय आत्मवाद की तरह पैदा करने का हठपूर्वक प्रयास कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय आत्मवाद के दिग्दृष्ट मर्षों के गठे हुए बहानों की आड़ में अमरीकी साम्राज्यवाद राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर और सर्वोपरि समाजवादोन्मुख देशों पर गुना हमला बोल रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय आत्मवाद की समस्या बहुत समय से विश्व समुदाय के ध्यान का केंद्रबिंदु रही है। देश

\* मोरिसन जब की सम्पूर्ण 'जुनी' की छपीयों का एक संपादन तथा प्रकाश करने की कोशिश में लगे हुए थे।  
1950 जुन 22 (अमेरी में)।

9331

10-201





अन्य समाजवादी देशों के प्रतिनिधिमण्डलों ने गुट-निरपेक्ष देशों द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का एकमत समर्थन किया। इस प्रस्ताव का शीर्षक था अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का निरोधन करने के लिए उपाय, जो निरपराध लोगों को सड़क में डालता या उनकी जानें लेता है अथवा मूलभूत स्वतंत्रताओं के लिए खतरा है तथा आतंकवाद और हिंसा की कार्यवाहियों के उन रूपों के आधारभूत कारणों का अध्ययन जो निर्धनता, कुशा, भिक्षात तथा हताशा में निहित है और जो कुछ लोगों को आमूल परिवर्तन लाने के प्रयास में अपने प्राणों महित लोगों के प्राणों को बलि करने के लिए प्रेरित करते हैं।”

प्रस्ताव के शीर्षक से यही निष्कर्ष निकलता है कि उनके प्रस्तावक आतंकवाद और निश्चित सामाजिक कारणों से जनित हिंसात्मक कार्यों के बीच स्पष्ट सीमांकन करते हैं। प्रस्ताव अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की सभी कार्यवाहियों की दृढ़तापूर्वक निंदा और शांति तथा मानवतावादी आदर्शों की खातिर उनके विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता को अपना प्रस्थानबिंदु बनाता है।

अमरीकी सत्ताधारी “अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष” की अपनी अपीलें आम तौर पर सोवियत-विरोधी सहजों में करते हैं। लेकिन हकीकत यही है कि आतंकवाद में हमारे देश के शामिल होने का हर दावा भोडा और कुटिल इरादों में मडा गया झूठ है। सोवियत संघ अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद महिन आतंकवाद के सिद्धान्त और व्यवहार का मिडानन मडा में विरोधी रहा है और विरोधी है।

१९३७ में २४ देशों के प्रतिनिधियों ने जेनेवा में आत्मरक्षा के निवारण तथा उसके लिए दंड के बारे में एक अभिमत पर हस्ताक्षर किये थे। इस अभिमत ने अन्तर्राष्ट्रीय कानून के इस उद्देश्य की पुनर्पुष्टि की थी, जिसके अनुसार किसी भी राज्य के विरुद्ध सशस्त्र किसी भी आत्मरक्षायी प्रतिविधि का विरोध करना प्रत्येक राज्य का कर्तव्य है और अभिमत के हस्ताक्षरकर्ताओं ने ऐसी प्रतिविधि के दोगी धास्तियों को इति करने का दायित्व लिया था। अभाष्यवश यह अभिमत प्रचलन में आया ही नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय आत्मरक्षा की समस्या पर हाल के समय में मयूक्त राष्ट्र मंच में भी विचार किया गया है। मयूक्त राष्ट्र महासभा के २७ के अधिवेशन में इस पर विशेषकर विमर्शपूर्वक तथा तेज चर्चा हुई। पश्चिमी देशों के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक उद्धार के लिए स्वायत्तता तथा अन्तर्राष्ट्रीय आत्मरक्षा के साथ समीक्षण करने राष्ट्रीय सुरक्षा बलों को परस्पर समानता का प्रयास किया। प्रचाली प्रतिनिधिमण्डल द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय विधि में यह भी विशेषकर प्रस्ताव था। संरक्षण के विरुद्ध दुरात्म की सर्वोत्तम आचामर कार्यवाही और निवर्तन के तथा सदस्यों प्रत्यक्ष के प्रति व्यवहार प्रस्ताव की संज्ञा के लिए प्रस्ताव हाल में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर से हो रहे हैं।

मयूक्त राष्ट्र मंच के अधिवेशन के बाद हाल में इस प्रश्न की चर्चा की। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर

अन्य समाजवादी देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने गुट-निरोध देशों द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का एकमत समर्थन किया। इस प्रस्ताव का शीर्षक था "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का निरोधन करने के लिए उपाय जो निरपराध लोगों को सड़क में डालना या उनकी जानें लेना है अथवा मूलभूत स्वतंत्रताओं के लिए खतरा है तथा आतंकवाद और हिंसा की कार्रवाइयों के उन रूपों के आधारभूत कारणों का अध्ययन जो निर्धनता, बुढ़ा, निकायत तथा हताशा में निहित है और जो कुछ लोगों को आमूल परिवर्तन नाने के प्रयास में अपने प्राणों महित लोगों के प्राणों को बलि बनने के लिए प्रेरित करते हैं।"

प्रस्ताव के शीर्षक में यही निष्कर्ष निकलता है कि उनके प्रस्तावक आतंकवाद और निश्चिन्त सामाजिक कारणों से जनित हिंसात्मक कार्यों के बीच स्पष्ट सीमांकन करते हैं। प्रस्ताव अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की सभी कार्रवाइयों की दृढ़तापूर्वक निंदा और शान्ति तथा मानवतावादी आदर्शों की याचिका उनके विरुद्ध संपर्क की आवश्यकता को अपना प्रमुखान्विष्ट बनाता है।

अमरीकी सत्ताधारी "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संपर्क" की अपनी असीले आम तौर पर मोक्षियन-विरोधी सहजे में करने है। लेकिन एकीकरण यही है कि आतंकवाद में हमारे देश के शामिल होने का हर दावा भ्रष्ट और बुद्धिमत् दगादो में गड़ा गया भ्रष्ट है। मोक्षियन संध अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद महान आतंकवाद के मिद्वान और व्यवहार का मिद्वानन सदा में विरोधी रहा है और विरोधी है।

अनुमृत जनमहार का नान का त्वि३८ ९१२ . .  
प्रोत्साहन भी यही प्रमाणित करना है।

मल्वादोर में, जहा अमरीकी परामर्शदाता शांति  
प्रिय नागरिकों के कत्लेआमों का निदेशन कर र  
है, लेकर घाई-कपूचिया सीमा तक, जहा अमरीकी  
द्वारा समर्थित पोल पोत के बचे-खुचे गिरोहों ने ग  
ली है, यही सुस्थापित और सुस्पष्ट कार्य-प्रणाली दे  
मे आती है। संयुक्त राज्य अमरीका की सेंट्रल इंटेलीजें  
एजेंसी कभी का वह मुख्य केंद्र बनी हुई है, जो अ  
राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा सामाजिक प्रगति के लिए स  
जनगण के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयों का नि

